༄༅།།བོད་ཀྱི་རིང་བསྟན་དཔེ་ཚོགས་ལྷེ་གནས།།

Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W30498	***ImageGroup:***	I1CZ4715
LCCN:	n/a	***ISBN:***	n/a

Title:	བོན་གྱི་བཀའ་བརྟེན bon gyi bka' brten
Author:	བསྟན་པའི་ཉི་མ bstan pa'i nyi ma
Descriptor:	n/a
Original Publication:	n/a;n/a
Place:	[khreng tu'u]
Publisher:	[sog sde sprul sku bstan pa'i nyi ma]
Date:	[1999?]
Volume:	22
Total Volumes:	300
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at Tibetan Buddhist Resource Center, 150 West 17th St, New York City, NY 10011, US.

ཀུ་ལི་ཀ་ཡ་ཨ་ཀ་ལ་ཏ་ཡ་ཨ་ཀ་ལ་ཏ་ཡ་ཨ་ཀ་ལ་ཏ

[redacted]

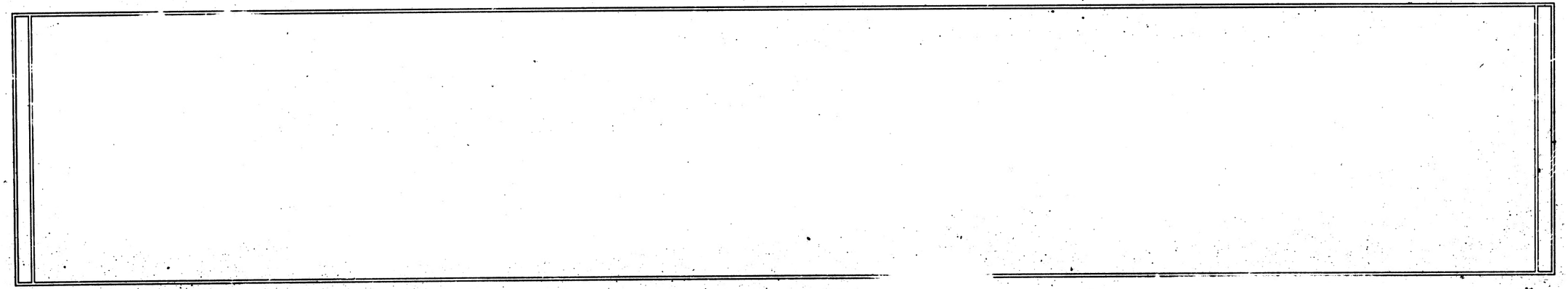

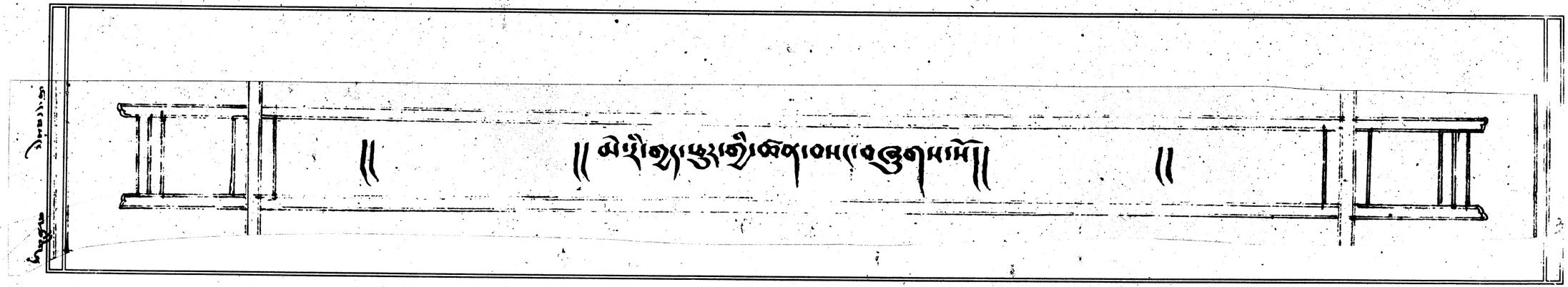

ॐ ॐ ॐ ॥ ५५ ॥ ॥ ॥

ॐ ॥ नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ सरस्वतीं सुरगणैः पितृभिश्च महर्षिभिः ।
नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि यथाशास्त्रं मुखोद्गतम् ॥ १ ॥
सरस्वती महाभागा विद्या विद्याप्रदायिनी ।
गुरुर्गुरुमती गम्या पुस्तकस्था जडापहा ॥ २ ॥
शुभदा चन्द्रवर्णाभा चन्द्रमण्डलवासिनी ।
वरदा वेदमाता च वेदवेदाङ्गपारगा ॥ ३ ॥
धनदा धान्यदा चैव विद्युन्माला वसुन्धरा ।
ब्रह्मचारिव्रतस्था च ब्रह्मविद्या ब्रह्मवादिनी ॥ ४ ॥
ब्रह्मयामलमध्यस्था ब्रह्मजाया ब्रह्मरूपिणी ।
ब्रह्मेशविष्णुनमिता ब्रह्मेन्द्रादिसुरस्तुता ॥ ५ ॥
ब्रह्मकायस्थिता देवी ब्रह्मकायविवर्धिनी ।
ब्रह्मकायप्रियकरी ब्रह्मकायविनाशिनी ॥ ६ ॥
ब्रह्मकायप्रियकरी ब्रह्मकायविनाशिनी ।
ब्रह्मकायस्थिता देवी ब्रह्मकायविवर्धिनी ॥ ७ ॥

ཆ་ཆེ་རྒྱལ་བའི་ཐུགས་ ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་བཞིན་དུ། ཁོ་ལ་གཞན་ལས་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་ཡང་། རྒྱལ་བས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཕྱིར་ཏེ། གཞི་
གཅིག་ལས་ཀྱང་ཐེག་པ་གསུམ། སྐྱེ་བོ་ཁམས་གསུམ་ཐམས་ཅད་ལ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་བསྐྱེད་ཅིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་བསྐྱེད་ཅིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་
ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་
རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་
རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཐུགས་ཁོ་ནའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུགས་

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཁ།

ཀུན་ལས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་གྱུར། ཞེས་བཀའ་སྩལ་ཏོ། ཡིད་མི་བདེ་བའི་སྐབས་ཀྱི་ཚིག་ཏུ། ཡུལ་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་ཡིན་ཏེ

ལྷ་ཐང་ཁ་ཤོག་ཁ་ཤོག་ཁ་ཤོག

ཞེས་པའོ། ། སྐབས་འཕགས་པའི་ཚེ་ཞེས་པ་ནས། ཚེ་ཡོངས་སུ་དག་པ་ཞེས་པའི་བར་གྱིས་ཀྱང་། ཕགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚེ་ཡོངས་སུ་དག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མར་གྱུར་པ་ཡི་བར་དུ་ཡང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་གྲངས་ཙམ་གྱི་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་དུ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་རྣམ་པར་གྲོལ་བ་ཡི་ཡེ་ཤེས་མཐོང་བ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཆོས་ཀྱི་ཕུང་པོ

ཨོཾ། ཏཱ་རེ་ཏུ་ཏྟཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཀཱ་རེ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཀཱ་རེ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ་ཝི་ཤོ་དྷ་ནི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྗྙཱ་ན་པུ་ཥྚི་ཀཱ་རེ་ཡེ་ཨཱ་ཡུ་རྡེ་ཝི་ཤུདྡྷེ

ཤེས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།།།། བྱམས་པའི་སྤྱན་ཡིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།།།། རྒྱལ་བ་ཐུགས་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།།།། སྤྱི་བོའི་ཤེས་རབ་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།།།། རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་
ཤེས་ཀྱི་ཤེས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།།།། ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།།།། ཕྱོགས་བཅུའི་རྒྱུན་གྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཤེས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།། རྒྱལ་བ་རིགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཤེས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཤེས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།། ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཤེས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཀྱང་ཤེས་སོ།།

ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། ། ཡང་ན་ཐུབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཐུབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཏེ།

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः।

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ། ཚེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚེ་ཡོངས་སུ་དག་པ། རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ། སྤྱན་དྲངས་ཏེ་ཞལ་མཇལ་བ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वजनवशंकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वस्त्रीवशंकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वराजवशंकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वलोकवशंकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वमुखस्तंभनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वक्षोभणेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वविद्वेषणेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वोच्चाटनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वकिलिकिलेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वमोहनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वजृंभणेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वस्तंभनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वआकर्षणेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसंपत्करेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसौभाग्यकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वमनोहरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वामनकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वदुःखक्षयकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वकर्मक्षयकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वसिद्धिकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वसंपत्करेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वमंगलकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वपापप्रणाशनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वदुरितक्षयकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वविघ्नविनाशनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वाभीष्टदेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वसुखकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वार्थसाधनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वरक्षाकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वोपद्रवनाशनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वव्याधिविनाशनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वविषनाशनेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वशांतिकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वपुष्टिकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वतुष्टिकरेभ्यो सर्वेभ्यो नमः स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं सर्वसर्वसमृद्धिकर

ཨཀྵོབྷྱ། ཤྱཱཀྱཧཱཏྱཱཡུཥྨཱཀཾཏཱཏཿ།། སྒྲུབཔཱཡཱསྒྲུབཔཱཡཱཏྱཱཡུཥྨཱཀཾ། ཤྱཱཀྱཧཱཏྱཱཡུཥྨཱཀཾ། སྤྱིཏེཝཱཏཱཡནཱཡཱཏྱཱཡུཥྨཱཀཾ། ཤྱཱ
ཀཾ། ཤཱཀྱཧཱཏྱཱཡུཥྨཱཀཾཏཱཏཿཤཱཀྱཧཱཏྱཱཡུཥྨཱཀཾ། ཤྱཱཀྱཧཱཏྱཱཡུཥྨཱ

ཀྱི་ཡི་ཀེ་ཀོ་ཀུ་ཁྱུ་ཁེ་ཁོ་ཁུ་ཁྱུ་ཁེ་ཁོ་ཁུ་ཁྱུ་ཁེ་ཁོ་ཁ

ཐུབ་པའི་དཔལ་ལེན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚིག་ཏུ།

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ

ཀཱཡཱཡཱཧི།།ཨོཾ་ཨཱ་ཧཱ་ཀཱ་ཡཱ་ཡཱ་

ཨཱ། ། ཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ།
ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ།
ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ། ཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨཨ།

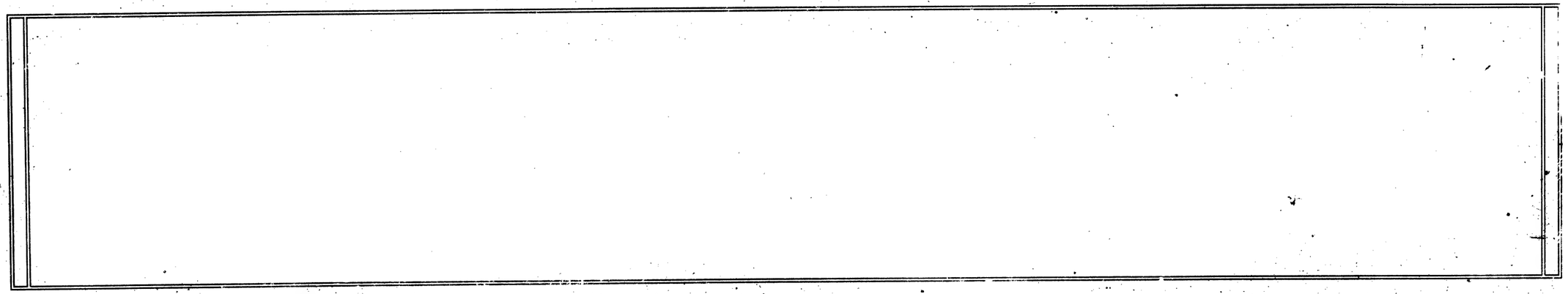

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ནྟ་ཡ་ཨ་ཀ་ལ་ཀ་ལཱ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ་ཨ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ་ཨ་ཏི་ཤཱ་ནྟ་ཨ་ཏི་ཤཱ་ནྟ་ཨ་ཏི་ཤ

॥ ॐ नमो भगवत्यै आर्यतारायै ॥

नमस्तारायै देव्यै सकलजगदुद्धारकरणे
समुद्यत्कारुण्यामृतजलधिपूराप्लुतमनसे ।
अनन्तानन्तानां सुगतसुतसङ्घातविषयं
ददौ यत्पुण्यं मे तदपि भवतु प्रार्थितफलम् ॥ १ ॥

अथ खलु भगवती तारा देवी भगवन्तं तथागतमेतदवोचत् । भगवन् अहं तारा देवी
अनुत्तरां सम्यक्सम्बोधिं अभिसम्बुद्धा । अनुत्तरां सम्यक्सम्बोधिं अभिसम्बुद्धा
सर्वसत्त्वानां हितसुखाय । सर्वसत्त्वानां हितसुखाय सर्वसत्त्वानां परित्राणाय ।
सर्वसत्त्वानां परित्राणाय सर्वसत्त्वानां परिपाकाय । सर्वसत्त्वानां परिपाकाय
सर्वसत्त्वानां विमोक्षाय । सर्वसत्त्वानां विमोक्षाय सर्वसत्त्वानां परिमोचनाय ।
सर्वसत्त्वानां परिमोचनाय सर्वसत्त्वानां अभयाय । सर्वसत्त्वानां अभयाय
सर्वसत्त्वानां आश्वासाय । सर्वसत्त्वानां आश्वासाय सर्वसत्त्वानां प्रतिसरणाय ।
सर्वसत्त्वानां प्रतिसरणाय सर्वसत्त्वानां द्वीपाय । सर्वसत्त्वानां द्वीपाय
सर्वसत्त्वानां लयनाय । सर्वसत्त्वानां लयनाय सर्वसत्त्वानां परायणाय ।
सर्वसत्त्वानां परायणाय सर्वसत्त्वानां आर्यावलोकितेश्वरवत् । सर्वसत्त्वानां
आर्यावलोकितेश्वरवत् सर्वसत्त्वानां अवलोकितेश्वरवत् । सर्वसत्त्वानां
अवलोकितेश्वरवत् सर्वसत्त्वानां महाकारुणिकवत् । सर्वसत्त्वानां
महाकारुणिकवत् सर्वसत्त्वानां अनुकम्पकवत् । सर्वसत्त्वानां अनुकम्पकवत्
सर्वसत्त्वानां अनुग्रहकवत् । सर्वसत्त्वानां अनुग्रहकवत् सर्वसत्त्वानां
अनुग्रहकवत् । सर्वसत्त्वानां अनुग्रहकवत् सर्वसत्त्वानां अनुग्रहकवत् ।
सर्वसत्त्वानां अनुग्रहकवत् सर्वसत्त्वानां अनुग्रहकवत् । सर्वसत्त्वानां
अनुग्रहकवत् सर्वसत्त्वानां अनुग्रहकवत् । सर्वसत्त्वानां अनुग्रह

ཐུབ་པའི་བཀའ་ཡི་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ལས་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་གནས་པ་ཡི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉི

ཀཱ་ཏནྟྲ།

ཀུ་ཤ་ལ་ཡ་ཨ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ

ཀཱཡཱ། ཨཱཡུཥྨཱན་ཀཱཡཱ། ཨཱཡུཥྨཱན་ཀཱཡཱ། ཨཱཡུཥྨཱན་

ॐ नमो भगवते वज्रकुमाराय महाबलपराक्रमाय महाप्रतिसराय महाविद्याराजाय महाशूरजातिकुलसमुद्भवाय
महाकारुणिकाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठिताय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितशरीराय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितहृदयाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वावयवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वरोमकूपाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वसत्त्वाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वधर्माय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वबुद्धाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वबोधिसत्त्वाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वश्रावकाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वप्रत्येकबुद्धाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वदेवाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वनागाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वयक्षाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वराक्षसाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वभूताय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वपिशाचाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वकुम्भाण्डाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वपूतनाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वकटपूतनाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वभस्मग्रहाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वग्रहाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वनक्षत्राय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वज्वराय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वविषाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वदुष्टदोषाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वशत्रवे
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वविद्याराजाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाविद्याराजाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाबलाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहावीर्याय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहातेजसे महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाशूराय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाभद्राय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाभयभैरवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाबलपराक्रमाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाप्रतिसराय महाविद्याराजाय महाशूरजातिकुलसमुद्भवाय महाकारुणिकाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठिताय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितशरीराय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितहृदयाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वावयवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वरोमकूपाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वसत्त्वाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वधर्माय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वबुद्धाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वबोधिसत्त्वाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वश्रावकाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वप्रत्येकबुद्धाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वदेवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वनागाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वयक्षाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वराक्षसाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वभूताय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वपिशाचाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वकुम्भाण्डाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वपूतनाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वकटपूतनाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वभस्मग्रहाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वग्रहाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वनक्षत्राय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वज्वराय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वविषाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वदुष्टदोषाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वशत्रवे महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वविद्याराजाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाविद्याराजाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाबलाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहावीर्याय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहातेजसे महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाशूराय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाभद्राय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाभयभैरवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाबलपराक्रमाय
महाप्रतिसराय महाविद्याराजाय महाशूरजातिकुलसमुद्भवाय महाकारुणिकाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठिताय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितशरीराय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितहृदयाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वावयवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वरोमकूपाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वसत्त्वाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वधर्माय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वबुद्धाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वबोधिसत्त्वाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वश्रावकाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वप्रत्येकबुद्धाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वदेवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वनागाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वयक्षाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वराक्षसाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वभूताय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वपिशाचाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वकुम्भाण्डाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वपूतनाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वकटपूतनाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वभस्मग्रहाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वग्रहाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वनक्षत्राय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वज्वराय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वविषाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वदुष्टदोषाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वशत्रवे महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वविद्याराजाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाविद्याराजाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाबलाय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहावीर्याय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहातेजसे महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाशूराय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाभद्राय
महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाभयभैरवाय महाकरुणाधिष्ठानाधिष्ठितसर्वमहाबलपराक्रमाय ॥ ५ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ १८२ ॥

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཨ་ཝི་ཛྙཱ་ཏི་ཀ་ལེ་ཤཱ་ཨ་ཏི་ཀྲ་མ་ཏོ་ཡཾ་ཏ་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ར་ཨཱ་ཀཱ་ར

ཐོབ་པའི་ཕྱིར་ཏེ། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡིས་ཀྱང་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཨ་ཝི་ཛྙཱ་ཏཱ་ཨ་ཧཾ་ཨ་ཡཾ་ཨ་ཧཾ་ཨ་ཡཾ་ཨ་ཧཾ་ཨ་ཡཾ

ॐ ॥ ५३ ॥ नदीतीरेषु तीर्थेषु सङ्गमादिषु पार्थिव ॥ यत्कृतं पापमस्माभिस्तत्क्षयं याति पुष्कलम् ॥ ततः स्नात्वा
विधानेन तर्पयित्वा पितामहान् ॥ देवान् ऋषीन् मनुष्यांश्च तथा भूतगणान् नृप ॥ ततः पुण्यं समादाय
तीर्थेभ्यो भरतर्षभ ॥ आगच्छामो वयं तूर्णं तव दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ तत्र तीर्थानि यान्यत्र पुण्यानि
भरतर्षभ ॥ तानि सर्वाणि पुण्यानि तव राज्ञि भवन्तु वै ॥ ततः पुण्यं समादाय तीर्थेभ्यो भरतर्षभ ॥
आगच्छामो वयं तूर्णं तव दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ तत्र तीर्थानि यान्यत्र पुण्यानि भरतर्षभ ॥ तानि सर्वाणि
पुण्यानि तव राज्ञि भवन्तु वै ॥ ततः पुण्यं समादाय तीर्थेभ्यो भरतर्षभ ॥ आगच्छामो वयं तूर्णं तव
दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ तत्र तीर्थानि यान्यत्र पुण्यानि भरतर्षभ ॥ तानि सर्वाणि पुण्यानि तव राज्ञि
भवन्तु वै ॥ ततः पुण्यं समादाय तीर्थेभ्यो भरतर्षभ ॥ आगच्छामो वयं तूर्णं तव दर्शनकाङ्क्षिणः ॥

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཡུལ་ཅན་ཏེ། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཡིན་ནོ། ◆ དེ་ཡང་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་རྫོགས་སོ།།

ཨོཾ་ཨཱརྱ་སཱ་ར་ཏཱ་ཡཱ་ཨཥྚ་ཤ་ཏ་སཱ་ཧ་སྲི་ཀཱ་ཡཱ་ཨ་ནཱ་ཝ་ར་ཎ་ཛྙཱ་ན་ཀ་ར་ཎ་ཀ་ར་ཎ་ཀ་ར་ཎ

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱག་ཏུ་ཕུལ་ཏེ་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཏུ་ལྱ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨ་ནཱ་ཀཱ་ཤ་ཨ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ་ཨ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ་ཏ་ར་ཀ་ཨ་ཀཱ་ཤ་ཨ་ཀཱ་ཤ་ཨ་ཀཱ་ཤ

ཀ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཅན་གྱི་ཡབ་

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པའི་ཐུགས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་དང་མཉམ་པ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་རྣམས་ཀྱི་ཚད་ཙམ་གྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཚོགས་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅན་ཡོན་ཏན་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ལ་ཡ་ཨཱ་ནཱ་ཡ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་དང་། ཉན་ཐོས་ཐམས་ཅད་དང་། རང་རྒྱལ་ཐམས་ཅད་དང་། མཁའ་འགྲོ་ཐམས་ཅད་དང་། ཆོས་སྐྱོང་ཐམས་ཅད་དང་།

ལྷ་མོ་ཡི་ཚོགས་ཀྱིས་བསྐོར་ཞིང་། ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་ཆེན་མོ་ཡི་ཞིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཐཱིཾ་ཧཱུྃ་ཕཊ

ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡང་ཡོད་པ་ཡིན་ཏེ། ཐ་མ་ཡང་ཡོད་པ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་

ཨཱཿཧཱུྃ ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཛྲ་ཀཱཡ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཛྲ་ཝཱཀ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཛྲ་ཙིཏྟ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཛྲ་ཀཱཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨོཾ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཡང་དག་པར་བསྐོར་བ་ཡི་ཐུགས་རྗེ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ན་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ཡ་ཀ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་རྒྱལ་པོའི་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་བཀོད་པ

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བ་ཡིན་ཏེ།

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་རིའི་རྩེ་མོ་ལ་གནས་པའི་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོའི་གཞལ་ཡས་ཁང་ཆེན་པོ་ཡི་ནང་དུ་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྩ་བ་ཆེན

ཤ་ཟ་ཁ་ཁྲག་ཐལ་བ་ཐལ་བ་ཁ་ཁྱབ་པ་ཁ་ཁྱབ་པ་ཁ་ཁྱབ་པ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ན་ཡོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཞེས་བྱ་བ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་ཡེ་ཤེས

ཐུབ་པའི་ཀླུ་སྒྲུབ་པས་གསུངས་པའི་ཐབས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་སོ།། ◆ རྡོ་རྗེ་ཕོ་ལི་ཏ་མོ་ཀཱ་ཡི་ཐོག་ཏུ། ཁྲུམ་མཚམས་ཡུངས་དཀར་ཆུ་ཐིག་ཏུ་ཡོངས་སུ་བཀོད་ལ། ཡི་གེ་མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཡོངས་སུ་བཀོད་ལ། ཡུངས་དཀར་ཆུ་ཐིག་ཏུ་ཡོངས་སུ་བཀོད་ལ

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡི་གེ་ཀུན་ཏུ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་དགེ་སློང་དགེ་སློང་མ་དང་། དགེ་བསྙེན་དགེ་བསྙེན་མ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་དགེ་སློང་དགེ་སློང་མ་དང་། དགེ་བསྙེན་དགེ་བསྙེན་མ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་དང་། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་དགེ་སློང་དགེ་སློང་མ་དང་། དགེ་བསྙེན་དགེ་བསྙེན་མ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཀ་ཁ་ག་ང་ཅ་ཆ་ཇ་ཉ་ཏ་ཐ་ད་ན་པ་ཕ་བ་མ་ཙ་ཚ་ཛ་ཝ་ཞ་ཟ་འ་ཡ་ར་ལ་ཤ་ས་ཧ་ཨ་

ཡིན་ཏེ། ཐོག་མེད་ནས་ཀྱང་ཡོད་ཅིང་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང

ཀཱི་ཏཱ་ཀཱ་ཏཱ་ཀཱི་ཏཱ་ཀཱ་ཏཱ་ཀཱི་ཏཱ་ཀཱ་ཏཱ་

ཡིད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཏེ།

ཀུན་བཟང་ཨ་ཡི་ཞལ་ལུང་།

ཡིན་ཏེ། ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཡང་

ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀུན་ཏུ་ཡོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་གྱི་ཚིག་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་གི་དོན་དུ་ཡོད་དོ། །

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བ་ཡིན་ཏེ།

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ཡ་ཀ

ཀཱཡ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཀརྨ་ཀཱ་ཡཱ

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཆེན་པོ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་གནས་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་ཆེན་མོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པ་དང་། །སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱང་དེ་སྲིད་དུ། །བཞུགས་ཤིང་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །སྡུག་བསྔལ་ཉམ་ཐག་པར་གྱུར་ཅིག །

◆ ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པ་དང་། །སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱང་དེ་སྲིད་དུ། །བཞུགས་ཤིང་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །སྡུག་བསྔལ་ཉམ་ཐག་པར་གྱུར་ཅིག །

ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པ་དང་། །སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱང་དེ་སྲིད་དུ། །བཞུགས་ཤིང་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །སྡུག་བསྔལ་ཉམ་ཐག་པར་གྱུར་ཅིག །

◆ ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པ་དང་། །སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱང་དེ་སྲིད་དུ། །བཞུགས་ཤིང་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །སྡུག་བསྔལ་ཉམ་ཐག་པར་གྱུར་ཅིག །

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ན་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ཐོབ་ཅིང

ཀུན་བཟང་བླ་མའི་ཞལ་མཐོང་།

ཀུན་བཟང་བླ་མའི་ཞལ་མཐོང་།

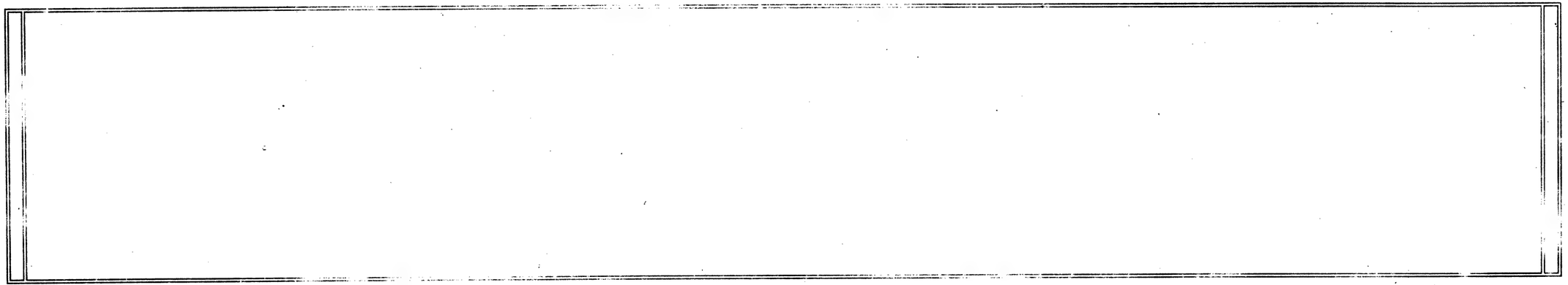

ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏྟཱ་ནཱཾ་ཨ་ཀཱ་ལ་མྲྀ་ཏྱུ་ཧ་རཎ་ཨ་ཨཱ་ཡུ་ཧ་ཡ་ཧ་ཡ་ཧ་ཡ

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་བར་དུ་ཡང་ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ན་བཞུགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་དུ་ནི་ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅུང་ཟད་ཀྱང་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ

॥ ॥ ॥

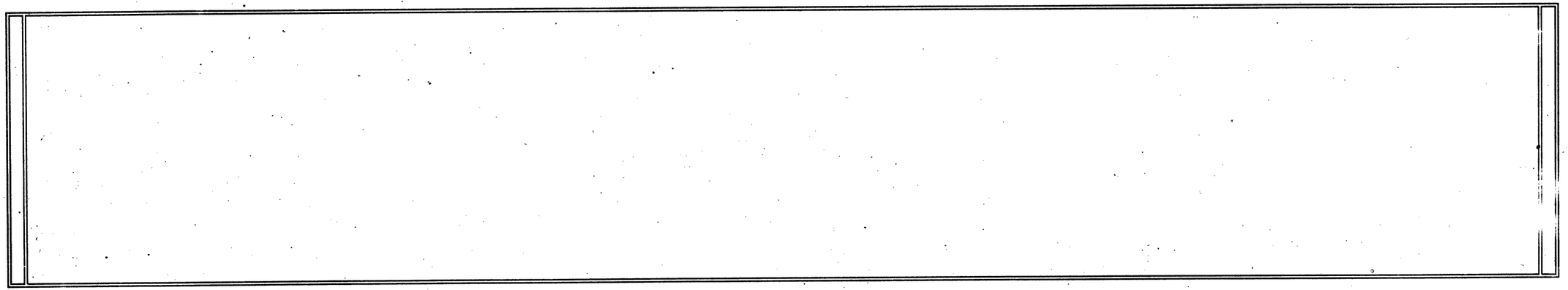

॥ ॥ ॥ ॥

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏ་ཀ་ལུ་ཥ་ཏཱ་ཡ་ཨཱཿ ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ།

ཨོཾ།། ཀཀ ।।ཤྲཱཝཱཎཱཡཱཾ ཤྲཱཝཱཎཱཡཱཾ ཤྲཱཝཱཎཱཡཱཾ

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚེ་ཡིན་ལགས་ཏེ། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཁྱོད་ཀྱི་ཚེ་ཡང་ཡིན་ནོ། །ཁྱོད་ཀྱི་ཚེ་ཡང་

ཀཱ་ཏྱཱ་ཡ་ན་ཀྲྀ་ཏ་ཀལྤ།

ཐོབ་ཀྱི་ཚེ་ཡང་ཐོབ་ཅིང་

ཤ་ཟའི་ཚེ་ཁོང་ཁྲོ་བ། རྒྱལ་པོ་ཁྲོས་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཅི་ཕྱིར་ཤ་ཟ་ཞེས་ཟེར་བ་ཡིན་ནམ་ཞེས་ཟེར་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱི

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཨཱཏྨཱཡཱཏྨཱ། ཨཱཏྨཱཡཱཏྨཱ། ཨཱཏྨཱཡཱཏྨཱ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱ

ཐུབ་པའི་ལུང་མིན་པ་རྣམས་ཀྱང་ཐུབ་པའི་ལུང་དུ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོག

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨཱཿཧཱུྃ། ཨཱཿཧཱུྃ།

ཐུགས་ཀྱི་མཁྱེན་རབ་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཟབ་ཅིང་རྒྱས་པ་ཡི། ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཏེ། ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཏེ། ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བཞེང

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཏ་ཨཱ་ཏ་ཨཱ་ཏ

རབ་ཏུ་བྱུང་བ་ལགས་སོ། ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པ་བཞིན་དུ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་སྡེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་འཇུག

ཤེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ།

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५६ ॥ अथ प्रथमोऽध्यायः प्रारभ्यते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः । तेजोवारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं
सत्यं परं धीमहि ॥ १ ॥ धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्मत्सराणां सतां वेद्यं वास्तवमत्र वस्तु शिवदं तापत्रयोन्मूलनम् ।
श्रीमद्भागवते महामुनिकृते किं वा परैरीश्वरः सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् ॥ २ ॥ निगमकल्पतरोर्गलितं फलं
शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥ ३ ॥ नैमिषेऽनिमिषक्षेत्रे ऋषयः शौनकादयः ।
सत्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्रसममासत ॥ ४ ॥ तेषां संवदतामेवं सूतोऽभ्येत्य कृताह्निकः । नैमिषारण्यमासीनं नत्वा प्राह कथामिमाम् ॥ ५ ॥

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཅི་ཞིག་ཏུ་ཞེ་ན། རྒྱུ་མཐུན་པའི་རྒྱུ་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། མཐུན་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཅན་ལས་ཆོས་ཅན་ཡིན་ནོ། ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་ཏེ། རྒྱུ་མཐུན་པའི་རྒྱུ་ལས་འབྲས་བུ་འབྱུང་བ་ཡིན

ཐམཔཡིཡིཡིཏིཀྵཱཡཱཡཱཡ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཡ། ཀཱ་ཤྱ་པ་ཡ། ཀཱ་ཏྱ་ཡ་ན་ཡ། ཀཱ་ལ་ཡ། ཀཱ་ལ་ཀཱ་ལ་ཡ། ཀཱ་ལ་ཀཱ་ལ་ཀ

ཡང་ཁྱོད་ཀྱིས་ཅི་ཞིག་ཟེར་ཏེ། ཁོང་ཁྲོ་ཆེན་པོས་ཁྱོད་ཀྱི་ཁ་ཉག་ཉག་ཏུ་ཕྱིས་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱི་ཁ་ཉག་ཉག་ཏུ་ཕྱིས་ཏེ།

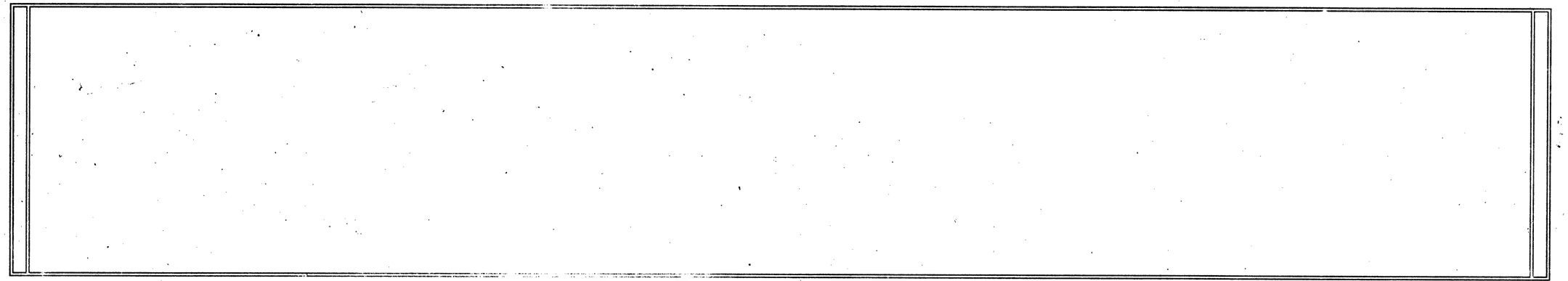

ཨོཾ་ཨཱཿ ཧཱུྃ ❖ ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏྟཱ་ནཱཾ་ཨ་ཧཾ་ཀཱ་ར་ཎཾ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ནཱཾ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏྟ་ཨཱ་ལ་ཡཱ་ཤཱི་ཝཱ་དཱ

ཚུལ་གཉིས་ཀྱི་ཚུལ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཞུགས་ཏེ། སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཕུན་སུམ་ཚོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེའི་ཕྱིར་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཞུགས་ཤིག་ཅེས་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །འཕགས་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཞུགས་ཏེ། ཇི་ཙམ་ཞིག་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཞུགས་པ་དེ་ཙམ་ཞིག་ཏུ་ཁྱོད་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱང་རྒྱས་པར་འགྱུར་རོ། །

ཀཱ་ལཱ་ཙཀྲ་ཏནྟྲ་རཱ་ཛ་ནཱ་མ་མཧཱ་ཡཱ་ན་ཨཱ་ལི་ཀཱ་ལི་ཀུ་ལ་ཀུ་ལ་ཏནྟྲ་ཨཱ་ཏྨ་ཀཱ་ལི་ཀཱ་ཀལྤ་ནཱ་མ་ཏྲཻ་ལོ་ཀྱ་ཝི་ཛ་ཡཱ་ཀཱ་ལི་ཀཱ་ཀལྤ་ནཱ་མ་ཏྲཻ་ལོ་ཀྱ་ཝི་ཛ་ཡཱ་

ཅན་ཆོས་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་བཞུགས་པའོ། ཡང་ཁོ་ནས་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་དོ། དཀོན་མཆོག་གཅིག་ཏུ་སྐྱབས་སུ་མཆིའོ། གསུམ་པོ་གསུམ་པོ་
ཁོ་ནའང་མཐའ་དག་ཏུ་ཁྱབ་པའོ། གསུམ་པོ་ཉམས་སུ་ལེན་པའོ། འདི་མཐའ་གཅིག་ཏུ་ཁྱབ་པ་ནི། གསུམ་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་
ཅིང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་
སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་
ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པ་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་ཆུད་པའོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་སུ་

ཀུན་བཟང་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ། །

ཞེས་སྨོན་ལམ་བཏབ་པའི་ཚེ། ཁམས་གསུམ་པའི་ཐོག་མར་ཡང་ཡང་སྐྱེ་བ་ལེན་ཅིང་། ཐ་མར་ཡང་ཡང་འཆི་བ་ཐོབ་ཀྱང་། སྐྱེ་བ་ལེན་ཅིང་འཆི་བ་ཐོབ་པ་ལས་ཐར་པ་ཐོབ་པ་ཡོད་དེ། ཐོག་མ་ཐ་མ་ཡོད་པ་ལས་ཐོག་མ་ཐ་མ་མེད་པ

॥ ७७ ॥ ॥ श्रीमाधवेभ्यो नमः ॥ श्रीमद्भागवतम् । गजेन्द्रमोक्षणं नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ श्रीशुक उवाच ॥ एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि ।
जजाप परमं जाप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥ १ ॥ गजेन्द्र उवाच ॥ ओं नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम् ।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥ २ ॥ यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥ ३ ॥ यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचित्कुतश्चित्तमसा निरस्तम् ।
अविद्ययात्मन्यवधीयते तिरो विद्यागमो यत्र न दुःखसंस्तवः ॥ ४ ॥ नमस्तस्मै भगवते येन चित्सदचिद्गुणाः ।
प्रतीयन्ते प्रधानात्मा तस्मै ज्ञप्तिमात्राय ते नमः ॥ ५ ॥ मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥ ६ ॥ आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेषु सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसङ्गविवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥ ७ ॥ यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति ।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥ ८ ॥ एकान्तिनो यस्य न कञ्चनार्थं वाञ्छन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमङ्गलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥ ९ ॥ तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥ १० ॥ यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥ ११ ॥ यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत्स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥ १२ ॥ स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ्न स्त्री न षण्ढो न पुमान्न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्निषेधशेषो जयतादशेषः ॥ १३ ॥ जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥ १४ ॥ सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥ १५ ॥ योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥ १६ ॥ नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोपवर्गाय परायणाय ॥ १७ ॥ गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयंप्रकाशाय नमस्करोमि ॥ १८ ॥ मादृक्कृपणपोषाय तादृशायाकृतात्मने ।
नमोऽनन्तदृशे तुभ्यं सर्वसत्त्वात्मने नमः ॥ १९ ॥ आत्मनात्मजदेहागेहपशुभृत्यकोशदारधनबन्धुषु सङ्गः ।
यत्कृतः प्रतिपदं निरयाय तत्तनुषु त्वदनपेक्षिषु सख्यम् ॥ २० ॥ मय्युदेष्यति मदीयमहाभागो ब्रह्मशर्व इति मां नियतं धीः ।
अस्य मे हर भवव्रजमेतं त्वय्यनन्यविषयं रतिमुद्वाक् ॥ २१ ॥ नैकात्मतां मे स्पृहयन्ति केचिन्नान्यत्रहं त्वत्परितोषणादन्यत् ।
इच्छामि भूयस्तव पादसेवकैः कीटेषु वा वानसरीसृपेषु किम् ॥ २२ ॥ जनेऽबुधेऽजन्यनिमित्तसौहृदे ह्यहं पुनर्भूय इहेयिवान्प्रभो ।
प्रीतोऽनुरक्तः स्मृतविस्मृतिर्यथा तरेम दुस्तारमदो भवानव ॥ २३ ॥ तिर्यङ्मनुष्यसुरसिद्धसरीसृपेषु क्षुद्रोष्णशीतपवनार्तिनिराकृतिष्वहम् ।
नाभूवमत्यभिभवामि तथापि नाथ हा सीदामि संसृतिभयाद्भगवन्प्रपन्नः ॥ २४ ॥ कः श्रद्दधीत तव देव पदारविन्दं

ལ་ཡང་ལྷ་ལོ་ཆུ་ཚིལ་ལ་ཡོད། ཐུགས་ཀར་ཟླ་བའི་གདན་ལ་ཧཱུྃ་ཡིག་ཡོད། དེ་ལས་འོད་ཟེར་ཕྱོགས་བཅུར་འཕྲོས་ཏེ། རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཙམ་ཞིག་ཏུ་ཡང་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ལས། ཐུགས་ཀ་ཧཱུྃ་ལས་ཐིག་ལེ་ཆུ་ཚིལ་ལ་ཡོད

ཀཀ། ཅ ། ཀཀཀ

ཀཏྠེ་ཏེ་ཁྱེ་ཁེ་ཁེ་ཁ

ཀཱལཱ་ཙཀྲ་ཏནྟྲ་རཱཛ་

ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཡི་ཞལ་ནས་གསུངས་པ་ཡིན་ཏེ། ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ཁོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱལ་སྲིད་ཀྱི་ཚེ་ཆོས་ཀྱི་ཁྲིམས་ཀྱི་ཐོག་ནས་ཡང་དག་པར་ཞུགས་ཏེ་ཆོས་ཀྱི་ཁྲིམས

།། ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་རྣལ་འབྱོར་ཆེན་པོའི་མདོ་རྫོགས་སོ།།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་ཡོད་པ་

ཨོཾ།། ཅཅ ।। ཐམས་ཅད་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཤར་དུ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་ཅིང་། ཐོས་པ་ཆེན་པོ་ཐོབ་ཅིང་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ཐོབ་ཅིང་། ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ

ཀཱཡིཀཾ ། ཨཱཏྨཱིཡཔཱཔཱནུཔཱཔཱཛྫིཏཾ ། ཀཱཡཛ

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པའི་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཉིད་ཐོབ་པ་ལ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་འཚང་རྒྱ་བ་ལ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་པ

Siddhanta eGangotri Gyaan

ཀུན་བཟང་ཨ་ཏི་ཡོ་ག་ཀུན་ཏུ་རྒྱུད།

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ

ཀུན་བཟང་ཀློང་ཆེན། ཀུན་བཟང་ཀློང་ཆེན། ཀུན་བཟང་ཀློང་ཆེན།

Tibetan Buddhist Resource Center

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏྟཱ་ནཱཾ་ཤུ་ཀྲ་ཧྲྀ་ཏ་ཡཱ་ནཱཾ་ཡ་ཏ་ཀ་ཏ་ཀ་ཀ་ཏ་ཀ་ཀ་ཏ་ཀ

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཁྲིད་ཡིག

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཕྱོག

ཀཱཾ ཀཱཾ ཀཱཾ

ཐུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐུབ་པའི་ཐུགས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཕྱོག

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ནྟ་ཡ་ཀ

ཀཱཡཱཡ ཧཱུྃ ཕཊ་ ཨོཾ ཨཱཿ

॥ श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པར་ཕྱག་འཚལ་ཏོ། ཆོས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པར་ཕྱག་འཚལ་ཏོ། དགེ་འདུན་ཆེན་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དགེ་འདུན་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པར་ཕྱག་འཚལ་ཏོ། །ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་མདོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་མདོ་རྫོགས་སོ། །

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་ཡོན་ཏན་རྒྱ་མཚོ་ལ་ཡང་ཡང་དུ་ཞུགས་ཏེ་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱ་མཚོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ།།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངང་ལས་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ

ཀྲཱིཡེ་ལེ་མཱ་ཧཱི་ཡེ་ཏུ།། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ།། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ། ཡུ་ལ་ལ་ཚ་ཀ་ཏ་ཡ་ཏ་ཚ་ཀ་ཏ་ཡ།། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ། སྒྲུབ་ཀྱི་ལྷ་ཁང་ཁྱིམ་ཀྱི་ལ་ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ། ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཀ་ཏ་ཡ་ཏ་ཚ་ཀ་ཏ་ཡ། ཨོཾ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་མུ་ཏྲེ་ཧཱ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱ

ཡུལ་ཁོ་ནས་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཡོད་ཀྱི་

ཐུགས། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་ཅིང་། ཐོས་པ་ཡི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་

ཀཱ་ཧི་ཧི་ཀཱ་ཧི་ཧི་ཀཱ་ཧི་ཧི་

ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡོད་པ་

ཀཱ་ཏན་ཀྱི་ཞལ་ལུང་། བཤད་པའི་སྐབས་ཀྱི་ཚིག་ཀྱང་། ཐལ་བ་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡོད་ཀྱང་། ཡུལ་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡོད

ཀཱ་ཏན་ཏྲ་ ཀཱ་ཏན་ཏྲ་ ཀཱ་ཏན་ཏྲ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས

ཨཱཿ ཨཱཿ ཨཱཿ

ལས་ཀྱི་རྒྱུ་བྱས། །དགེ་རྩ་ཀུན་ལས་ཀྱི་རྒྱུ་བྱེད། །བདག་ཏུ་སྐྱེས་ཀྱི་ཉེས་པ་མེད། །ཐོག་མཐའ་བྲལ་བའི་ལས་ཀྱི་བདག །རྒྱལ་བའི་ཐུགས་རྗེ་ཤིན་ཏུ་ཆེ། །ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡི་ཐུགས་ཀྱི་ནི

ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི།
ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི།
ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི།
ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི།

ཐུབ་པའི་སྤྱན་ལས་བྱུང་བ་ཡི། །ཆོས་ཀྱི་སྤྱན་ནི་ཐོབ་པར་ཤོག །ཐུབ་པའི་ཆོས་ཀྱི་ཆུ་རྒྱུན་ནི། །ཆོས་ཀྱི་ཆུ་ཀླུང་ཆེན་པོ་ཡི། །ཆུ་ཡི་ཕུང་པོ་ཇི་སྙེད་པ། །ཐམས་ཅད་ཀྱང་ནི་ཐོབ་པར་ཤོག །ཐུབ་པའི་ཆོས་ཀྱི་ཆུ་རྒྱུན་ནི། །ཆོས་ཀྱི་ཆུ་ཀླུང་ཆེན་པོ་ཡི། །ཆུ་ཡི་ཐིགས་པ་ཇི་སྙེད་པ། །ཐམས་ཅད་ཀྱང་ནི་ཐོབ་པར་ཤོག །ཐུབ་པའི་ཆོས་ཀྱི་ཆུ་རྒྱུན་ནི། །ཆོས་ཀྱི་ཆུ་ཀླུང་ཆེན་པོ་ཡི། །ཆུ་ཡི་རྡུལ་ཙམ

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡུལ་ཅན་ཏེ།

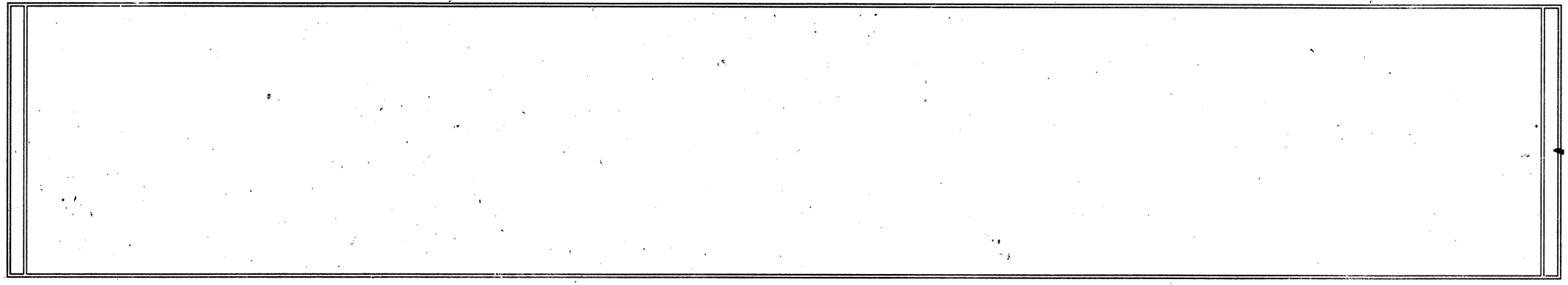

།།ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་མན་ངག་ཏུ་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཚིག་གི་ཐུབ་པ་ཞེས

ཀཱཾ། ཨཱཾ་ཀཱཾ་ཨཱཾ་ཀཱཾ་ཨཱཾ་ཀཱཾ་

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཏེ། དེ་ནས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་ལངས་ཏེ།

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ

ཡིན་ཏེ། ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱང་མ་ཡིན་ཏེ། རྟག་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། རྟག་པ་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། ཡང་ན་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱང་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དམ་པའི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཡང་དག་པར་བསྐོར་བ་ཡི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་གྱི་ཚིག་ཏུ

ཀཱཡམཱཡཱུསཾ། ཨཱཡུཥྨཱཾཤྩ། ཨཱཡུཥྨཱཾཤྩ། ཨཱཡུཥྨཱཾཤྩ

ཀ་ཀ་ཀ་

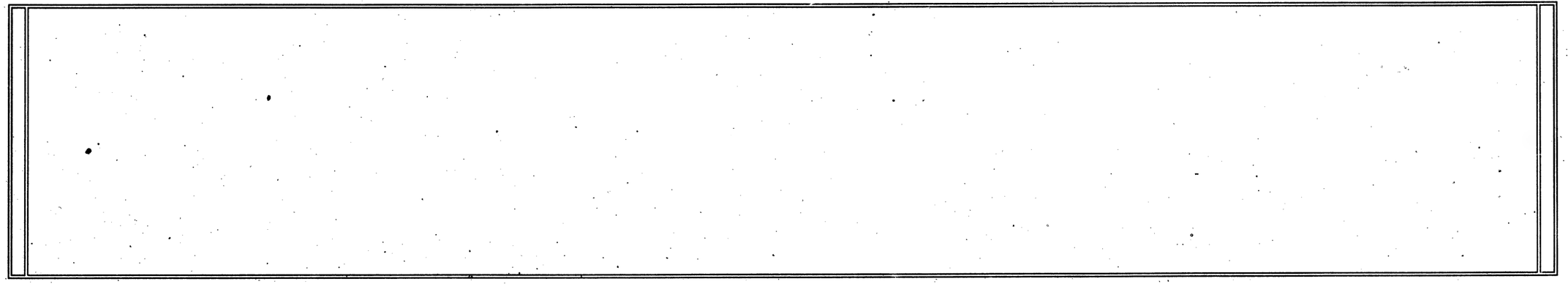

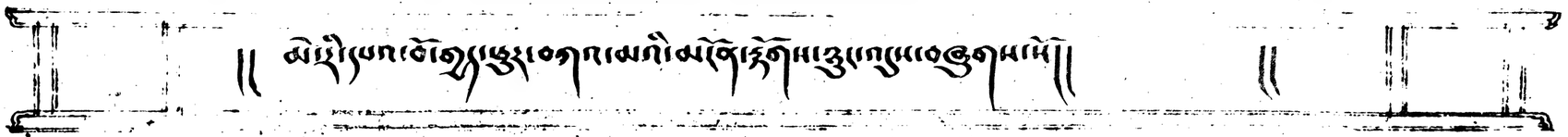

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿ ཧཱུྃ།། ཨཱཿ ཧཱུྃ།། ཨཱཿ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་རབས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ་ན་ཡོད་པ

ཞེས་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡོད་པ་ཡང་ཡིན་

ཡང་དེ་ཁོ་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐ་སྙད་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ

ཀུན་བཟང་ཀློང་ཆེན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཐུན་མོང་གི་ཐེག་པ་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཐུན་མོང་གི་ཐེག་པ་ལ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་གི་ཐེག་པ་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་གཉིས་ཡོད་ལ། དེ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་གི་ཐེག་པ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་ལ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་དང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་ཁྱད་པར་ཅན་གཉིས་ཡོད་ལ། དེ་ལ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་ཁྱད་པར་ཅན་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་ཁྱད་པར་ཅན་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་ཁྱད་པར་ཅན་ལ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུན་མོང་མ་ཡིན་པའི་ཐེག་པ་ཁྱད་པར་ཅན

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད

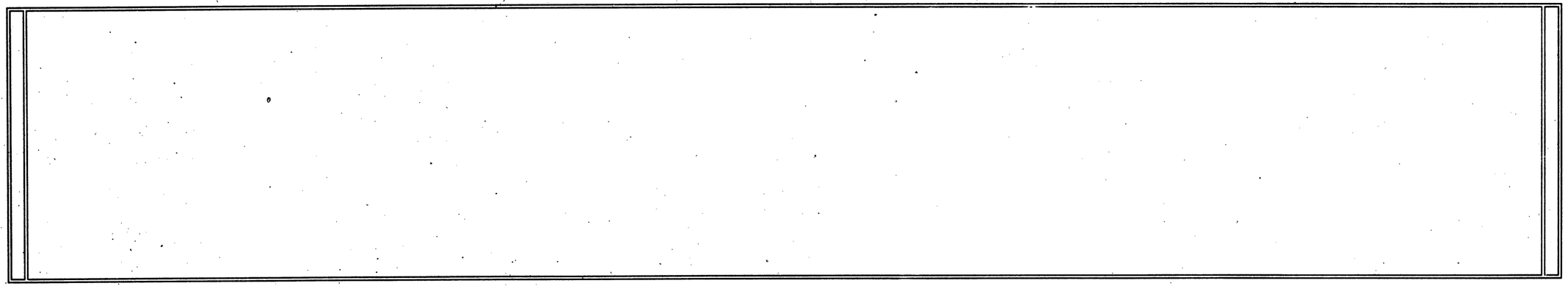

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་ཀྱི་ཕྱོག

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་དང་ཐ་མ་ཡས་ཀྱ

ཐོབ་པས། ཐོབ་པའི་ཕྱིར་ཚེ་འཕོས་ནས་ཀྱང་། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐོབ་པའི་ཐབས་ཀྱང་། ཁོ་བོ་ཅག་གི་བླ་མ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཡིས་ཀྱང་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ།།

॥ ཞེས་བཤད་པའི་ཚེ་དེ་ཁོ་ནས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཤེས་པར་བྱའོ་॥

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ❖ ཤེས་རབ་ཀྱི། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་རྩེ་ཐོག་ཏུ་ཡོད་པ་ཡིན་ཏེ

ཀྱི་ཚེ།། ཤ། ཤ། ཤ

ཐུབ་པ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཇི་སྲིད་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འདི་ཡང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པར་ཡོངས་སུ་བསྔགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཇི་སྲིད་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འདི་ཡང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས

॥ ॐ नमो भगवते वज्रसत्त्वाय ॥ ॐ वज्रसत्त्व समयमनुपालय वज्रसत्त्व त्वेनोपतिष्ठ दृढो मे भव सुतोषो मे भव सुपोषो मे भव अनुरक्तो मे भव सर्वसिद्धिं मे प्रयच्छ सर्वकर्मसु च मे चित्तं श्रेयः कुरु हूं हा हा हा हो भगवन् वज्रसत्त्व मा मुञ्च वज्रभव महासमयसत्त्व अः ॥ ❁ ॥ वज्रसत्त्वस्य हृदयं सर्वतथागतहृदयं सर्वतथागतवाक्यं सर्वतथागतचित्तं सर्वतथागतगुह्यं सर्वतथागतसमयं सर्वतथागतसिद्धिं सर्वतथागतकर्मं सर्वतथागतपूजां

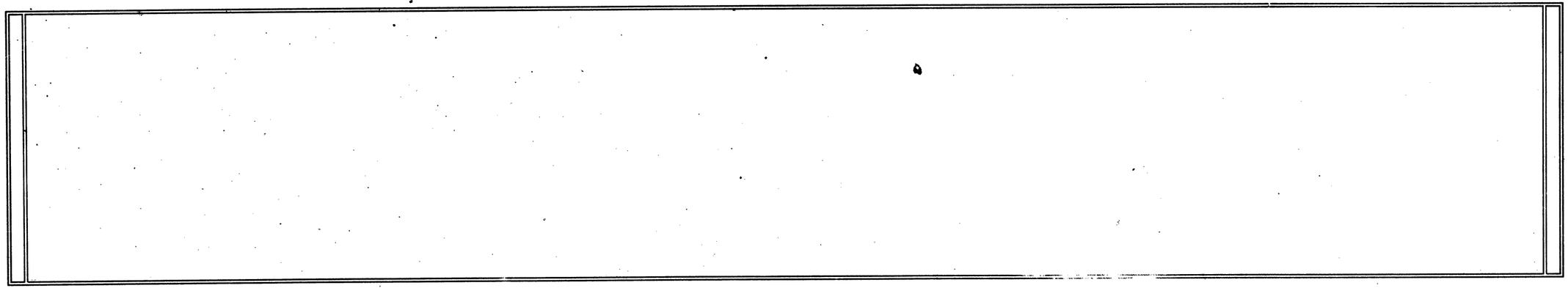

ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཡིས། ། ཐོས་པ་ཡི་ནི་ཕན་ཡོན་ཏེ། ཤིན་ཏུ་ཡངས་པ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་། ཐུབ

ཀཱ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ

ཨཱཿ ཤཱཀྱཱཡཱཿསྭཱཧཱ།། ◆།། ཤཱཀྱཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿཏཱཏྲཱཡཱཿཧཱུྃཿཧཱུྃཿ ཨཱཏཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿསྭཱཧཱ། ◆ ཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿ
ཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿསྭཱཧཱ། ཨཱཏཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿ ཏཱཏྲཱཡཱཿཏཱཏྲཱཡཱཿཏཱཏྲཱཡཱཿ ཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿ
ཀཱཡཱཿ ཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿསྭཱཧཱ། མཱཏཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿཤཱཀྱཱཡཱཿ མཱཏཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿ ཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿཡཱཏྲཱཡཱཿ
ཀཱཡཱཿ ཀཱཡཱཿཀཱཡཱཿཀ

ཞེས། ། གཞི་ལྷུན་གྲུབ་ལས་བྱུང་བ། རྒྱལ་པོ་རྒྱ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡུལ་ལས་མངའ་བས། མཚོན་ཏེ་མཚན་མཚོ་ལ་བཅུ་ཕྲག་ཏུ་ལྷུན་གྲུབ་ལས་བྱུང་བ། རྒྱལ་པོ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡུལ་ལས་མངའ་བས། རྟོག་པ་ལ་ཏེ་ལ་ལ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་ལྷུན་གྲུབ་ལས་བྱུང་བ། རྒྱལ་པོ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡུལ་ལས་མངའ་བས། ཀཱ་ཏི་ཏེ་མཚན་ཀཱ་ཏི

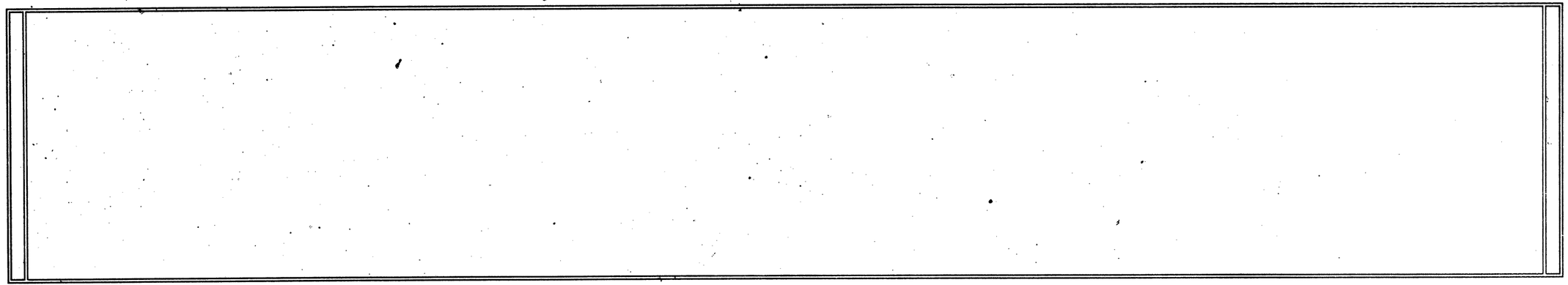

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ

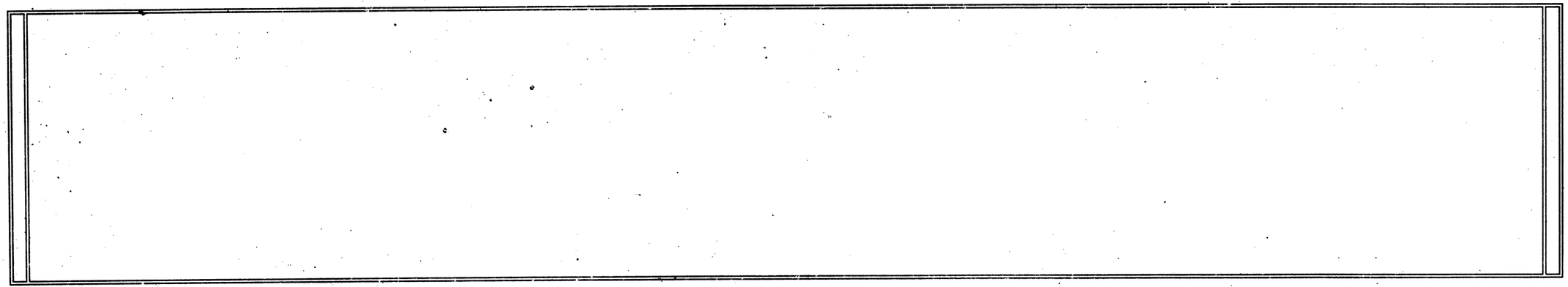

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།།

ཀཱ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ

།ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁམ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ན་ཡང་ཡོད་ཅིང་། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ཨོཾ་ ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཱཾ་ཧོཿ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཱཾ་ཧོཿ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཱཾ་ཧོཿ་ ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་ན་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཚིག་ཀྱིས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། ། ■ ། ། ཨོཾ་ ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཱཾ་ཧོཿ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཱཾ་ཧོཿ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཱཾ་ཧོཿ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིས་ཀྱང་ཤེས་པར་བྱའོ། ། ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་

ཡང་ཡང་ཐོག་ཏུ་ཐོག་ཏུ་

ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणाय महाकायकायाय
महाकालरूपिणे त्रिशिरसे षण्णेत्राय नवभुजाय दशपादाय अष्टदंष्ट्रोग्रभीषणाय
अट्टाट्टहासं कुर्वते स्फुरद्रौद्रभृकुटीविडम्बितमुखाय सप्तसप्तिरथारूढाय
प्रलयानलज्वालाकुलाकुलाय सकलत्रैलोक्यसंहारकारणाय ॐ हूं फट् स्वाहा ॥
ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय भूरिभयभैरवभीषणाय महाकायकायाय
महाकालरूपिणे त्रिशिरसे षण्णेत्राय नवभुजाय दशपादाय अष्टदंष्ट्रोग्रभीषणाय
अट्टाट्टहासं कुर्वते स्फुरद्रौद्रभृकुटीविडम्बितमुखाय सप्तसप्तिरथारूढाय
प्रलयानलज्वालाकुलाकुलाय सकलत्रैलोक्यसंहारकारणाय ॐ हूं फट् स्वाहा ॥

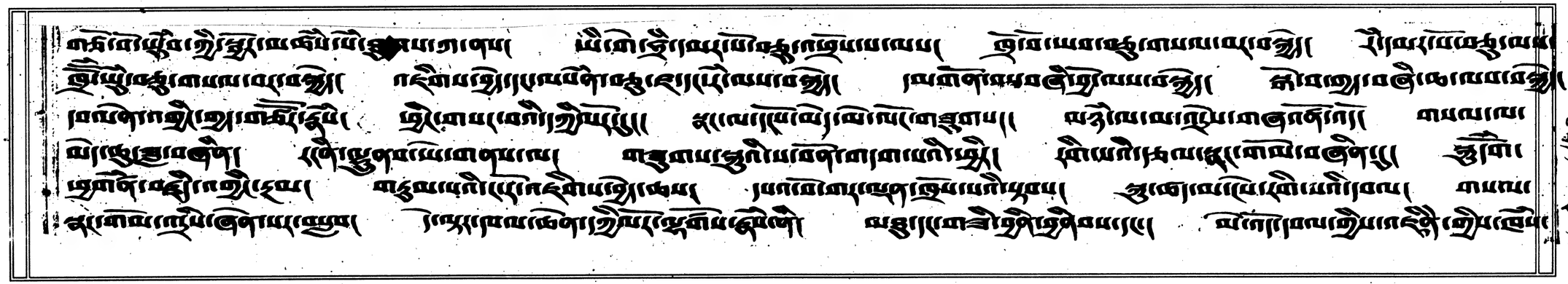

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ཡ་ཀ

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། མཧཱཀཱལ་ཡབ་ཡུམ་ཐུགས་ཀར་ཧཱུྃ་ཡིག་ལས་འོད་ཟེར་ཕྱུང་བས་ཞིང་ཁམས་ཀུན་ཏུ་ཡོད་པའི་ཚེ་དཔལ་ལྡན་ལྷ་མོ་ཆེན་མོ་ཐུགས་ཀར་ཧཱུྃ་ཡིག་ལས་འོད་ཟེར་ཕྱུང་བས་ཞིང་ཁམས་ཀུན་ཏུ་ཡོད་པའི་ཚེ་ཡབ་ཡུམ

ब्रह्मवैवर्तपुराणम् ब्रह्मखण्डे नारदनारायणसंवादे सावित्र्युपाख्यानं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ

ཞེས་ཐུགས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཨཱཿ་ལས་ཤིན་ཏུ་ཆུ་ཤེལ་ལྟ་བུ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་པ་ལ

ཐུབ་པ་ཡིས། ། གསུངས་པའི་ལམ་ལས་ཉམས་པ་མེད་པར་ཤེས་པར་བྱའོ། ། རྟེན་འབྲེལ་གསལ་བྱེད་ཟབ་མོ་ནི། ། ཐོས་ནས་མི་ཤེས་སྐྱེ་བོ་ཡིས། ། རྟག་ཏུ་ཡིད་ལ་བྱེད་པ་ཡི། ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ནི་ཤིན་ཏུ་ཆུང་། ། གཞན་ཡང་ཐོས་པ་ཆེ་བ་ཡིས། ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ནི་ཤིན་ཏུ་ཆུང་། ། ཐོས་པ་ཆེ་བ་ཡིས་ཀྱང་ནི། ། རྟེན་འབྲེལ་ཟབ་མོ་ཤེས་པ་ཡི

ཀཀ། ཀ ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ་བཛྲ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཐུགས་ཀར་ཟླ་གདན་ལ་ཨཱཿཧཱུྃ་ལས་བྱུང་བའི་རྡོ་རྗེ་ཐུགས་ཀ་ཅན་ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་པ་ཞབས་ཀྱི་སྟེང་དུ་ཡབ་ཡུམ་ཞལ་ཡབ་ཀྱི་ཞལ་གཡས་ཀྱི་ཕྱག་གཡས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ་ཡུམ་གྱི་ཞལ་གཡོན་གྱི་ཕྱག་གཡོན་གྱིས་རྡོ་རྗེ་ཡབ་ཀྱི་ཞལ་གཡོན་གྱི་ཕྱག་གཡོན་གྱིས་རྡོ་རྗེ་ཡུམ་གྱི་ཞལ་གཡས་ཀྱི་ཕྱག་གཡས་ཀྱིས་རྡོ་རྗེ

ཕན་ཡོན་ལས་ཀང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐོག་མར་ཞེས་ཀ། ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་ཕྱིར་ལས་སེམས་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ཏེ། ཀཱ་ཤྱ་པ་ལས་ཀྱ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མར་གྱུར་ཅིག །ཅེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་གྱིས་ཀྱང་ཞ

ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ།

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

ཤིན་ཏུ་ཆགས་པ་ཡིས་ཀྱང་ཞེས་པ་ལས་ཆགས་པ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། །ཁྲོ་བོ་ཆགས་ཆེན་ཞེས་པ་ལས་ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། །ཁྲོ་བོ་ཆགས་ཆེན་ཞེས་པ་ལས་ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། རྡོ་རྗེ་ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། ཁྲོ་བོ་ཆགས་ཆེན་ཞེས་པ་ལས་ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། ཁྲོ་བོ་ཆགས་ཆེན་ཞེས་པ་ལས་ཆགས་པ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་།

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏྟ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ཏྨ་ཀ་ཨཱ་ཏྨ་ཀ་ཨཱ་ཏྨ་ཀ

ཡང་ཡང་ཐོབ་ཅིང་ཡང་ཡང་ཤི་བ་ཡིན་ནོ། །

ཀཱ་ཏན་ཀྲི་ཡཱ་ཝ་ཏཱ་ར། རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ལས། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བྱུང་བ་ཡིན་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ནི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏོ

ཡུལ་ཀུན་ཏུ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཙམ་ཁྲིད་ཅིང་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནས་ཀྱ

ཨཱཡཱཧི ཝཛྲཱཡཱཧི ཝཛྲཱཝེ་ཤ་ཡཱཧི ཝཛྲཱཧཱ་ས་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ནུ་རཱ་ག་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་སཱ་དྷུ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་པུ་ཥྤེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཏེ་ཛེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཨཱ་ལོ་ཀེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་གཎྜེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཏཱ་ལེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ནྲྀ་ཏྱེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་གཱི་ཏེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཝཱ་དྱེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཨཱ་ཝ་ལི་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཧཱ་ར་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཨུ་པཱ་ཧཱ་ར་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཨཱ་ཤཱ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཨཱ་ཤཱ་ཝི་ཤུ་དྡྷི་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཤྲཱི་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཏྲཱ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ལོ་ཀཱ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཀཱ་མ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཀཱ་མ་ཤཱ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཀཱ་མ་ཨཱ་ཝ་ཙ་ར་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཀཱ་མ་ཨཱ་ཀ་ར་ཥཎྱེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཀཱ་མ་ཛ་ཡེ་ཡཱཧི ཝཛྲཱ་ཀཱ་མ་ཨཱ་ཀ་ཥ

ཕྱིན་མཐའ་ལས་མ། འཕྲོ་བ་ཀུན་ཡིད་ནས་སྐྱེ་བ་ཡིན་ཏེ། ཀུན་ཏུ་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་སོ། སྐྱེ་བ་ཀུན་ཏུ་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་སོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ནོ། ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཡང་ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ལས་སྐྱེ་བ་ཡིན་ཏེ། ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་སོ། ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་སོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ནོ། ཡིད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱ

ཨོཾ། ཨཱཿཧཱུྃ། ◆ ནཱརཱཡཎཱཡ་ཝིདྨཧེ། ཝཱསུདེཝཱཡ་ཏཱིམཧི། ཏནྣོ་ཝིཥྞུཿཔྲཙོདཡཱཏ། ཨོཾ་ཏཏྶཏྶ་ཝིཥྞཝེ

ཐོབ་པའོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །དེ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །དེ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །དེ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །དེ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །དེ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །དེ་ཡང་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཆོས་སྐོར།

ཤིས་ཀྱི། ། དཔལ་ལྡན་རྩ་བའི་བླ་མ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ། ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་དཔའ

ཐོབ་པའི་ཕྱིར། ཐོབ་པ་ཡང་

ཀྱི་ཡི་ཀེ་ཀོ་ཀཱ་ཀཱི་ཀུ་ཀཱུ་ཀྲུ་ཀཱྲཱུ་ཀླུ་ཀཱླཱུ་ཀེ་ཀཻ་ཀོ་ཀཽ་ཀཾ་ཀཿ ཁ་ཁཱ་ཁི་ཁཱི་ཁུ་ཁཱུ་ཁྲུ་ཁཱྲཱུ་ཁླུ་ཁཱླཱུ་ཁེ་ཁཻ་ཁོ་ཁཽ་ཁཾ་ཁཿ ག་གཱ་གི་གཱི་གུ་གཱུ་གྲུ་གཱྲཱུ་གླུ་གཱླཱུ་གེ་གཻ་གོ་གཽ་གཾ་གཿ
ང་ངཱ་ངི་ངཱི་ངུ་ངཱུ་ངྲུ་ངཱྲཱུ་ངླུ་ངཱླཱུ་ངེ་ངཻ་ངོ་ངཽ་ངཾ་ངཿ ཅ་ཅཱ་ཅི་ཅཱི་ཅུ་ཅཱུ་ཅྲུ་ཅཱྲཱུ་ཅླུ་ཅཱླཱུ་ཅེ་ཅཻ་ཅོ་ཅཽ་ཅཾ་ཅཿ ཆ་ཆཱ་ཆི་ཆཱི་ཆུ་ཆཱུ་ཆྲུ་ཆཱྲཱུ་ཆླུ་ཆཱླཱུ་ཆེ་ཆཻ་ཆོ་ཆཽ་ཆཾ་ཆཿ
ཇ་ཇཱ་ཇི་ཇཱི་ཇུ་ཇཱུ་ཇྲུ་ཇཱྲཱུ་ཇླུ་ཇཱླཱུ་ཇེ་ཇཻ་ཇོ་ཇཽ་ཇཾ་ཇཿ ཉ་ཉཱ་ཉི་ཉཱི་ཉུ་ཉཱུ་ཉྲུ་ཉཱྲཱུ་ཉླུ་ཉཱླཱུ་ཉེ་ཉཻ་ཉོ་ཉཽ་ཉཾ་ཉཿ ཏ་ཏཱ་ཏི་ཏཱི་ཏུ་ཏཱུ་ཏྲུ་ཏཱྲཱུ་ཏླུ་ཏཱླཱུ་ཏེ་ཏཻ་ཏོ་ཏཽ་ཏཾ་ཏཿ
ཐ་ཐཱ་ཐི་ཐཱི་ཐུ་ཐཱུ་ཐྲུ་ཐཱྲཱུ་ཐླུ་ཐཱླཱུ་ཐེ་ཐཻ་ཐོ་ཐཽ་ཐཾ་ཐཿ ད་དཱ་དི་དཱི་དུ་དཱུ་དྲུ་དཱྲཱུ་དླུ་དཱླཱུ་དེ་དཻ་དོ་དཽ་དཾ་དཿ ན་ནཱ་ནི་ནཱི་ནུ་ནཱུ་ནྲུ་ནཱྲཱུ་ནླུ་ནཱླཱུ་ནེ་ནཻ་ནོ་ནཽ་ནཾ་ནཿ
པ་པཱ་པི་པཱི་པུ་པཱུ་པྲུ་པཱྲཱུ་པླུ་པཱླཱུ་པེ་པཻ་པོ་པཽ་པཾ་པཿ ཕ་ཕཱ་ཕི་ཕཱི་ཕུ་ཕཱུ་ཕྲུ་ཕཱྲཱུ་ཕླུ་ཕཱླཱུ་ཕེ་ཕཻ་ཕོ་ཕཽ་ཕཾ་ཕཿ བ་བཱ་བི་བཱི་བུ་བཱུ་བྲུ་བཱྲཱུ་བླུ་བཱླཱུ་བེ་བཻ་བོ་བཽ་བཾ་བཿ
མ་མཱ་མི་མཱི་མུ་མཱུ་མྲུ་མཱྲཱུ་མླུ་མཱླཱུ་མེ་མཻ་མོ་མཽ་མཾ་མཿ ཙ་ཙཱ་ཙི་ཙཱི་ཙུ་ཙཱུ་ཙྲུ་ཙཱྲཱུ་ཙླུ་ཙཱླཱུ་ཙེ་ཙཻ་ཙོ་ཙཽ་ཙཾ་ཙཿ ཚ་ཚཱ་ཚི་ཚཱི་ཚུ་ཚཱུ་ཚྲུ་ཚཱྲཱུ་ཚླུ་ཚཱླཱུ་ཚེ་ཚཻ་ཚོ་ཚཽ་ཚཾ་ཚཿ
ཛ་ཛཱ་ཛི་ཛཱི་ཛུ་ཛཱུ་ཛྲུ་ཛཱྲཱུ་ཛླུ་ཛཱླཱུ་ཛེ་ཛཻ་ཛོ་ཛཽ་ཛཾ་ཛཿ ཝ་ཝཱ་ཝི་ཝཱི་ཝུ་ཝཱུ་ཝྲུ་ཝཱྲཱུ་ཝླུ་ཝཱླཱུ་ཝེ་ཝཻ་ཝོ་ཝཽ་ཝཾ་ཝཿ ཞ་ཞཱ་ཞི་ཞཱི་ཞུ་ཞཱུ་ཞྲུ་ཞཱྲཱུ་ཞླུ་ཞཱླཱུ་ཞེ་ཞཻ་ཞོ་ཞཽ་ཞཾ་ཞཿ
ཟ་ཟཱ་ཟི་ཟཱི་ཟུ་ཟཱུ་ཟྲུ་ཟཱྲཱུ་ཟླུ་ཟཱླཱུ་ཟེ་ཟཻ་ཟོ་ཟཽ་ཟཾ་ཟཿ འ་འཱ་འི་འཱི་འུ་འཱུ་འྲུ་འཱྲཱུ་འླུ་འཱླཱུ་འེ་འཻ་འོ་འཽ་འཾ་འཿ ཡ་ཡཱ་ཡི་ཡཱི་ཡུ་ཡཱུ་ཡྲུ་ཡཱྲཱུ་ཡླུ་ཡཱླཱུ་ཡེ་ཡཻ་ཡོ་ཡཽ་ཡཾ་ཡཿ
ར་རཱ་རི་རཱི་རུ་རཱུ་རྲུ་རཱྲཱུ་རླུ་རཱླཱུ་རེ་རཻ་རོ་རཽ་རཾ་རཿ ལ་ལཱ་ལི་ལཱི་ལུ་ལཱུ་ལྲུ་ལཱྲཱུ་ལླུ་ལཱླཱུ་ལེ་ལཻ་ལོ་ལཽ་ལཾ་ལཿ ཤ་ཤཱ་ཤི་ཤཱི་ཤུ་ཤཱུ་ཤྲུ་ཤཱྲཱུ་ཤླུ་ཤཱླཱུ་ཤེ་ཤཻ་ཤོ་ཤཽ་ཤཾ་ཤཿ
ས་སཱ་སི་སཱི་སུ་སཱུ་སྲུ་སཱྲཱུ་སླུ་སཱླཱུ་སེ་སཻ་སོ་སཽ་སཾ་སཿ ཧ་ཧཱ་ཧི་ཧཱི་ཧུ་ཧཱུ་ཧྲུ་ཧཱྲཱུ་ཧླུ་ཧཱླཱུ་ཧེ་ཧཻ་ཧོ་ཧཽ་ཧཾ་ཧཿ ཨ་ཨཱ་ཨི་ཨཱི་ཨུ་ཨཱུ་ཨྲུ་ཨཱྲཱུ་ཨླུ་ཨཱླཱུ་ཨེ་ཨཻ་ཨོ་ཨཽ་ཨཾ་ཨཿ
ཀྵ་ཀྵཱ་ཀྵི་ཀྵཱི་ཀྵུ་ཀྵཱུ་ཀྵྲུ་ཀྵཱྲཱུ་ཀྵླུ་ཀྵཱླཱུ་ཀྵེ་ཀྵཻ་ཀྵོ་ཀྵཽ་ཀྵཾ་ཀྵཿ ཀྴ་ཀྴཱ་ཀྴི་ཀྴཱི་ཀྴུ་ཀྴཱུ་ཀྴྲུ་ཀྴཱྲཱུ་ཀྴླུ་ཀྴཱླཱུ་ཀྴེ་ཀྴཻ་ཀྴོ་ཀྴཽ་ཀྴཾ་ཀྴཿ ཀྶ་ཀྶཱ་ཀྶི་ཀྶཱི་ཀྶུ་ཀྶཱུ་ཀྶྲུ་ཀྶཱྲཱུ་ཀྶླུ་ཀྶཱླཱུ་ཀྶེ་ཀྶཻ་ཀྶོ་ཀྶཽ་ཀྶཾ་ཀྶཿ
ཀྺ་ཀྺཱ་ཀྺི་ཀྺཱི་ཀྺུ་ཀྺཱུ་ཀྺྲུ་ཀྺཱྲཱུ་ཀྺླུ་ཀྺཱླཱུ་ཀྺེ་ཀྺཻ་ཀྺོ་ཀྺཽ་ཀྺཾ་ཀྺཿ ཀྻ་ཀྻཱ་ཀྻི་ཀྻཱི་ཀྻུ་ཀྻཱུ་ཀྻྲུ་ཀྻཱྲཱུ་ཀྻླུ་ཀྻཱླཱུ་ཀྻེ་ཀྻཻ་ཀྻོ་ཀྻཽ་ཀྻཾ་ཀྻཿ ཀྼ་ཀྼཱ་ཀྼི་ཀྼཱི་ཀྼུ་ཀྼཱུ་ཀྼྲུ་ཀྼཱྲཱུ་ཀྼླུ་ཀྼཱླཱུ་ཀྼེ་ཀྼཻ་ཀྼོ་ཀྼཽ་ཀྼཾ་ཀྼཿ
ཀ྽་ཀ྽ཱ་ཀ྽ི་ཀ྽ཱི་ཀ྽ུ་ཀ྽ཱུ་ཀ྽ྲུ་ཀ྽ཱྲཱུ་ཀ྽ླུ་ཀ྽ཱླཱུ་ཀ྽ེ་ཀ྽ཻ་ཀ྽ོ་ཀ྽ཽ་ཀ྽ཾ་ཀ྽ཿ ཀྵ་ཀྵཱ་ཀྵི་ཀྵཱི་ཀྵུ་ཀྵཱུ་ཀྵྲུ་ཀྵཱྲཱུ་ཀྵླུ་ཀྵཱླཱུ་ཀྵེ་ཀྵཻ་ཀྵོ་ཀྵཽ་ཀྵཾ་ཀྵཿ ཀྷ་ཀྷཱ་ཀྷི་ཀྷཱི་ཀྷུ་ཀྷཱུ་ཀྷྲུ་ཀྷཱྲཱུ་ཀྷླུ་ཀྷཱླཱུ་ཀྷེ་ཀྷཻ་ཀྷོ་ཀྷཽ་ཀྷཾ་ཀྷཿ
ཀྸ་ཀྸཱ་ཀྸི་ཀྸཱི་ཀྸུ་ཀྸཱུ་ཀྸྲུ་ཀྸཱྲཱུ་ཀྸླུ་ཀྸཱླཱུ་ཀྸེ་ཀྸཻ་ཀྸོ་ཀྸཽ་ཀྸཾ་ཀྸཿ ཀྐ་ཀྐཱ་ཀྐི་ཀྐཱི་ཀྐུ་ཀྐཱུ་ཀྐྲུ་ཀྐཱྲཱུ་ཀྐླུ་ཀྐཱླཱུ་ཀྐེ་ཀྐཻ་ཀྐོ་ཀྐཽ་ཀྐཾ་ཀྐཿ ཀྑ་ཀྑཱ་ཀྑི་ཀྑཱི་ཀྑུ་ཀྑཱུ་ཀྑྲུ་ཀྑཱྲཱུ་ཀྑླུ་ཀྑཱླཱུ་ཀྑེ་ཀྑཻ་ཀྑོ་ཀྑཽ་ཀྑཾ་ཀྑཿ
ཀྒ་ཀྒཱ་ཀྒི་ཀྒཱི་ཀྒུ་ཀྒཱུ་ཀྒྲུ་ཀྒཱྲཱུ་ཀྒླུ་ཀྒཱླཱུ་ཀྒེ་ཀྒཻ་ཀྒོ་ཀྒཽ་ཀྒཾ་ཀྒཿ ཀྔ་ཀྔཱ་ཀྔི་ཀྔཱི་ཀྔུ་ཀྔཱུ་ཀྔྲུ་ཀྔཱྲཱུ་ཀྔླུ་ཀྔཱླཱུ་ཀྔེ་ཀྔཻ་ཀྔོ་ཀྔཽ་ཀྔཾ་ཀྔཿ ཀྕ་ཀྕཱ་ཀྕི་ཀྕཱི་ཀྕུ་ཀྕཱུ་ཀྕྲུ་ཀྕཱྲཱུ་ཀྕླུ་ཀྕཱླཱུ་ཀྕེ་ཀྕཻ་ཀྕོ་ཀྕཽ་ཀྕཾ་ཀྕཿ
ཀྖ་ཀྖཱ་ཀྖི་ཀྖཱི་ཀྖུ་ཀྖཱུ་ཀྖྲུ་ཀྖཱྲཱུ་ཀྖླུ་ཀྖཱླཱུ་ཀྖེ་ཀྖཻ་ཀྖོ་ཀྖཽ་ཀྖཾ་ཀྖཿ ཀྗ་ཀྗཱ་ཀྗི་ཀྗཱི་ཀྗུ་ཀྗཱུ་ཀྗྲུ་ཀྗཱྲཱུ་ཀྗླུ་ཀྗཱླཱུ་ཀྗེ་ཀྗཻ་ཀྗོ་ཀྗཽ་ཀྗཾ་ཀྗཿ ཀྙ་ཀྙཱ་ཀྙི་ཀྙཱི་ཀྙུ་ཀྙཱུ་ཀྙྲུ་ཀྙཱྲཱུ་ཀྙླུ་ཀྙཱླཱུ་ཀྙེ་ཀྙཻ་ཀྙོ་ཀྙཽ་ཀྙཾ་ཀྙཿ
ཀྚ་ཀྚཱ་ཀྚི་ཀྚཱི་ཀྚུ་ཀྚཱུ་ཀྚྲུ་ཀྚཱྲཱུ་ཀྚླུ་ཀྚཱླཱུ་ཀྚེ་ཀྚཻ་ཀྚོ་ཀྚཽ་ཀྚཾ་ཀྚཿ ཀྛ་ཀྛཱ་ཀྛི་ཀྛཱི་ཀྛུ་ཀྛཱུ་ཀྛྲུ་ཀྛཱྲཱུ་ཀྛླུ་ཀྛཱླཱུ་ཀྛེ་ཀྛཻ་ཀྛོ་ཀྛཽ་ཀྛཾ་ཀྛཿ ཀྜ་ཀྜཱ་ཀྜི་ཀྜཱི་ཀྜུ་ཀྜཱུ་ཀྜྲུ་ཀྜཱྲཱུ་ཀྜླུ་ཀྜཱླཱུ་ཀྜེ་ཀྜཻ་ཀྜོ་ཀྜཽ་ཀྜཾ་ཀྜཿ
ཀྞ་ཀྞཱ་ཀྞི་ཀྞཱི་ཀྞུ་ཀྞཱུ་ཀྞྲུ་ཀྞཱྲཱུ་ཀྞླུ་ཀྞཱླཱུ་ཀྞེ་ཀྞཻ་ཀྞོ་ཀྞཽ་ཀྞཾ་ཀྞཿ ཀྟ་ཀྟཱ་ཀྟི་ཀྟཱི་ཀྟུ་ཀྟཱུ་ཀྟྲུ་ཀྟཱྲཱུ་ཀྟླུ་ཀྟཱླཱུ་ཀྟེ་ཀྟཻ་ཀྟོ་ཀྟཽ་ཀྟཾ་ཀྟཿ ཀྠ་ཀྠཱ་ཀྠི་ཀྠཱི་ཀྠུ་ཀྠཱུ་ཀྠྲུ་ཀྠཱྲཱུ་ཀྠླུ་ཀྠཱླཱུ་ཀྠེ་ཀྠཻ་ཀྠོ་ཀྠཽ་ཀྠཾ་ཀྠཿ
ཀྡ་ཀྡཱ་ཀྡི་ཀྡཱི་ཀྡུ་ཀྡཱུ་ཀྡྲུ་ཀྡཱྲཱུ་ཀྡླུ་ཀྡཱླཱུ་ཀྡེ་ཀྡཻ་ཀྡོ་ཀྡཽ་ཀྡཾ་ཀྡཿ ཀྡྷ་ཀྡྷཱ་ཀྡྷི་ཀྡྷཱི་ཀྡྷུ་ཀྡྷཱུ་ཀྡྷྲུ་ཀྡྷཱྲཱུ་ཀྡྷླུ་ཀྡྷཱླཱུ་ཀྡྷེ་ཀྡྷཻ་ཀྡྷོ་ཀྡྷཽ་ཀྡྷཾ་ཀྡྷཿ ཀྣ་ཀྣཱ་ཀྣི་ཀྣཱི་ཀྣུ་ཀྣཱུ་ཀྣྲུ་ཀྣཱྲཱུ་ཀྣླུ་ཀྣཱླཱུ་ཀྣེ་ཀྣཻ་ཀྣོ་ཀྣཽ་ཀྣཾ་ཀྣཿ
ཀྤ་ཀྤཱ་ཀྤི་ཀྤཱི་ཀྤུ་ཀྤཱུ་ཀྤྲུ་ཀྤཱྲཱུ་ཀྤླུ་ཀྤཱླཱུ་ཀྤེ་ཀྤཻ་ཀྤོ་ཀྤཽ་ཀྤཾ་ཀྤཿ ཀྥ་ཀྥཱ་ཀྥི་ཀྥཱི་ཀྥུ་ཀྥཱུ་ཀྥྲུ་ཀྥཱྲཱུ་ཀྥླུ་ཀྥཱླཱུ་ཀྥེ་ཀྥཻ་ཀྥོ་ཀྥཽ་ཀྥཾ་ཀྥཿ ཀྦ་ཀྦཱ་ཀྦི་ཀྦཱི་ཀྦུ་ཀྦཱུ་ཀྦྲུ་ཀྦཱྲཱུ་ཀྦླུ་ཀྦཱླཱུ་ཀྦེ་ཀྦཻ་ཀྦོ་ཀྦཽ་ཀྦཾ་ཀྦཿ
ཀྨ་ཀྨཱ་ཀྨི་ཀྨཱི་ཀྨུ་ཀྨཱུ་ཀྨྲུ་ཀྨཱྲཱུ་ཀྨླུ་ཀྨཱླཱུ་ཀྨེ་ཀྨཻ་ཀྨོ་ཀྨཽ་ཀྨཾ་ཀྨཿ ཀྩ་ཀྩཱ་ཀྩི་ཀྩཱི་ཀྩུ་ཀྩཱུ་ཀྩྲུ་ཀྩཱྲཱུ་ཀྩླུ་ཀྩཱླཱུ་ཀྩེ་ཀྩཻ་ཀྩོ་ཀྩཽ་ཀྩཾ་ཀྩཿ ཀྪ་ཀྪཱ་ཀྪི་ཀྪཱི་ཀྪུ་ཀྪཱུ་ཀྪྲུ་ཀྪཱྲཱུ་ཀྪླུ་ཀྪཱླཱུ་ཀྪེ་ཀྪཻ་ཀྪོ་ཀྪཽ་ཀྪཾ་ཀྪཿ
ཀྫ་ཀྫཱ་ཀྫི་ཀྫཱི་ཀྫུ་ཀྫཱུ་ཀྫྲུ་ཀྫཱྲཱུ་ཀྫླུ་ཀྫཱླཱུ་ཀྫེ་ཀྫཻ་ཀྫོ་ཀྫཽ་ཀྫཾ་ཀྫཿ ཀྭ་ཀྭཱ་ཀྭི་ཀྭཱི་ཀྭུ་ཀྭཱུ་ཀྭྲུ་ཀྭཱྲཱུ་ཀྭླུ་ཀྭཱླཱུ་ཀྭེ་ཀྭཻ་ཀྭོ་ཀྭཽ་ཀྭཾ་ཀྭཿ ཀྮ་ཀྮཱ་ཀྮི་ཀྮཱི་ཀྮུ་ཀྮཱུ་ཀྮྲུ་ཀྮཱྲཱུ་ཀྮླུ་ཀྮཱླཱུ་ཀྮེ་ཀྮཻ་ཀྮོ་ཀྮཽ་ཀྮཾ་ཀྮཿ
ཀྯ་ཀྯཱ་ཀྯི་ཀྯཱི་ཀྯུ་ཀྯཱུ་ཀྯྲུ་ཀྯཱྲཱུ་ཀྯླུ་ཀྯཱླཱུ་ཀྯེ་ཀྯཻ་ཀྯོ་ཀྯཽ་ཀྯཾ་ཀྯཿ ཀྰ་ཀྰཱ་ཀྰི་ཀྰཱི་ཀྰུ་ཀྰཱུ་ཀྰྲུ་ཀྰཱྲཱུ་ཀྰླུ་ཀྰཱླཱུ་ཀྰེ་ཀྰཻ་ཀྰོ་ཀྰཽ་ཀྰཾ་ཀྰཿ ཀྱ་ཀྱཱ་ཀྱི་ཀྱཱི་ཀྱུ་ཀྱཱུ་ཀྱྲུ་ཀྱཱྲཱུ་ཀྱླུ་ཀྱཱླཱུ་ཀྱེ་ཀྱཻ་ཀྱོ་ཀྱཽ་ཀྱཾ་ཀྱཿ
ཀྲ་ཀྲཱ་ཀྲི་ཀྲཱི་ཀྲུ་ཀྲཱུ་ཀྲྲུ་ཀྲཱྲཱུ་ཀྲླུ་ཀྲཱླཱུ་ཀྲེ་ཀྲཻ་ཀྲོ་ཀྲཽ་ཀྲཾ་ཀྲཿ ཀླ་ཀླཱ་ཀླི་ཀླཱི་ཀླུ་ཀླཱུ་ཀླྲུ་ཀླཱྲཱུ་ཀླླུ་ཀླཱླཱུ་ཀླེ་ཀླཻ་ཀློ་ཀླཽ་ཀླཾ་ཀླཿ ཀྵ་ཀྵཱ་ཀྵི་ཀྵཱི་ཀྵུ་ཀྵཱུ་ཀྵྲུ་ཀྵཱྲཱུ་ཀྵླུ་ཀྵཱླཱུ་ཀྵེ་ཀྵཻ་ཀྵོ་ཀྵཽ་ཀྵཾ་ཀྵཿ
ཀྴ་ཀྴཱ་ཀྴི་ཀྴཱི་ཀྴུ་ཀྴཱུ་ཀྴྲུ་ཀྴཱྲཱུ་ཀྴླུ་ཀྴཱླཱུ་ཀྴེ་ཀྴཻ་ཀྴོ་ཀྴཽ་ཀྴཾ་ཀྴཿ ཀྶ་ཀྶཱ་ཀྶི་ཀྶཱི་ཀྶུ་ཀྶཱུ་ཀྶྲུ་ཀྶཱྲཱུ་ཀྶླུ་ཀྶཱླཱུ་ཀྶེ་ཀྶཻ་ཀྶོ་ཀྶཽ་ཀྶཾ་ཀྶཿ ཀྷ་ཀྷཱ་ཀྷི་ཀྷཱི་ཀྷུ་ཀྷཱུ་ཀྷྲུ་ཀྷཱྲཱུ་ཀྷླུ་ཀྷཱླཱུ་ཀྷེ་ཀྷཻ་ཀྷོ་ཀྷཽ་ཀྷཾ་ཀྷཿ
ཀྸ་ཀྸཱ་ཀྸི་ཀྸཱི་ཀྸུ་ཀྸཱུ་ཀྸྲུ་ཀྸཱྲཱུ་ཀྸླུ་ཀྸཱླཱུ་ཀྸེ་ཀྸཻ་ཀྸོ་ཀྸཽ་ཀྸཾ་ཀྸཿ ཀྐ་ཀྐཱ་ཀྐི་ཀྐཱི་ཀྐུ་ཀྐཱུ་ཀྐྲུ་ཀྐཱྲཱུ་ཀྐླུ་ཀྐཱླཱུ་ཀྐེ་ཀྐཻ་ཀྐོ་ཀྐཽ་ཀྐཾ་ཀྐཿ ཀྑ་ཀྑཱ་ཀྑི་ཀྑཱི་ཀྑུ་ཀྑཱུ་ཀྑྲུ་ཀྑཱྲཱུ་ཀྑླུ་ཀྑཱླཱུ་ཀྑེ་ཀྑཻ་ཀྑོ་ཀྑཽ་ཀྑཾ་ཀྑཿ
ཀྒ་ཀྒཱ་ཀྒི་ཀྒཱི་ཀྒུ་ཀྒཱུ་ཀྒྲུ་ཀྒཱྲཱུ་ཀྒླུ་ཀྒཱླཱུ་ཀྒེ་ཀྒཻ་ཀྒོ་ཀྒཽ་ཀྒཾ་ཀྒཿ ཀྔ་ཀྔཱ་ཀྔི་ཀྔཱི་ཀྔུ་ཀྔཱུ་ཀྔྲུ་ཀྔཱྲཱུ་ཀྔླུ་ཀྔཱླཱུ་ཀྔེ་ཀྔཻ་ཀྔོ་ཀྔཽ་ཀྔཾ་ཀྔཿ ཀྕ་ཀྕཱ་ཀྕི་ཀྕཱི་ཀྕུ་ཀྕཱུ་ཀྕྲུ་ཀྕཱྲཱུ་ཀྕླུ་ཀྕཱླཱུ་ཀྕེ་ཀྕཻ་ཀྕོ་ཀྕཽ་ཀྕཾ་ཀྕཿ
ཀྖ་ཀྖཱ་ཀྖི་ཀྖཱི་ཀྖུ་ཀྖཱུ་ཀྖྲུ་ཀྖཱྲཱུ་ཀྖླུ་ཀྖཱླཱུ་ཀྖེ་ཀྖཻ་ཀྖོ་ཀྖཽ་ཀྖཾ་ཀྖཿ ཀྗ་ཀྗཱ་ཀྗི་ཀྗཱི་ཀྗུ་ཀྗཱུ་ཀྗྲུ་ཀྗཱྲཱུ་ཀྗླུ་ཀྗཱླཱུ་ཀྗེ་ཀྗཻ་ཀྗོ་ཀྗཽ་ཀྗཾ་ཀྗཿ ཀྙ་ཀྙཱ་ཀྙི་ཀྙཱི་ཀྙུ་ཀྙཱུ་ཀྙྲུ་ཀྙཱྲཱུ་ཀྙླུ་ཀྙཱླཱུ་ཀྙེ་ཀྙཻ་ཀྙོ་ཀྙཽ་ཀྙཾ་ཀྙཿ
ཀྚ་ཀྚཱ་ཀྚི་ཀྚཱི་ཀྚུ་ཀྚཱུ་ཀྚྲུ་ཀྚཱྲཱུ་ཀྚླུ་ཀྚཱླཱུ་ཀྚེ་ཀྚཻ་ཀྚོ་ཀྚཽ་ཀྚཾ་ཀྚཿ ཀྛ་ཀྛཱ་ཀྛི་ཀྛཱི་ཀྛུ་ཀྛཱུ་ཀྛྲུ་ཀྛཱྲཱུ་ཀྛླུ་ཀྛཱླཱུ་ཀྛེ་ཀྛཻ་ཀྛོ་ཀྛཽ་ཀྛཾ་ཀྛཿ ཀྜ་ཀྜཱ་ཀྜི་ཀྜཱི་ཀྜུ་ཀྜཱུ་ཀྜྲུ་ཀྜཱྲཱུ་ཀྜླུ་ཀྜཱླཱུ་ཀྜེ་ཀྜཻ་ཀྜོ་ཀྜཽ་ཀྜཾ་ཀྜཿ
ཀྞ་ཀྞཱ་ཀྞི་ཀྞཱི་ཀྞུ་ཀྞཱུ་ཀྞྲུ་ཀྞཱྲཱུ་ཀྞླུ་ཀྞཱླཱུ་ཀྞེ་ཀྞཻ་ཀྞོ་ཀྞཽ་ཀྞཾ་ཀྞཿ ཀྟ་ཀྟཱ་ཀྟི་ཀྟཱི་ཀྟུ་ཀྟཱུ་ཀྟྲུ་ཀྟཱྲཱུ་ཀྟླུ་ཀྟཱླཱུ་ཀྟེ་ཀྟཻ་ཀྟོ་ཀྟཽ་ཀྟཾ་ཀྟཿ ཀྠ་ཀྠཱ་ཀྠི་ཀྠཱི་ཀྠུ་ཀྠཱུ་ཀྠྲུ་ཀྠཱྲཱུ་ཀྠླུ་ཀྠཱླཱུ་ཀྠེ་ཀྠཻ་ཀྠོ་ཀྠཽ་ཀྠཾ་ཀྠཿ
ཀྡ་ཀྡཱ་ཀྡི་ཀྡཱི་ཀྡུ་ཀྡཱུ་ཀྡྲུ་ཀྡཱྲཱུ་ཀྡླུ་ཀྡཱླཱུ་ཀྡེ་ཀྡཻ་ཀྡོ་ཀྡཽ་ཀྡཾ་ཀྡཿ ཀྡྷ་ཀྡྷཱ་ཀྡྷི་ཀྡྷཱི་ཀྡྷུ་ཀྡྷཱུ་ཀྡྷྲུ་ཀྡྷཱྲཱུ་ཀྡྷླུ་ཀྡྷཱླཱུ་ཀྡྷེ་ཀྡྷཻ་ཀྡྷོ་ཀྡྷཽ་ཀྡྷཾ་ཀྡྷཿ ཀྣ་ཀྣཱ་ཀྣི་ཀྣཱི་ཀྣུ་ཀྣཱུ་ཀྣྲུ་ཀྣཱྲཱུ་ཀྣླུ་ཀྣཱླཱུ་ཀྣེ་ཀྣཻ་ཀྣོ་ཀྣཽ་ཀྣཾ་ཀྣཿ
ཀྤ་ཀྤཱ་ཀྤི་ཀྤཱི་ཀྤུ་ཀྤཱུ་ཀྤྲུ་ཀྤཱྲཱུ་ཀྤླུ་ཀྤཱླཱུ་ཀྤེ་ཀྤཻ་ཀྤོ་ཀྤཽ་ཀྤཾ་ཀྤཿ ཀྥ་ཀྥཱ་ཀྥི་ཀྥཱི་ཀྥུ་ཀྥཱུ་ཀྥྲུ་ཀྥཱྲཱུ་ཀྥླུ་ཀྥཱླཱུ་ཀྥེ་ཀྥཻ་ཀྥོ་ཀྥཽ་ཀྥཾ་ཀྥཿ ཀྦ་ཀྦཱ་ཀྦི་ཀྦཱི་ཀྦུ་ཀྦཱུ་ཀྦྲུ་ཀྦཱྲཱུ་ཀྦླུ་ཀྦཱླཱུ་ཀྦེ་ཀྦཻ་ཀྦོ་ཀྦཽ་ཀྦཾ་ཀྦཿ
ཀྨ་ཀྨཱ་ཀྨི་ཀྨཱི་ཀྨུ་ཀྨཱུ་ཀྨྲུ་ཀྨཱྲཱུ་ཀྨླུ་ཀྨཱླཱུ་ཀྨེ་ཀྨཻ་ཀྨོ་ཀྨཽ་ཀྨཾ་ཀྨཿ ཀྩ་ཀྩཱ་ཀྩི་ཀྩཱི་ཀྩུ་ཀྩཱུ་ཀྩྲུ་ཀྩཱྲཱུ་ཀྩླུ་ཀྩཱླཱུ་ཀྩེ་ཀྩཻ་ཀྩོ་ཀྩཽ་ཀྩཾ་ཀྩཿ ཀྪ་ཀྪཱ་ཀྪི་ཀྪཱི་ཀྪུ་ཀྪཱུ་ཀྪྲུ་ཀྪཱྲཱུ་ཀྪླུ་ཀྪཱླཱུ་ཀྪེ་ཀྪཻ་ཀྪོ་ཀྪཽ་ཀྪཾ་ཀྪཿ
ཀྫ་ཀྫཱ་ཀྫི་ཀྫཱི་ཀྫུ་ཀྫཱུ་ཀྫྲུ་ཀྫཱྲཱུ་ཀྫླུ་ཀྫཱླཱུ་ཀྫེ་ཀྫཻ་ཀྫོ་ཀྫཽ་ཀྫཾ་ཀྫཿ ཀྭ་ཀྭཱ་ཀྭི་ཀྭཱི་ཀྭུ་ཀྭཱུ་ཀྭྲུ་ཀྭཱྲཱུ་ཀྭླུ་ཀྭཱླཱུ་ཀྭེ་ཀྭཻ་ཀྭོ་ཀྭཽ་ཀྭཾ་ཀྭཿ ཀྮ་ཀྮཱ་ཀྮི་ཀྮཱི་ཀྮུ་ཀྮཱུ་ཀྮྲུ་ཀྮཱྲཱུ་ཀྮླུ་ཀྮཱླཱུ་ཀྮེ་ཀྮཻ་ཀྮོ་ཀྮཽ་ཀྮཾ་ཀྮཿ
ཀྯ་ཀྯཱ་ཀྯི་ཀྯཱི་ཀྯུ་ཀྯཱུ་ཀྯྲུ་ཀྯཱྲཱུ་ཀྯླུ་ཀྯཱླཱུ་ཀྯེ་ཀྯཻ་ཀྯོ་ཀྯཽ་ཀྯཾ་ཀྯཿ ཀྰ་ཀྰཱ་ཀྰི་ཀྰཱི་ཀྰུ་ཀྰཱུ་ཀྰྲུ་ཀྰཱྲཱུ་ཀྰླུ་ཀྰཱླཱུ་ཀྰེ་ཀྰཻ་ཀྰོ་ཀྰཽ་ཀྰཾ་ཀྰཿ ཀྱ་ཀྱཱ་ཀྱི་ཀྱཱི་ཀྱུ་ཀྱཱུ་ཀྱྲུ་ཀྱཱྲཱུ་ཀྱླུ་ཀྱཱླཱུ་ཀྱེ་ཀྱཻ་ཀྱོ་ཀྱཽ་ཀྱཾ་ཀྱཿ
ཀྲ་ཀྲཱ་ཀྲི་ཀྲཱི་ཀྲུ་ཀྲཱུ་ཀྲྲུ་ཀྲཱྲཱུ་ཀྲླུ་ཀྲཱླཱུ་ཀྲེ་ཀྲཻ་ཀྲོ་ཀྲཽ་ཀྲཾ་ཀྲཿ ཀླ་ཀླཱ་ཀླི་ཀླཱི་ཀླུ་ཀླཱུ་ཀླྲུ་ཀླཱྲཱུ་ཀླླུ་ཀླཱླཱུ་ཀླེ་ཀླཻ་ཀློ་ཀླཽ་ཀླཾ་ཀླཿ ཀྵ་ཀྵཱ་ཀྵི་ཀྵཱི་ཀྵུ་ཀྵཱུ་ཀྵྲུ་ཀྵཱྲཱུ་ཀྵླུ་ཀྵཱླཱུ་ཀྵེ་ཀྵཻ་ཀྵོ་ཀྵཽ་ཀྵཾ་ཀྵཿ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཀཱ་ལཱ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། ། ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་

ཀཱ། ཅ ། ཨཨཨ

ཨཀྵཡཱཧྵཱ། ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།། ཞེས་ཟློས་ཏེ་ཐུགས་ཀར་ཐིམ་པ་བྱས་ལ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཞེས་ཟློས་ཏེ་ཐུགས་ཀ་ནས་ཕྱིར་ཕྱུང་ཞིང་། ཨཀྵཡཱཧྵཱ། ཞེས་ཟློས་ཏེ་ཐུགས་ཀ་ནས་ཕྱིར་ཕྱུང་ཞིང་། ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཞེས་ཟློས་ཏེ་ཐུགས་ཀ་ནས་ཕྱིར་ཕྱུང་ཞིང་

ལྟ་བུ། ཏཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐུགས་ཀ་ནས་ཨོ

ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡང་ཡོད་ཅེས་ཀྱང་ཟེར་ཏེ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནི། །ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཐུགས་ཀྱི་ནི། །ཡེ་ཤེས་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ། ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཐུགས་ཀྱི་ནི། །ཡེ་ཤེས

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཏེ། ཞིང་ཁམས་ཐམས་ཅད

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་དམར་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ།

ཀཱཡཱ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཏྨ་ཀ་ཨཱ་ཏྨ་ཡ་ཨཱ་ཏྨ་ཀ་ཨཱ་ཏྨ་ཡ་ཀ་ཀཱ་ཡ

ཀུ། ། བཀའ་ལས་ཀ་ཀ་ཀུ་ཀ་ཀ་ཀུ། རྒྱ་ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀ་ཀ་ཀུ་ཀུ་ཀ་ཀུ་ཀ་ཀ་ཀུ། ཀ་ཀུ་ཀུ་ཀ་ཀ་ཀུ་ཀ་ཀ་ཀུ་ཀ་ཀ

ལས་བྱ། ལེགས་བྱེད་ཀྱི་ཚིག་སྔོན་དུ་འགྲོ་བ་ལེགས། རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོ་ལྟ་བུ་ཡིན་ཏེ་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚིག་ཡིན་ནོ། ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚིག

ཨོཾ་ ཧཱུྃ་ ཕཊ་ ཨོཾ་ ཨཱཿ

ཤེས་པའོ། རྟེན་དེ་མཐའ་དག་ལྟ་བུ་ཡིན་ཏེ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐ་ན་ཚིག་ཙམ་ཡང་ཤེས་པ་ཡིན་ཏེ། ཚིག་ཙམ་ཡང་ཤེས་པ

།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཡང་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་གསུམ་སྟེ། ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་དང་། ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་དང་། སྤང་བ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའོ། །དེ་ལ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི། ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི། ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །སྤང་བ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི། ཀུན་ཏུ་ཀུན་ཏུ་ལྡན་པ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི། ཕུང་པོ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་སྤང་བ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ནི། ཀུན་ཏུ་ཀུན་ཏུ་ལྡན་པ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་ཤེ

།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཡི། ཞེས་པ་ནས་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞེས་པའི་བར་ནི

ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐ་མ་ཡང་ཡོད་པ་མ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་དང་

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཆོས་སྐོར།

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཅ

ཡུལ་གཞི་སྟོང་ཉིད། །མཚམས་བཞི་ཡུལ་ཁོར་ཡུག་ཏུ་བསྒྲིལ། ཡུལ་གཞི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས། ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཡུལ་ཁོར་ཡུག་ཏུ་བསྒྲིལ་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱི་བར་གྱིས་ཡུལ་ཁོར་ཡུག་ཏུ་བསྒྲིལ་བ་ཡིན་ནོ། ཡུལ་གཞི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།

ཀཀཀ

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།

Tibetan Buddhist Resource Center

ཅ་ཅོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁྱབ་བདག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། །དེ་ནས་ཁྱོད་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁྱབ་བདག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱི་བར་དུ་ཡང

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ། རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་སྤྱོད་པ་སྨོན་ལམ་གྱི་རྒྱལ་པོ། ། ཨོཾ་ཐམ་ཐུག་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་ཡི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིས་ཀྱང་། ཇི་ཙམ་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་། ཡེ་ཤེས་ཀྱ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ལས། །ཐུབ་པ་ཀུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་བ་ཡི་ནི། །ཕྱག་ཡང་ཐུབ་པ་ཀུན་ཏུ་ཡོད་པ་ཡ

ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡི་གེ་ཡིན་ནོ།། །།ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡི་གེ་ཡིན་ནོ།།

ཡང་དེ་ནས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལས། ཐུབ་པའི་རིགས་ཀྱི་བུ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཤེས་པར་བྱ་བ་དེ་ལྟར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཤེས་པར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཤེས་པར་བྱ་བ་དེ་ལྟར་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཤེས་པར་བྱའོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཤེས་པར་བྱ་བ་ཡོད་དེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཤེས་པར་བྱ་བ་ཡོད་ན་ཡང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཤེས་པར་བྱ་བ་ཡོད་ད

ཀ་ཀ་ཀ་

ཕྱིན་པ་ལས་ནས་ཕྱིན་པ་བཞིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་ཏེ་ཐ་མ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སྐྱེ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །

ॐ ॥ नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युमूर्तये । कालाग्निरुद्रायनीलकण्ठायपरमेश्वराय । सर्वभूतदमनायमनोन्मनायसर्वभूतसंरक्षणकराय । महाबलपराक्रमायमहाभूतायमहाभूतपतये । महाभूतसिद्धयोगिनीपतये । महागणपतये । महाकालभैरवायमहाकालकालायमहाकालपुरुषायमहाकालशक्तिहृदयायमहाकालदूतायमहाकालकापालिने । महाकालकालरात्र्यग्निजिह्वायकरालिने । महाकालभद्रसेनायमहाकालान्तकायमहाकालभैरवनृत्यप्रियायमहाकालभैरवाट्टहासायमहाकालवीरायमहाकालचण्डायमहाकालचण्डेश्वरायमहाकालभृङ्गिरिटिगणनाथायमहाकालसिद्धयोगेश्वरायमहाकालडामरायमहाकालकपालभृत्कटङ्कटायभीमायभीमपराक्रमायसर्वविद्याधिपतयेमहारौद्रायमहाभद्रायभद्रकालिसहितायचतुःषष्टियोगिनीकोटिपरिवृतायत्रैलोक्यडामराय । भूतवेतालमारीगणब्रह्मराक्षसगणसिद्धयोगिनीगणमातृगणगणेश्वरगणक्षेत्रपालगणदीक्षितगणसहस्राणामीशानायत्रैलोक्यवशङ्कराय । सर्वदेवदानवयक्षराक्षसभूतप्रेतपिशाचनागग्रहपीडानिवारणायसर्वज्वरविनाशनायसर्वव्याधिप्रशमनायसर्वविषसंस्थापनायसर्वापस्मारोन्मादकुष्ठकामलाक्षिरोगशिरोरोगनाशनायसर्वकर्मक्षयकराय । सर्वदुष्टनिवारणायसर्वशत्रुसंहारणायसर्वदुष्टमृगव्यालसर्पविषनिर्मूलनकराय । सर्वदुष्टजन्तुभयविनाशनायसर्वदुष्टोपद्रवशमनायसर्वदुष्टग्रहनिवारणायसर्वदुष्टभयनिवारणायसर्वदुष्टविघ्ननाशनायसर्वदुष्टभूतनिवारणायसर्वदुष्टप्रेतनिवारणायसर्वदुष्टपिशाचनिवारणायसर्वदुष्टराक्षसनिवारणायसर्वदुष्टब्रह्मराक्षसनिवारणायसर्वदुष्टशाकिनीनिवारणायसर्वदुष्टडाकिनीनिवारणायसर्वदुष्टकामिनीनिवारणायसर्वदुष्टदोषनिवारणायसर्वदुष्टग्रहनिवारणायसर्वदुष्टक्षेत्रपालनिवारणायसर्वदुष्टदीक्षितनिवारणायसर्वदुष्टगणनिवारणायसर्वदुष्टसिद्धयोगिनीनिवारणायसर्वदुष्टमातृनिवारणायसर्वदुष्टगणेश्वरनिवारणाय । सर्वदुष्टक्षेत्रपालनिवारणायसर्वदुष्टदीक्षितनिवारणायसर्वदुष्टगणनिवारणायसर्वदुष्टसिद्धयोगिनीनिवारणायसर्वदुष्टमातृनिवारणायसर्वदुष्टगणेश्वरनिवारणाय ।

ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་ཏེ། ཡང་ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་ཏེ། སྐུ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། སྐུ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་
གསུང་གི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། གསུང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་
གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གསུམ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་
པ་ཆེན་པོ་གསུམ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་
གསུམ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་
གསུམ་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གཅིག་ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་གསུམ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་

ꣳ ꣳ ꣳ

ཀཱཡཱ་ཝཱཙཱ་ཙིཏྟེན་ཝཱ། ཀཏཾ་ཀལྱཱཎཾ་ཀཏཾ་ཀུསལཾ་ཨུཔཙིནཱམི། སབྦཾ་ཏཾ་ཨནུམོདཱམི། ཡཾ་ཏཾ་ཨཱཡསྨཱ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས། །ཐམས་ཅད་

ཐུབ་པས་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་ལས། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཁྱད་པར་ཅི་ཞིག་ཡོད།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །ཕྱོགས་བཅུ་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པའི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །ཕྱོགས་བཅུ་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པའི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །
ཕྱོགས་བཅུ་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པའི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །རྣམ་པར་སྣང་མཛད་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །ཕྱོགས་བཅུ་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པའི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །
ཕྱོགས་བཅུ་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པའི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡུམ་ཆེན་མོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་སུ་ཡང་དག་པར་ཞུགས་ཏེ། རྒྱལ་བ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡུམ་ཆེན་མོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནས

ལུགས་ཀྱི་ཤེས་བྱའི་རྣམ་གཞག་མདོ། རྣམ་ཐ་དད་པའི་ཚུལ་ལས་བཅུ། ཚད་མའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་རྣམ་གཞག་ཏུ་ཡང་མཛད་དེ།། རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐོག་མ། རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐོག་མ། རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐོག་མ། རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐོག་མ། རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐོག་མ། རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཐོག་མ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐོག་མ་མེད་པའི་ཚུལ་ལོ།། དེ་ལྟར་ཐོག་མ་མེད་པ་ལས།། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས།། ཐོག་མ་ཤེས་པ་ཡིན་ནམ།། ཞེས་ཐོག་མ་ཤེས་པ་ཡིན་ནམ་ཞེས་བྱ་བ་ནས། ཐོག་མ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་དུ་ཐོག་མ་ཤེས་པ་ཡིན་ནམ་ཞེས་

ཀྱི་ཡི་ཡེ་ཡོ་ཡཱུ་ཡཾ་ཡཿ ཀྐ་ཀྑ་ཀྒ་ཀྒྷ་ཀྔ་ཀཱ་ཀི་ཀཱི་ཀུ་ཀཱུ་ཀྲྀ་ཀཱྲྀ་ཀླྀ་ཀཱླྀ་ཀེ་ཀཻ་ཀོ་ཀཽ་ཀཾ་ཀཿ ཁྐ་ཁྑ་ཁྒ་ཁྒྷ་ཁྔ་ཁཱ་ཁི་ཁཱི་ཁུ་ཁཱུ་ཁྲྀ་ཁཱྲྀ་ཁླྀ་ཁཱླྀ་ཁེ་ཁཻ་ཁོ་ཁཽ་ཁཾ་ཁཿ ◆ གྐ་གྑ་གྒ་གྒྷ་གྔ་གཱ་གི་གཱི་གུ་གཱུ་གྲྀ་གཱྲྀ་གླྀ་གཱླྀ་གེ་གཻ་གོ་གཽ་གཾ་གཿ ངྐ་ངྑ་ངྒ་ངྒྷ་ངྔ་ངཱ་ངི་ངཱི་ངུ་ངཱུ་ངྲྀ་ངཱྲྀ་ངླྀ་ངཱླྀ་ངེ་ངཻ་ངོ་ངཽ་ངཾ་ངཿ ཅྐ་ཅྑ་ཅྒ་ཅྒྷ་ཅྔ་ཅཱ་ཅི་ཅཱི་ཅུ་ཅཱུ་ཅྲྀ་ཅཱྲྀ་ཅླྀ་ཅཱླྀ་ཅེ་ཅཻ་ཅོ་ཅཽ་ཅཾ་ཅཿ ཆྐ་ཆྑ་ཆྒ་ཆྒྷ་ཆྔ་ཆཱ་ཆི་ཆཱི་ཆུ་ཆཱུ་ཆྲྀ་ཆཱྲྀ་ཆླྀ་ཆཱླྀ་ཆེ་ཆཻ་ཆོ་ཆཽ་ཆཾ་ཆཿ ཇྐ་ཇྑ་ཇྒ་ཇྒྷ་ཇྔ་ཇཱ་ཇི་ཇཱི་ཇུ་ཇཱུ་ཇྲྀ་ཇཱྲྀ་ཇླྀ་ཇཱླྀ་ཇེ་ཇཻ་ཇོ་ཇཽ་ཇཾ་ཇཿ ཉྐ་ཉྑ་ཉྒ་ཉྒྷ་ཉྔ་ཉཱ་ཉི་ཉཱི་ཉུ་ཉཱུ་ཉྲྀ་ཉཱྲྀ་ཉླྀ་ཉཱླྀ་ཉེ་ཉཻ་ཉོ་ཉཽ་ཉཾ་ཉཿ ཊྐ་ཊྑ་ཊྒ་ཊྒྷ་ཊྔ་ཊཱ་ཊི་ཊཱི་ཊུ་ཊཱུ་ཊྲྀ་ཊཱྲྀ་ཊླྀ་ཊཱླྀ་ཊེ་ཊཻ་ཊོ་ཊཽ་ཊཾ་ཊཿ ཋྐ་ཋྑ་ཋྒ་ཋྒྷ་ཋྔ་ཋཱ་ཋི་ཋཱི་ཋུ་ཋཱུ་ཋྲྀ་ཋཱྲྀ་ཋླྀ་ཋཱླྀ་ཋེ་ཋཻ་ཋོ་ཋཽ་ཋཾ་ཋཿ ཌྐ་ཌྑ་ཌྒ་ཌྒྷ་ཌྔ་ཌཱ་ཌི་ཌཱི་ཌུ་ཌཱུ་ཌྲྀ་ཌཱྲྀ་ཌླྀ་ཌཱླྀ་ཌེ་ཌཻ་ཌོ་ཌཽ་ཌཾ་ཌཿ ཎྐ་ཎྑ་ཎྒ་ཎྒྷ་ཎྔ་ཎཱ་ཎི་ཎཱི་ཎུ་ཎཱུ་ཎྲྀ་ཎཱྲྀ་ཎླྀ་ཎཱླྀ་ཎེ་ཎཻ་ཎོ་ཎཽ་ཎཾ་ཎཿ ཏྐ་ཏྑ་ཏྒ་ཏྒྷ་ཏྔ་ཏཱ་ཏི་ཏཱི་ཏུ་ཏཱུ་ཏྲྀ་ཏཱྲྀ་ཏླྀ་ཏཱླྀ་ཏེ་ཏཻ་ཏོ་ཏཽ་ཏཾ་ཏཿ ཐྐ་ཐྑ་ཐྒ་ཐྒྷ་ཐྔ་ཐཱ་ཐི་ཐཱི་ཐུ་ཐཱུ་ཐྲྀ་ཐཱྲྀ་ཐླྀ་ཐཱླྀ་ཐེ་ཐཻ་ཐོ་ཐཽ་ཐཾ་ཐཿ དྐ་དྑ་དྒ་དྒྷ་དྔ་དཱ་དི་དཱི་དུ་དཱུ་དྲྀ་དཱྲྀ་དླྀ་དཱླྀ་དེ་དཻ་དོ་དཽ་དཾ་དཿ ནྐ་ནྑ་ནྒ་ནྒྷ་ནྔ་ནཱ་ནི་ནཱི་ནུ་ནཱུ་ནྲྀ་ནཱྲྀ་ནླྀ་ནཱླྀ་ནེ་ནཻ་ནོ་ནཽ་ནཾ་ནཿ པྐ་པྑ་པྒ་པྒྷ་པྔ་པཱ་པི་པཱི་པུ་པཱུ་པྲྀ་པཱྲྀ་པླྀ་པཱླྀ་པེ་པཻ་པོ་པཽ་པཾ་པཿ ཕྐ་ཕྑ་ཕྒ་ཕྒྷ་ཕྔ་ཕཱ་ཕི་ཕཱི་ཕུ་ཕཱུ་ཕྲྀ་ཕཱྲྀ་ཕླྀ་ཕཱླྀ་ཕེ་ཕཻ་ཕོ་ཕཽ་ཕཾ་ཕཿ བྐ་བྑ་བྒ་བྒྷ་བྔ་བཱ་བི་བཱི་བུ་བཱུ་བྲྀ་བཱྲྀ་བླྀ་བཱླྀ་བེ་བཻ་བོ་བཽ་བཾ་བཿ མྐ་མྑ་མྒ་མྒྷ་མྔ་མཱ་མི་མཱི་མུ་མཱུ་མྲྀ་མཱྲྀ་མླྀ་མཱླྀ་མེ་མཻ་མོ་མཽ་མཾ་མཿ ཡྐ་ཡྑ་ཡྒ་ཡྒྷ་ཡྔ་ཡཱ་ཡི་ཡཱི་ཡུ་ཡཱུ་ཡྲྀ་ཡཱྲྀ་ཡླྀ་ཡཱླྀ་ཡེ་ཡཻ་ཡོ་ཡཽ་ཡཾ་ཡཿ ཀྐ་ཀྑ་ཀྒ་ཀྒྷ་ཀྔ་ཀཱ་ཀི་ཀཱི་ཀུ་ཀཱུ་ཀྲྀ་ཀཱྲྀ་ཀླྀ་ཀཱླྀ་ཀེ་ཀཻ་ཀོ་ཀཽ་ཀཾ་ཀཿ ཁྐ་ཁྑ་ཁྒ་ཁྒྷ་ཁྔ་ཁཱ་ཁི་ཁཱི་ཁུ་ཁཱུ་ཁྲྀ་ཁཱྲྀ་ཁླྀ་ཁཱླྀ་ཁེ་ཁཻ་ཁོ་ཁཽ་ཁཾ་ཁཿ ◆ གྐ་གྑ་གྒ་གྒྷ་གྔ་གཱ་གི་གཱི་གུ་གཱུ་གྲྀ་གཱྲྀ་གླྀ་གཱླྀ་གེ་གཻ་གོ་གཽ་གཾ་གཿ ངྐ་ངྑ་ངྒ་ངྒྷ་ངྔ་ངཱ་ངི་ངཱི་ངུ་ངཱུ་ངྲྀ་ངཱྲྀ་ངླྀ་ངཱླྀ་ངེ་ངཻ་ངོ་ངཽ་ངཾ་ངཿ ཅྐ་ཅྑ་ཅྒ་ཅྒྷ་ཅྔ་ཅཱ་ཅི་ཅཱི་ཅུ་ཅཱུ་ཅྲྀ་ཅཱྲྀ་ཅླྀ་ཅཱླྀ་ཅེ་ཅཻ་ཅོ་ཅཽ་ཅཾ་ཅཿ ཆྐ་ཆྑ་ཆྒ་ཆྒྷ་ཆྔ་ཆཱ་ཆི་ཆཱི་ཆུ་ཆཱུ་ཆྲྀ་ཆཱྲྀ་ཆླྀ་ཆཱླྀ་ཆེ་ཆཻ་ཆོ་ཆཽ་ཆཾ་ཆཿ ཇྐ་ཇྑ་ཇྒ་ཇྒྷ་ཇྔ་ཇཱ་ཇི་ཇཱི་ཇུ་ཇཱུ་ཇྲྀ་ཇཱྲྀ་ཇླྀ་ཇཱླྀ་ཇེ་ཇཻ་ཇོ་ཇཽ་ཇཾ་ཇཿ ཉྐ་ཉྑ་ཉྒ་ཉྒྷ་ཉྔ་ཉཱ་ཉི་ཉཱི་ཉུ་ཉཱུ་ཉྲྀ་ཉཱྲྀ་ཉླྀ་ཉཱླྀ་ཉེ་ཉཻ་ཉོ་ཉཽ་ཉཾ་ཉཿ ཊྐ་ཊྑ་ཊྒ་ཊྒྷ་ཊྔ་ཊཱ་ཊི་ཊཱི་ཊུ་ཊཱུ་ཊྲྀ་ཊཱྲྀ་ཊླྀ་ཊཱླྀ་ཊེ་ཊཻ་ཊོ་ཊཽ་ཊཾ་ཊཿ ཋྐ་ཋྑ་ཋྒ་ཋྒྷ་ཋྔ་ཋཱ་ཋི་ཋཱི་ཋུ་ཋཱུ་ཋྲྀ་ཋཱྲྀ་ཋླྀ་ཋཱླྀ་ཋེ་ཋཻ་ཋོ་ཋཽ་ཋཾ་ཋཿ ཌྐ་ཌྑ་ཌྒ་ཌྒྷ་ཌྔ་ཌཱ་ཌི་ཌཱི་ཌུ་ཌཱུ་ཌྲྀ་ཌཱྲྀ་ཌླྀ་ཌཱླྀ་ཌེ་ཌཻ་ཌོ་ཌཽ་ཌཾ་ཌཿ ཎྐ་ཎྑ་ཎྒ་ཎྒྷ་ཎྔ་ཎཱ་ཎི་ཎཱི་ཎུ་ཎཱུ་ཎྲྀ་ཎཱྲྀ་ཎླྀ་ཎཱླྀ་ཎེ་ཎཻ་ཎོ་ཎཽ་ཎཾ་ཎཿ ཏྐ་ཏྑ་ཏྒ་ཏྒྷ་ཏྔ་ཏཱ་ཏི་ཏཱི་ཏུ་ཏཱུ་ཏྲྀ་ཏཱྲྀ་ཏླྀ་ཏཱླྀ་ཏེ་ཏཻ་ཏོ་ཏཽ་ཏཾ་ཏཿ ཐྐ་ཐྑ་ཐྒ་ཐྒྷ་ཐྔ་ཐཱ་ཐི་ཐཱི་ཐུ་ཐཱུ་ཐྲྀ་ཐཱྲྀ་ཐླྀ་ཐཱླྀ་ཐེ་ཐཻ་ཐོ་ཐཽ་ཐཾ་ཐཿ དྐ་དྑ་དྒ་དྒྷ་དྔ་དཱ་དི་དཱི་དུ་དཱུ་དྲྀ་དཱྲྀ་དླྀ་དཱླྀ་དེ་དཻ་དོ་དཽ་དཾ་དཿ ནྐ་ནྑ་ནྒ་ནྒྷ་ནྔ་ནཱ་ནི་ནཱི་ནུ་ནཱུ་ནྲྀ་ནཱྲྀ་ནླྀ་ནཱླྀ་ནེ་ནཻ་ནོ་ནཽ་ནཾ་ནཿ པྐ་པྑ་པྒ་པྒྷ་པྔ་པཱ་པི་པཱི་པུ་པཱུ་པྲྀ་པཱྲྀ་པླྀ་པཱླྀ་པེ་པཻ་པོ་པཽ་པཾ་པཿ ཕྐ་ཕྑ་ཕྒ་ཕྒྷ་ཕྔ་ཕཱ་ཕི་ཕཱི་ཕུ་ཕཱུ་ཕྲྀ་ཕཱྲྀ་ཕླྀ་ཕཱླྀ་ཕེ་ཕཻ་ཕོ་ཕཽ་ཕཾ་ཕཿ བྐ་བྑ་བྒ་བྒྷ་བྔ་བཱ་བི་བཱི་བུ་བཱུ་བྲྀ་བཱྲྀ་བླྀ་བཱླྀ་བེ་བཻ་བོ་བཽ་བཾ་བཿ མྐ་མྑ་མྒ་མྒྷ་མྔ་མཱ་མི་མཱི་མུ་མཱུ་མྲྀ་མཱྲྀ་མླྀ་མཱླྀ་མེ་མཻ་མོ་མཽ་མཾ་མཿ ཡྐ་ཡྑ་ཡྒ་ཡྒྷ་ཡྔ་ཡཱ་ཡི་ཡཱི་ཡུ་ཡཱུ་ཡྲྀ་ཡཱྲྀ་ཡླྀ་ཡཱླྀ་ཡེ་ཡཻ་ཡོ་ཡཽ་ཡཾ་ཡཿ

ཀཱཡཱ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཏྨ་ཀ་ཨཱ་ཏྨ་ཀ་ཨཱ་ཏྨ་ཀ

ཀཱ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ

ཨཱཿ ཧེ་པུཎྱཨཱཏྨཱཡཱཏྟཱཡཱཿཏྭཏྟཱཿཏྭཏྟཱཿཏྭཏྟ

ཡིན་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡིད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡིད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡིད

ལེགས་ལས། འགྲམ་གྱི་ཁྱོག་ཏུ་ཤུག་པ་དང་། འབྲུ་ལས་ཡོངས་སུ་ཡེངས་ཤིང་། ཤིང་ཁུ་མེད་ཅིང་ཡལ་ག་ཐུན་མོང་དུ་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་ཏེ། ཁ་ཅིག་ན་རེ་ཤིང་ཁུ་ཡོད་ཅིང་ཡལ་ག་ཐུན་མོང་དུ་མེད་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་ཏེ། ཁ་ཅིག་ན་རེ་ཤིང་ཁུ་ཡོད་ཅིང་ཡལ་ག་ཐུན་མོང་དུ་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་ཏེ། ཁ་ཅིག་ན་རེ་ཤིང་ཁུ་མེ

ཤིན་ལས་མཁའ་འགྲོ་མཉེས་པར་བྱའོ།། དེ་ནས་ཁྲག་ཐལ་མཛད་པ་ལ་སོགས་པ་ཡང་ཐུན་ཚོད་ཀྱིས་ཐུན་ཚོད་ཀྱི

ཀུན་སྤྱོད་ཐུབ་པའི་དབང་པོ། །ཤཱཀྱ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཞབས། །ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ

ཅིག ། དཔའ་བོ་ཀཱ་རེ་ཀ་ཏེ་ཀཱ་ཡེ། རྒྱལ་པོ་ཅིག་ལགས། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ། རྒྱལ་པོ་དཔའ་བོ་ཀཱ་རེ་ཀ་ཏེ་ཀཱ་ཡེ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཐོག་ཏུ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དུ་སོང་ངོ་། ། དེ་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཚེ་དཔག་མེད

ཀཱཾ ཁཾ ཀཱཾ ཁཾ ཀཱཾ ཁཾ

ཤེས་ཀྱི་རྒྱུ་ཀུན་ཞིང་གཅོད་པ་ཉིད། ཐོག་ཏུ་སྐྱེ་བོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཡུལ་པོ་ཚེ། འཕྲུལ་མཛོད་ཤུ་མཁའ་ལ་ཡོད་གཏུམ་པོ། གཤིན་རྗེའི་ཡུལ་ལས་འཕོས་ཏེ་ཐལ་བ་ལ། གཅིག་པོ་རྩ་བའི་ཤིང་རྟ་ལྟར་ཕྱུང་ཞིང་། །གཅིག་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི། །ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མ་ཡིས། ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི། །ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལ་ཐུགས་ཀྱི་ཉི་མ་ཡིས། །ཇི་ཙམ་ཡུན་རིང་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆར་པ་ཆེ། ཤ་ཁ་ཤིང་ཁ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཡུལ་པོ་ཚེ། འཕྲུལ་མཛོད་ཤུ་མཁའ་ལ་ཡོད་གཏུམ་པོ། གཤིན་རྗེའི་ཡུལ་ལས་འཕོས་ཏེ་ཐལ་བ་ལ། གཅིག་པོ་རྩ་བའི་ཤིང་རྟ་ལྟར་ཕྱུང་ཞིང་། །གཅིག

ཅ། ཅ། ཨོཾ་སྭཱ་ཧཱ་ཏཏྭ་ཡོ་ག་ཨ་ཏྨ་ཀོ་ཧཾ། ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏྟཱ་ནཱཾ་ཤོ་ད་ན་ཀ་ར་ཎཾ་པ་ར་མཾ། ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏྟཱ་ནཱཾ་ཤོ་ད་ན་ཀ་ར་ཎཾ་པ་ར་མཾ། ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏྟཱ་ནཱཾ་ཤོ་ད་ན་ཀ་ར་ཎཾ་པ་ར་མཾ། ཨ་ཧཾ་ཀཱ་ར་ཝཛྲ་ཡོ་ག་ཏཏྭ་ཨཱ་ཏྨ་ཀོ་ཧཾ། ཨ་ཧཾ་ཀཱ་ར་ཝཛྲ་ཡོ་ག་ཏཏྭ་ཨཱ་ཏྨ་ཀོ་ཧཾ། ཨ་ཧཾ་ཀཱ་ར་ཝཛྲ་ཡོ་ག་ཏཏྭ་ཨཱ་ཏྨ་ཀོ་ཧཾ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཛྲ་སཏྭ་ས་མ་ཡ་ཧཱུྃ་ཕཊ

ཀཱཡཻཤྩིཏཱཡཻཤྩིཏཱཡཻཤྩིཏ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མར་ཡང་། ཡོན་ཏན་ཀུན་ལྡན་ཞེས་བྱ་བའི་ཞིང་ཁམས་ཡོད་དེ། དེ་ཡང་ཡོན་ཏན་ཀུན་ལྡན་ཞེས་བྱ་བའ

ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོག་མེད་དུས་ནས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངང་ལས་མི་གཡོ་བ་ཞིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོག་མེད་དུས་ནས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངང་ལས་མི་གཡོ་བ་ཞིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོག་མེད་དུས་ནས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངང་ལས་མི་གཡོ་བ་ཞིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོག་མེད་དུས་ནས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངང་ལས་མི་གཡོ་བ་ཞིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོག་མེད་དུས་ནས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངང་ལས་མི་གཡོ་བ་ཞིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོག་མེད་དུས་ནས་ཀྱང་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ངང་ལས་མི་གཡོ་བ་ཞིང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི

ཐོག་ཏུ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཁ་དོག་ཅན། ཡི་གེ་ཧཱུྃ་ཡིག་ཅན། རྡོ་རྗེ་རྩེ་གསུམ་ཅན། ཤ་ཁྲ་ལྟེ་བ་ཅན། ཤ་ཁྲ་ལྟེ་བ་ནས་ཤིན་ཏུ་ཞིང་། མཐིལ་ཏུ་རྒྱས་ཤིང་། རྩ་བ་ཤིན་ཏུ་ཐིབ་ཅིང་། རྩེ་ལ་ཡུག་ཏུ་ཕྱོགས་ཤིང་། ཤ་ཁྲ་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལི་ཀ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ལས་སོ། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལས་སོ། །ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཁྱུ་མཆོག་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རྟ་མཆོག་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་གླང་པོ་ཆེ་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་གཏེར་ཆེན་པོ་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆུ་བོ་ཆེན་པོ་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཉི་མ་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཟླ་བ་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རི་རབ་ལས་སོ། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཤིང་རྟ་ཆེན་པོ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་དམར་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དེ། དེ་ཡང་ཡེ་ཤེས་ཀྱ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཏེ། །ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཡོན་ཏན་ཏེ། །ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཡོན་ཏན་ཏེ། །ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཏེ། །

ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ཡང་ཡང་ཞེས་པ་ཡིན་ཏེ།

ཤུགས། གཞན་གྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡིད་ཤེས་ཀྱང་ཡོད་པ་ཡིན་ཏེ། ཆོས་གང་དག་ཏུ་ཡང་དག་པར་ཞུགས་ཤིང་ཡང་དག་པར་ཞུགས་པ་ཡིན་ནོ། །

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་བར་དུ་ཡང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཚད་ཙམ་ཞིག་ཏ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ལས། ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡང་དག་པར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་རྒྱལ་ལས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ལས། ། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡང་དག་པར་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་རྒྱལ་ལས་

Tibetan Buddhist Resource Center

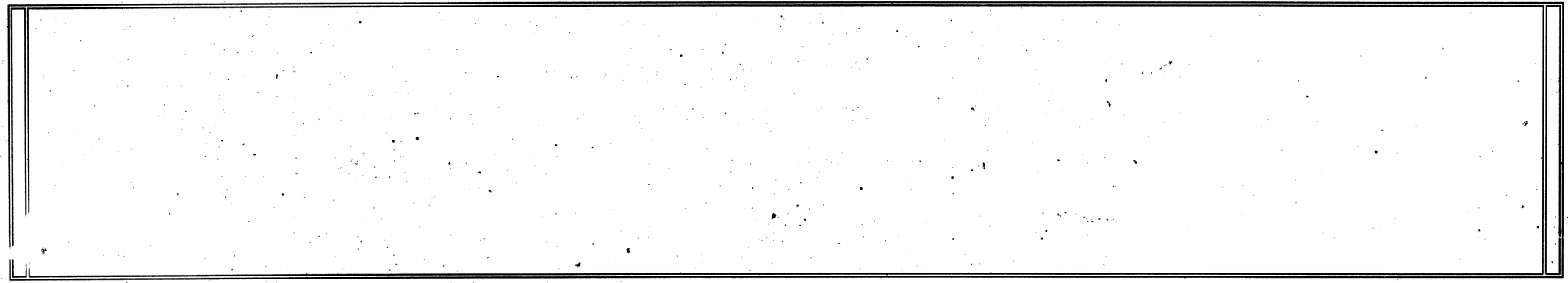

ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀུན་དགའ་བོ་ལ་བཀའ་སྩལ་པ་ཀུན་དགའ་བོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་ཐོས་པ་བཞིན་དུ་ཆོས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་སྙིང་

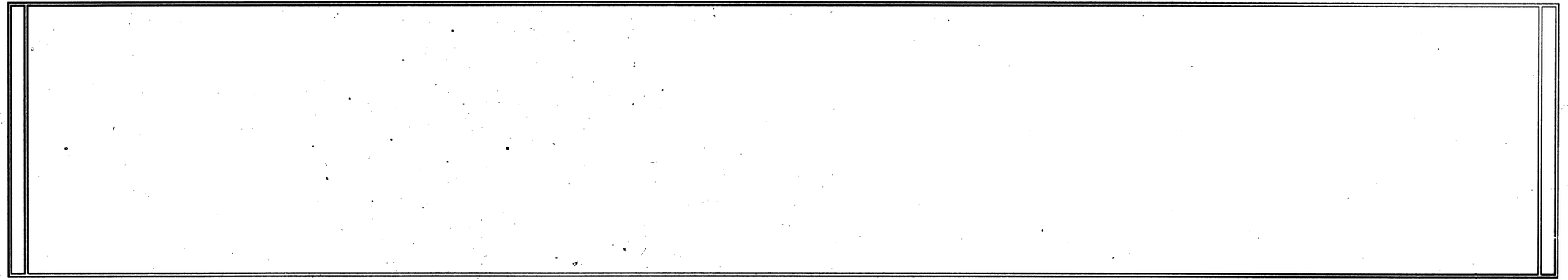

ཀཱཏྱཱཡནཱཡ སྭཱཧཱ། ཨོཾ་ཝཛྲཱ་ཡ་ཝཻ་ཤྲ་ཝ་ཎཱ་ཡ། ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཨོཾ་ཨ་ཏྱ་ཀྲ་ཏ་ཡ་ཨ་ཀྲ་ཏ་ཡ་ཨ་ཀྲ་ཏ་ཡ་ཨ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ

ཅེས་སྨྲས་པ། ། གཉིས་པ་སྐུ་མཆེད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཐུབ་པའི་ཚེ་ཞེས་སོགས། སྐུ་བཟང་ཐུབ་པའི་ཚེ་ཞེས་བྱ་བ་ནས། ཐུབ་པའི་ཚེ་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱི་བར་ལ། ཐུབ་པའི་ཚེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུབ་པ་ཐོབ་པའི་ཚེ་ཞེས་བྱ་བའོ། །ཐུབ་པ་ཐོབ་པའི་ཚེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུབ་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ། ཐུབ་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུབ་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ཏེ་ཞེས་བྱ་བའོ། །

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ།།

ཤུགས་ཀྱིས་འཕེན་པའོ། ◆ དཔྱིད་ཟླ་གསུམ་གཤེགས་པའི་ཚེ་ཁྱིམ་ནས་ཕྱིར་འཕེན་པའོ།། ◆ །།འཕྲུལ་དགའི་མཆོག་གསུངས་པ་ལས་ཀྱི་རྣམ་པ།། ཡིམ་ཤེའི་ཏིང་འཛིན་གནས་ལས་ལ
ལས། ཡིམ་ཤུལ་ལས་གཞི་ཤིན་ཏུ་ཞི་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཐུབ་པ་ཤུགས་ཀྱིས་ཐུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།། ཀུན་ཏུ་ཡང་འཕྲུལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚེ་ཞེས་
བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ལས་ཀྱང་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་སོ།།། ཐུབ་པའི་སྐུ་ལས་འོད་ཟེར་ཐོག་ཏུ་ཕྱུང་ངོ།།། ཤིན་ཏུ་ཞི་བ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།།
ཐུབ་པ་ཤུགས་ཀྱིས་ཐུབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།། ཐུབ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།། ཐུབ་པའི་ཚེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ།
ཐུབ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ། ཐུབ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ། ཐུབ་པའི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ།།

ཀུ་ཤ་ཀ་ཀ་ཀ

ཏནྲ་ཝྱཱ་ཀ་ར་ཎ་ཏཱ་ལི་ཀཱ་ནཱ་མ་ཏྲི་ཏཱི་ཡོ་ཏྟ་ར་

ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཡི། ། ཞི་བ་ཐོབ་པ་ཡི་ཕྱིར་ཏེ། ། ཁྱོད་ཀྱི་ཞབས་ལ་ཕྱག་བྱེད་དོ

ཀཀཀ ཀ ། ཐུབ་པོ་མཁའ་ལྟར་ཁྱབ་བྱའོ། ། ཁམས་གསུམ་ཀུན་ཏུ་ཁྱབ་བྱའོ། ། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་བྱའོ། ། རྒྱལ་བ་ཐུབ་པོ་
མཁའ་ལྟར་ཁྱབ་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་མཁའ་ལྟར་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་
པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་
པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་
ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་
ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་
ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་
གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་
པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་ཁམས་གསུམ་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་པོ་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་ཁྱབ་པར་བྱའོ། ། ཐུབ་

ཀཱ། ཨཱཿ ཨཱཿ ཨཱཿ

॥ ཨཱཡུཥྨཱན་ཨཱཏྨཱ་བལཱ་ཡཱ་ཏུ་ཏྭཱ་ཤཱ་ཡ་ཏུ་ཏྭཱ་ཤཱ་ཡ་ཏུ་ཏྭཱ་ཤཱ་ཡ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ། ། ཞེས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡ

॥ ५६ ॥ मोक्षाभिलाषुकजनैरवधेयमेतत् । क्षुद्रार्थलोलुपजनैरपि नोपपन्नम् ।
तस्मात्सुधीभिरिह सारमसारमुज्झ्य । सारं गृहाण सुखदं सुखमाप्नुहीदम् ॥
शुभाशुभैर्विधिवशादुपपद्यमानं । सर्वं समं सुखमिदं सुखमाप्नुहीदम् ॥
सारं गृहाण सुखदं सुखमाप्नुहीदम् । सारमसारमिह सारमुज्झ्य ॥
सारं गृहाण सुखदं सुखमाप्नुहीदम् । सारमसारमिह सारमुज्झ्य ॥
सारं गृहाण सुखदं सुखमाप्नुहीदम् । सारमसारमिह सारमुज्झ्य ॥

। ॐ नमो भगवते वैरोचनाय। यस्य प्रकृत्या गतयो ह्यमूढा। ज्ञानागुणाश्चरणं वैशारद्यम्। दया।
न्यायानुरूपं प्रतिपत्तिरार्या। कीर्तिर्भवान्तं प्रतिगा यशश्च। तस्मै नमो भूतहितानुकम्पिने। वज्रोष्णीषं हृदयं वैरोचनाय।
नमोऽस्तु ते सर्वभयान्तकृद्भ्यः॥ व्याधिप्रशान्तिं लभते व्याधितः॥ क्षेमाय क्षेमङ्करवाय नमः॥ मुक्तायमुक्तायमोक्षाय।
नतेभ्यो भयेभ्यो रक्षां कुरुष्व॥ वज्रोष्णीषं हृदयं वैरोचनाय॥ ॐ वीरेभ्यो वीरकरेभ्यो वीरवरेभ्यः। नरकादीन्द्रियनाशेभ्यः।
भूतादिभ्यो रक्षां कुरुष्व॥ यदा मुक्तिमवाप्नोति बुद्धत्वं। यदा मुक्तिमवाप्नोति। तथागतो भूतानुकम्पिनो।
पद्मेन। ज्ञानमुद्रायै। स्वाहा॥ क्षमाय क्षमङ्कराय नमः॥ वज्रोष्णीषं हृदयं वैरोचनाय॥

ཀུན་ཏུ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཏེ། ཕྱོགས་བཅུའི་ཞིང་ཁམས་ཀུན་ན་ཡང་། ཇི་སྙེད་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ནི་ཕོ་བྲང་ཆེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོས་ཡོངས་བསྐྱངས་ཤིང་། ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཆོས་ཀྱི་ཉི། ཟླ་བ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡི། ཞལ་ཡང་ཤིན་ཏུ་རྣམ་དག་ཅིང་། ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་ཡོངས་སུ་རྫོགས། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ

ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། མཐོང་ཡིད་ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། ཤེས་པ་ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། ཚོར་བ་ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། འདུ་
ཤེས་ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། སེམས་ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། ཡིད་ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། དགའ་བ་ཀྱི་ཡུན་ནས་ཤེས་པའི་བར་དུ། ཐུན་
པ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་མྱུར་དུ་འགག་པ། མྱ་ངན་འདས་པའི་ཆོས་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ། ཆོས་པའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱང་ཐུན་པ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་མྱུར་དུ་འགག་
པ་ཡིན་ཏེ། ཆུ་ཤིང་ལྟ་བུའོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐུན་པ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐུན་པ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་
ཐུན་པ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐུན་པ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐུན་པ་ཙམ་ཞིག་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་

ಸಂಸಾರಸಾಗರವನ್ನು ದಾಟಿಸುವ ಸಾಧನವಾಗಿದೆ. ಅಂತಹ ಸಾಧನವನ್ನು ಪಡೆದು ಅದರಿಂದ ಸಂಸಾರಸಾಗರವನ್ನು ದಾಟಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸದೆ ಇರುವವನು ಆತ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನಂತೆ ಎಂದು ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಆತ್ಮಹತ್ಯೆ ಮಾಡಿಕೊಳ್ಳುವವನು ಹೇಗೆ ಪಾಪಿಯೋ ಹಾಗೆ ಸಂಸಾರಸಾಗರವನ್ನು ದಾಟಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸದೆ ಇರುವವನೂ ಪಾಪಿಯೆ

ཐམས་ཅུ་ཡང་ཤེས་པའོ། ། དེ་ལ་ཤེས་པ་ནི་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཏོ། ། ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཅི་ཞེ་ན། ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོན་ཏན

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟར་ན་ཡང་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་དག་པ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཁྱོད་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར

ཞལ་གཅིག་ཕྱག་གཉིས་པའི་ཞལ་ལྟ་བུའོ། ཤིལ་གྱི་རྡོ་ལྟ་བུ་ཐོག་མེད་པ། ཀཱ་ལེ་མ་ལས་ལྷུང་བ་ཡིས། རྒྱ་ཆེ་མཁའ་ཁྱིམ་རྒྱུན་མཉམ་པོའོ། །
མཐའ་ཡས་ཁྱོད་མཐའ་མཉམ་ཞིང་མཁའ་ལས་ཀྱང་། རབ་ཏུ་ཟབ་ཅིང་རྒྱ་ཆེ་ཐུགས་རྗེ་ཡིས། ཐུགས་ཀྱི་ཁྱོད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཁྱིམ་ཡིས། ཐུགས་ཀྱི་ཁྱོད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཁྱིམ་ཡིས།
ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར་ཏེ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར།
ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པའི་ཕྱིར།

ଏହାପରେ ଦୁଇଜଣ ଦୁଇଜଣ କରି ଚାରିଜଣ ଚାରିଜଣ କରି ଆଠଜଣ ଆଠଜଣ କରି ଷୋଳଜଣ ଷୋଳଜଣ କରି ବତିଶଜଣ ବତିଶଜଣ କରି ଚଉଷଠିଜଣ ଚଉଷଠିଜଣ କରି ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ ଜଣ କରି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରଜଣ କରି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଏକଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଦୁଇଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ କରି ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ ଚାରିଲକ୍ଷ ଏକସହସ୍ର ଚବିଶକୋଟି ଚାରିକୋଟି ଅଠାବିଂଶତି ଲକ୍ଷ ଦୁଇଶତ ଛପ୍ପନ୍ନ କୋଟି ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀଜଣ କରି ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ ଅଷ୍ଟଲକ୍ଷ ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶକୋଟି ଆଠକୋଟି ଛପ୍ପନ୍ନ ଲକ୍ଷ ପାଞ୍ଚଶତ ବାରକୋଟି ବତିଶସହସ୍ର ଅଠାସତ୍ତରଜଣ କରି ଷୋଳଲକ୍ଷ ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେକୋଟି ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ ଷୋଳକୋଟି ଏକସହସ୍ର ଚବିଶଜଣ କରି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶକୋଟି ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ ଚଉଷଠିସହସ୍ର ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି ଜଣ କରି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଷୋଳସହସ୍ର ଚଉରାଶୀକୋଟି ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ ବତିଶକୋଟି ଦୁଇସହସ୍ର ଅଠଚାଳିଶଜଣ କରି ଏକକୋଟି ବତିଶଲକ୍ଷ ଅଠାସତ୍ତରକୋଟି ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ ଚଉଷଠିକୋଟି ଚାରିସହସ୍ର ଛୟାନବେଜଣ କରି ଦୁଇକୋଟି ଚଉଷଠିଲକ୍ଷ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ୍ର ବୟାଳିଶଜଣ ଏକଶତ ଅଠାବିଂଶତି କୋଟି ଅଷ୍ଟସହସ

ཀྱི་ཁྱུ་ཆུ་ཤིང་རྟ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱི་ཁྱུ་ཆུ་ཤིང་རྟ་ཞེས་བྱ་བ་བར་གྱི་ཚིག་ཀྱང་ཡང་དག་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་ཟེར་ཏེ་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡང་ཡང་དག་པ་ཡིན་ནོ་

ཀྱེ་ལེ་ཀྱེ་ཀུ་ཀི་ཀྱུ་ཀཱ་ཀེ་ཅ་ཀཱ། ཀཱ་ཀི་ཀཱ་ཀུ་ཀེ་ཀཻ་ཀོ་ཀཽ་ཀཾ་ཀཿ། ཀཾ་ཀཱ་ཀི་ཀཱ་ཀུ་ཀེ་ཀཻ་ཀོ་ཀཽ་ཀཾ་ཀཿ། ཀྲཱི་ཀྲཱེ་ཀྲཱུ་ཀྲཻ་ཀྲཱི་ཀྲཱེ་ཀྲཱུ་ཀྲཻ། ཀཀཀ

ॐ ॥ ॥ ॥

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཡུལ་ན་ཡོད་པ་ཡི་ཚེ་དཔག་མེད་ཀྱ

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཝཛྲ་ཛཿཧཱུྃ་བཾ་ཧོཿ། ཀུ་ཀུ་ཏཱ་ནཱི་ཏཱ་ཡཱ་ཡཱ་ཧཱ། ཤིཝཱ་ཨཱ་ཏྭ་ཏཱ་ཡཱ་ཡཱ་ཧཱ། ཤཱཀྱ་ཨཱ་ཏྭ་ཏཱ་ཡཱ་ཡཱ་ཧཱ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཡུལ་ཏེ་ཡུལ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡོད་དོ། །དེ་ཡང

ཅན་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡིན་ཏེ། ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི

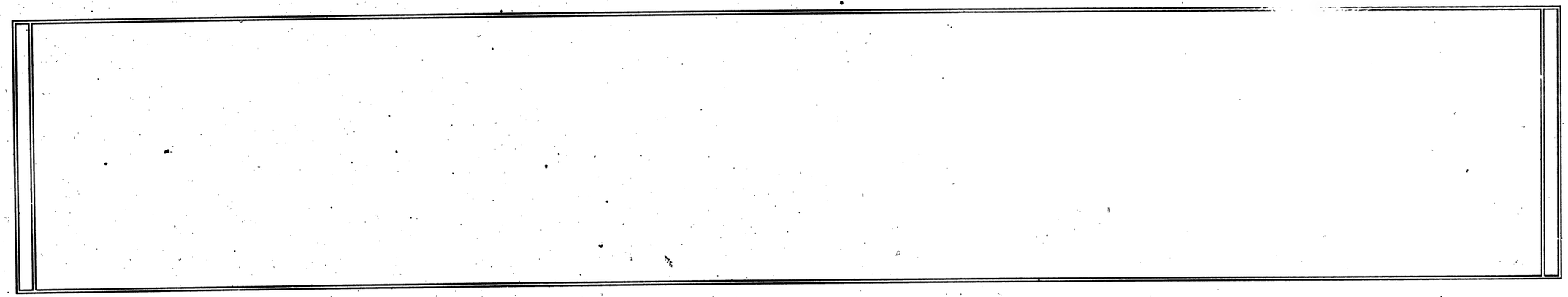

།ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་། །ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཡང་ཤར་ན

ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ལས། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཇི་སྐད་དུ་གསུངས་པའི་ཚུལ་གྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ།། ◆ །།དེ་ནས་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ལ་བཀའ་སྩལ་པ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ།། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། ཐུགས་རྗེ་བཟང་པོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་ཤིང་ཐོས་པ་ཡང་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཞིག་ཏུ་གྱུར་ཏོ།

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཐུགས་ཀར་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཡི་གེ་ཐུགས་ཀ་ནས་ཕྱིར་ཕྱུང་ཞིང

ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ཐེངས་ཐེངས་ཞེས་པའ

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱ

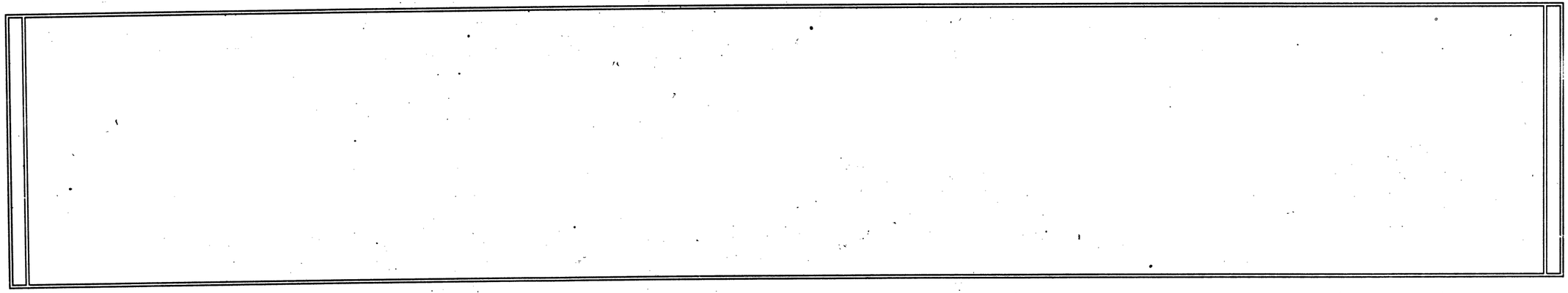

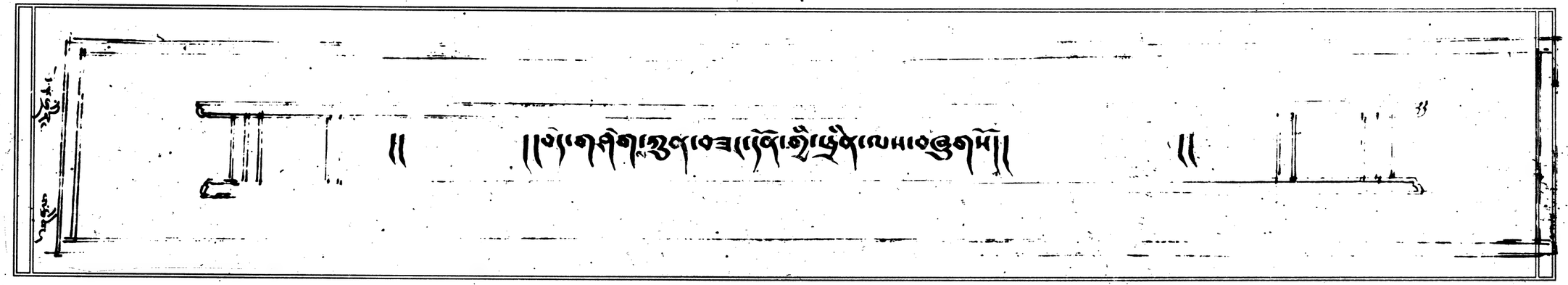

ཨོཾ།། ཀཱ ཀཱ ཀཱ

ཀྱི།། ཅ། ।।ཤེས་ལྡན་ཐོག་མེད་ལུང་ཤེས།། ཡེ་ཤེས་ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཚོགས་ལྔ་ཡི་ཐ་
སྙད་ཀྱི་རྟེན་གྱུར་པའོ།། ཡིད་ལྟ་བུ་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ། ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡིད་ཀྱི་ཐ་སྙད་
ཀྱི་རྟེན་གྱུར་པའོ།། ཡིད་ལྟ་བུ་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ། ངར་འཛིན་ཀུན་ཏུ་སྐྱེ་བ་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ། ཤཱཀྱའི་
ཐུབ་པ་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡིད་ཀྱི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྟེན་གྱུར་པའོ།། ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཡིད་ཀྱི་
ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡིད་ཀྱི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྟེན་གྱུར་པའོ།། ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་
ནི་ཡིད་ཀྱི་ཐ་སྙད་ཀྱི་རྟེན་གྱུར་པའོ།། ཤེས་ལྡན་ཐོག་མེད་ལུང་ཤེས་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་

ཨཱཏྨཱ་ཡཱ་ཏི་ཡཱ་ཏི་ཡཱ་ཏི

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡོན་ཏན་ཡིན་ཏེ།

ཨཱཿཨཱཿཧཱུྃཧཱུྃ། ཨཱཿཨཱཿཧཱུྃཧཱུྃ། ཨཱཿཨཱཿཧཱུྃཧཱུྃ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ན་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་

ཐུབ་མཆོག་ཏེ་སྐྱེས་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཏོ། །དེ་ཡི་སྐུ་ཡང་ཁམས་གསུམ་ལས་འདས་ཏེ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་ཚེ་ཡང་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ། །ཡང་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་བསྟན་པ་ལ། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་

ཀུན་ནས་ཉོན་མོངས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པ་ཉིད་དུ་ཞི་བ་ཡིན་ནོ། །ཇི་ལྟར་ཞེ་ན།

ಕಾಲಕ್ಕೆ ಸಲ್ಲಿಸಿದ ಸೇವೆಯಿಂದ ಸಂತುಷ್ಟನಾಗಿ ಅವನಿಗೆ ಕೊಟ್ಟ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಅವನ ಮಕ್ಕಳು ಮೊಮ್ಮಕ್ಕಳು ಅನುಭವಿಸಿಕೊಂಡು ಬರಲಿ. ಅವನ ಸಂತತಿಯವರಿಗೆ ಅವನ ಸೇವೆಯನ್ನು ಮೆಚ್ಚಿ ಕೊಟ್ಟ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಅವರ

ॐ नमो भगवते वज्रसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय महाकरुणिकाय महाकरुणिकाय महाकर

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡི་བར་དུ་ཡང་ངོ་། །ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡི་བར་དུ་ཡང་ངོ་། ◆ །།ཨོཾ་སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་ཨཱ་ཏྨ་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི

ཤིན་ཏུ་ཁྲོ་བོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ཉི་ཤུ་རྩ་ལྔ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ཉི་ཤུ་རྩ་ལྔ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ཉི་ཤུ་རྩ་དྲུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ཉི་ཤུ་རྩ་དྲུག་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བདུན་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ཉི་ཤུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ཉི་ཤུ་རྩ་དགུ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ཉི་ཤུ་རྩ་དགུ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གཉིས་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་གསུམ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་བཞི་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་བཞི་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་ལྔ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་ལྔ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་དྲུག་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་བདུན་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་བརྒྱད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། སུམ་ཅུ་རྩ་དགུ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་སུམ་ཅུ་རྩ་དགུ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་གཅིག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་གཉིས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་གཉིས་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་གསུམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་གསུམ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་བཞི་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་བཞི་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་ལྔ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་ལྔ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་དྲུག་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་བདུན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་བདུན་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། བཞི་བཅུ་རྩ་དགུ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་བཞི་བཅུ་རྩ་དགུ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཅིག་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་གཉིས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གཉིས་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་གསུམ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་གསུམ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་བཞི་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་བཞི་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་ལྔ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་ལྔ་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་དྲུག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་དྲུག་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་བདུན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་བདུན་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་བརྒྱད་པའོ།།

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ལས་ཀྱང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། ལྔ་བཅུ་རྩ་དགུ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཏེ་ལྔ་བཅུ་རྩ་དགུ་པའོ།།

ॐ ॥ ॥ ॥

ཨཱཀཱཤགཏྱཱཡཾ། ◆ ཨཱཀཱཤགཏྱཱཡཾ། ཨཱཀཱཤགཏྱཱཡཾ། ཨཱཀཱཤགཏྱཱཡཾ།

ཀྱི་ཡི་ཡེ་ཡོ་ཡཱུ་ཡཾ་ཡཿ ཀ་ཁ་ག་ང་ཅ་ཆ་ཇ་ཉ་ཊ་ཋ་ཌ་ཎ་ཏ་ཐ་ད་ན་པ་ཕ་བ་མ་ཙ་ཚ་ཛ་ཝ་ཞ་ཟ་འ་ཤ་ཥ་ས་ཧ་ཀྵ་ཨ་ཀཱ་ཁཱ་གཱ་ངཱ་ཅཱ་ཆཱ་ཇཱ་ཉཱ་ཊཱ་ཋཱ་ཌཱ་ཎཱ་ཏཱ་ཐཱ་དཱ་ནཱ་པཱ་ཕཱ་བཱ་མཱ་ཙཱ་ཚཱ་ཛཱ་ཝཱ་ཞཱ་ཟཱ་འཱ་ཤཱ་ཥཱ་སཱ་ཧཱ་ཀྵཱ་ཨི་ཀཱི་ཁཱི་གཱི་ངཱི་ཅཱི་ཆཱི་ཇཱི་ཉཱི་ཊཱི་ཋཱི་ཌཱི་ཎཱི་ཏཱི་ཐཱི་དཱི་ནཱི་པཱི་ཕཱི་བཱི་མཱི་ཙཱི་ཚཱི་ཛཱི་ཝཱི་ཞཱི་ཟཱི་འཱི་ཤཱི་ཥཱི་སཱི་ཧཱི་ཀྵཱི་ཨུ་ཀཱུ་ཁཱུ་གཱུ་ངཱུ་ཅཱུ་ཆཱུ་ཇཱུ་ཉཱུ་ཊཱུ་ཋཱུ་ཌཱུ་ཎཱུ་ཏཱུ་ཐཱུ་དཱུ་ནཱུ་པཱུ་ཕཱུ་བཱུ་མཱུ་ཙཱུ་ཚཱུ་ཛཱུ་ཝཱུ་ཞཱུ་ཟཱུ་འཱུ་ཤཱུ་ཥཱུ་སཱུ་ཧཱུ་ཀྵཱུ་ཨྲི་ཀཱྲི་ཁཱྲི་གཱྲི་ངཱྲི་ཅཱྲི་ཆཱྲི་ཇཱྲི་ཉཱྲི་ཊཱྲི་ཋཱྲི་ཌཱྲི་ཎཱྲི་ཏཱྲི་ཐཱྲི་དཱྲི་ནཱྲི་པཱྲི་ཕཱྲི་བཱྲི་མཱྲི་ཙཱྲི་ཚཱྲི་ཛཱྲི་ཝཱྲི་ཞཱྲི་ཟཱྲི་འཱྲི་ཤཱྲི་ཥཱྲི་སཱྲི་ཧཱྲི་ཀྵཱྲི་ལྲྀ་ཀཱཱྲྀ་ཁཱཱྲྀ་གཱཱྲྀ་ངཱཱྲྀ་ཅཱཱྲྀ་ཆཱཱྲྀ་ཇཱཱྲྀ་ཉཱཱྲྀ་ཊཱཱྲྀ་ཋཱཱྲྀ་ཌཱཱྲྀ་ཎཱཱྲྀ་ཏཱཱྲྀ་ཐཱཱྲྀ་དཱཱྲྀ་ནཱཱྲྀ་པཱཱྲྀ་ཕཱཱྲྀ་བཱཱྲྀ་མཱཱྲྀ་ཙཱཱྲྀ་ཚཱཱྲྀ་ཛཱཱྲྀ་ཝཱཱྲྀ་ཞཱཱྲྀ་ཟཱཱྲྀ་འཱཱྲྀ་ཤཱཱྲྀ་ཥཱཱྲྀ་སཱཱྲྀ་ཧཱཱྲྀ་ཀྵཱཱྲྀ་ལཱྲྀ་ཀླྀ་ཁླྀ་གླྀ་ངླྀ་ཅླྀ་ཆླྀ་ཇླྀ་ཉླྀ་ཊླྀ་ཋླྀ་ཌླྀ་ཎླྀ་ཏླྀ་ཐླྀ་དླྀ་ནླྀ་པླྀ་ཕླྀ་བླྀ་མླྀ་ཙླྀ་ཚླྀ་ཛླྀ་ཝླྀ་ཞླྀ་ཟླྀ་འླྀ་ཤླྀ་ཥླྀ་སླྀ་ཧླྀ་ཀྵླྀ་ཨླཱྀ་ཀླཱྀ་ཁླཱྀ་གླཱྀ་ངླཱྀ་ཅླཱྀ་ཆླཱྀ་ཇླཱྀ་ཉླཱྀ་ཊླཱྀ་ཋླཱྀ་ཌླཱྀ་ཎླཱྀ་ཏླཱྀ་ཐླཱྀ་དླཱྀ་ནླཱྀ་པླཱྀ་ཕླཱྀ་བླཱྀ་མླཱྀ་ཙླཱྀ་ཚླཱྀ་ཛླཱྀ་ཝླཱྀ་ཞླཱྀ་ཟླཱྀ་འླཱྀ་ཤླཱྀ་ཥླཱྀ་སླཱྀ་ཧླཱྀ་ཀྵླཱྀ་ཨེ་ཀེ་ཁེ་གེ་ངེ་ཅེ་ཆེ་ཇེ་ཉེ་ཊེ་ཋེ་ཌེ་ཎེ་ཏེ་ཐེ་དེ་ནེ་པེ་ཕེ་བེ་མེ་ཙེ་ཚེ་ཛེ་ཝེ་ཞེ་ཟེ་འེ་ཤེ་ཥེ་སེ་ཧེ་ཀྵེ་ཨཻ་ཀཻ་ཁཻ་གཻ་ངཻ་ཅཻ་ཆཻ་ཇཻ་ཉཻ་ཊཻ་ཋཻ་ཌཻ་ཎཻ་ཏཻ་ཐཻ་དཻ་ནཻ་པཻ་ཕཻ་བཻ་མཻ་ཙཻ་ཚཻ་ཛཻ་ཝཻ་ཞཻ་ཟཻ་འཻ་ཤཻ་ཥཻ་སཻ་ཧཻ་ཀྵཻ་ཨོ་ཀོ་ཁོ་གོ་ངོ་ཅོ་ཆོ་ཇོ་ཉོ་ཊོ་ཋོ་ཌོ་ཎོ་ཏོ་ཐོ་དོ་ནོ་པོ་ཕོ་བོ་མོ་ཙོ་ཚོ་ཛོ་ཝོ་ཞོ་ཟོ་འོ་ཤོ་ཥོ་སོ་ཧོ་ཀྵོ་ཨཽ་ཀཽ་ཁཽ་གཽ་ངཽ་ཅཽ་ཆཽ་ཇཽ་ཉཽ་ཊཽ་ཋཽ་ཌཽ་ཎཽ་ཏཽ་ཐཽ་དཽ་ནཽ་པཽ་ཕཽ་བཽ་མཽ་ཙཽ་ཚཽ་ཛཽ་ཝཽ་ཞཽ་ཟཽ་འཽ་ཤཽ་ཥཽ་སཽ་ཧཽ་ཀྵཽ་ཨཾ་ཀཾ་ཁཾ་གཾ་ངཾ་ཅཾ་ཆཾ་ཇཾ་ཉཾ་ཊཾ་ཋཾ་ཌཾ་ཎཾ་ཏཾ་ཐཾ་དཾ་ནཾ་པཾ་ཕཾ་བཾ་མཾ་ཙཾ་ཚཾ་ཛཾ་ཝཾ་ཞཾ་ཟཾ་འཾ་ཤཾ་ཥཾ་སཾ་ཧཾ་ཀྵཾ་ཨཿ ཀཿ ཁཿ གཿ ངཿ ཅཿ ཆཿ ཇཿ ཉཿ ཊཿ ཋཿ ཌཿ ཎཿ ཏཿ ཐཿ དཿ ནཿ པཿ ཕཿ བཿ མཿ ཙཿ ཚཿ ཛཿ ཝཿ ཞཿ ཟཿ འཿ ཤཿ ཥཿ སཿ ཧཿ ཀྵཿ ◆ ཨོཾ་ཨཱཿ ཧཱུྃ་ཕཊ་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ཡ་ཀ

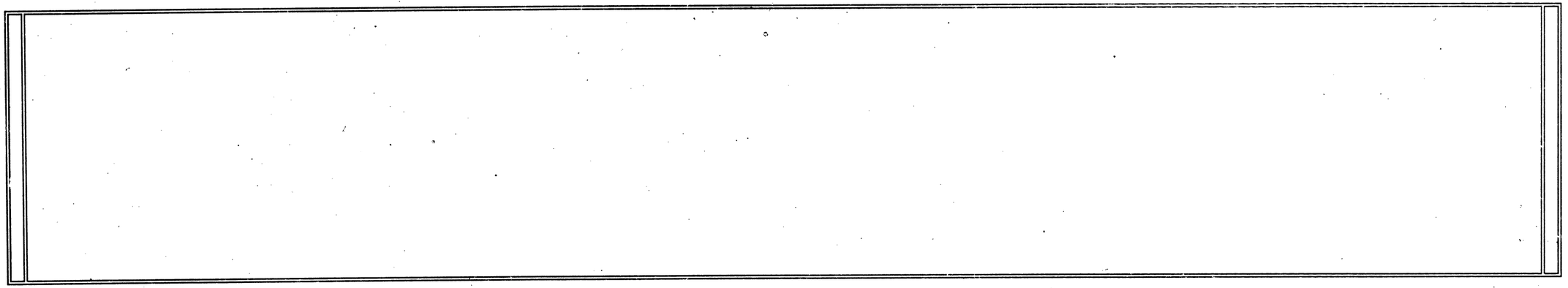

॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वज्रधराय महाबलपराक्रमाय महाभयभयानकाय भीमभयानकाय महाघोरविषविषयसंभवान्
सर्वविषान्नाशय नाशय सर्वदुष्टान् भक्षय भक्षय सर्वदुष्टान् हन हन सर्वदुष्टान् दह दह सर्वदुष्टान्
पच पच सर्वदुष्टान् मथ मथ सर्वदुष्टान् विध्वंसय विध्वंसय सर्वदुष्टान् विद्रावय विद्रावय सर्वदुष्टान्
उच्चाटय उच्चाटय सर्वदुष्टान् स्तंभय स्तंभय सर्वदुष्टान् मोहय मोहय सर्वदुष्टान् स्तंभय स्तंभय
सर्वदुष्टान् मोहय मोहय सर्वदुष्टान् सर्वदुष्टानां सर्वविषं नाशय नाशय सर्वदुष्टानां सर्वविषं
भक्षय भक्षय सर्वदुष्टानां सर्वविषं हन हन सर्वदुष्टानां सर्वविषं दह दह सर्वदुष्टानां सर्वविषं
पच पच सर्वदुष्टानां सर्वविषं मथ मथ सर्वदुष्टानां सर्वविषं विध्वंसय विध्वंसय सर्वदुष्टानां
सर्वविषं विद्रावय विद्रावय सर्वदुष्टानां सर्वविषं उच्चाटय उच्चाटय सर्वदुष्टानां सर्वविषं
स्तंभय स्तंभय सर्वदुष्टानां सर्वविषं मोहय मोहय सर्वदुष्टानां सर्वविषं स्तंभय स्तंभय
मोहय मोहय सर्वदुष्टानां सर्वविषं सर्वदुष्टानां सर्वविषं सर्वदुष्टानां सर्वविषं सर्वदुष्टानां
सर्वविषं

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བ་ཡོན་ཏན་གྱི་རིན་པོ་ཆེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བ་ཡོན་ཏན་གྱི་རིན་པོ་ཆེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བ་ཡོན་ཏན་གྱི་རིན་པོ་ཆེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་འབྱུང་གནས་

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་ཅིང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡོན་ཏན་

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ཁྱད་པར་ཅན་ཏེ། ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་བར་དུ་ཡང་ངོ་། །ཇི་སྲིད་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་བར་དུ་ཡང་ངོ་། །ཇི་སྲིད་

ཨཱཡུརྡེཧཱི།ཨཱཡུཥྤཱལཱ་ཡཱ་ཧཱ། ཏཱཏྟེཡཱཡཱ་ཏྟེཡཱཡཱ་ཏྟེཡཱཡུཡཱཡཱི། རཱཡཱཡཱི་ཡཱ་ཧཱ།། ◆ །།ཧཱུཾཏཱཏཱཡུཡཱཡུཡཱཡུཡཱཡཱ་ཏཱཡཱཡཱ།
ཡཱ་ཏཱཡུཡཱཡཱ་ཏཱཡཱ། ཡཱཏཱཡཱཡུཡཱཡཱི་ཡུཡཱཡཱཏཱཡཱཡཱ། ཧཱུཾཏཱཡུཡཱཡུཡཱཡཱི་ཡཱཡུཡཱཡཱ། ཏཱཡཱཡཱི་ཡཱཡཱཡཱི།། ◆ །།ཨོཾཨཱཡཱཡཱི། ཤྲཱཡཱཡཱི་ཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱ། ཨཏཱཡཱཡཱཏཱཡཱཏཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱ།། ཤྲཱཡཱཡཱཡཱ།
ཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱ། ཨོཾཏཱཏཱཏཱཡཱ།། ◆ །།ཨཱཡཱཡཱཡཱི་ཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱཡཱ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

श्रीशुक उवाच

एवं स्वभृत्यसुहृदां वचः कुरुकुलाधिपः ।
नाद्रियत तदाक्रम्य वर्तमानः स्वया धिया ॥ १ ॥
तस्यैवं दुर्मतेस्तप्तो राजोपायैरसत्कृतैः ।
प्रतिक्रियां न पश्यद्भिर्निर्बन्धः समपद्यत ॥ २ ॥
तत्र सङ्कर्षणः क्रुद्धो भ्रुवोर्मध्यात्सहानलः ।
निर्गच्छन्नतिसंरम्भात्तं बन्धुमुदवासयत् ॥ ३ ॥
तं निवारयितुं प्राप्तो रामं कृतान्तमीक्षणः ।
सान्त्वयन्नुपशमं ग्राहयामास सामभिः ॥ ४ ॥
अथ निर्याय नगरात्सर्वयादवपालितः ।
अनाधृष्यतया राजन्स्वतेजसा दुरत्ययः ॥ ५ ॥
सङ्कर्षणः कुरुपतिं शान्तं वीतमन्युकम् ।
सुहृत्सु पश्यतां राज्ञां विवेशोपविवेश ह ॥ ६ ॥
तं तथा निभृतामर्षं विज्ञायाग्रजमच्युतः ।
सान्त्वयन्नुपशमं ग्राहयामास सामभिः ॥ ७ ॥
अथ निर्याय नगरात्सर्वयादवपालितः ।
अनाधृष्यतया राजन्स्वतेजसा दुरत्ययः ॥ ८ ॥
सङ्कर्षणः कुरुपतिं शान्तं वीतमन्युकम् ।
सुहृत्सु पश्यतां राज्ञां विवेशोपविवेश ह ॥ ९ ॥
तं तथा निभृतामर्षं विज्ञायाग्रजमच्युतः ।
सान्त्वयन्नुपशमं ग्राहयामास सामभिः ॥ १० ॥

ꣳ ꣳ ꣳ

ଦୁଃଖ ଦୂରକରି ଆପଣାର ଦାସ କରି ରଖିବେ ଏହି ଆମ୍ଭର ପ୍ରାର୍ଥନା ଅଟେ ॥ ୬୭ ॥ ଏହି ପ୍ରକାରେ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଦାସ ଶ୍ରୀ ଅଚ୍ୟୁତାନନ୍ଦ ଦାସ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଚରଣରେ ପ୍ରାର୍ଥନା କରିଥିଲେ ଏବଂ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଚରଣରେ ଲୀନ ହୋଇଥିଲେ ॥

ভূবনত্রয়েশ্বরী॥ ওঁ নমো ভগবত্যৈ শ্রীত্রিপুরায়ৈ॥ ত্রীঁ ক্রৌঁ ঐঁ হৃদয়ায় নমঃ॥ ক্লীঁ ক্লীঁ ক্লীঁ শিরসে স্বাহা॥ সৌঃ সৌঃ সৌঃ শিখায়ৈ বষট্॥ ঐঁ ক্রৌঁ ত্রীঁ কবচায় হুম্॥ ত্রীঁ ক্রৌঁ ঐঁ নেত্রত্রয়ায় বৌষট্॥ সৌঃ সৌঃ সৌঃ অস্ত্রায় ফট্॥ ভূর্ভুবস্বরোম্॥ ত্রিপুরে ত্রিপুরে মহাত্রিপুরসুন্দরি ত্রিপুরবাসিনি ত্রিপুরাশ্রীচক্রস্বামিনি ত্রিপুরমালিনি ত্রিপুরসিদ্ধে ত্রিপুরাম্বে ত্রিপুরেশ্বরি ত্রিপুরে মহাত্রিপুরে ত্রিপুরভৈরবি হ্রীঁ স্বাহা

ཀུན་ཏུ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་ཅིང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པའི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ་ལ་སོགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཇི་ལྟར་ཞེ་ན། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །

ཞེས་བཤད་དེས་ཏེ། རྒྱལ་པོ་ཆེ་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་ཚེ་ན་ཡང་ཡོད་ཅེས་བཤད་དོ། ཡུལ་ཁྱིམ་ནས་ཁྱིམ་བདག་ཆེ་ཞིང་ཕྱུག་ཅིང་ནོར་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནས། རྒྱུ་མཚན་ཅི་ཞེ་ན། ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཡོད་ཅེས་བཤད་དོ། ཡང་ཁྱིམ་བདག་ཆེ་ཞིང་ཕྱུག་ཅིང་ནོར་དང་ལོངས་སྤྱོད་ཆེ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནས།

ཀཀ། ཤཱཀྱཱ་ཡ་ཤཱཀྱཱ་ཡ་ཤཱཀྱཱ་ཡ་

ཐོག་མཐའ་དང་བྲལ། རྒྱུ་རྐྱེན་ལས་བྱུང་བའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། རང་བཞིན་གྱིས་སྟོང་པ་ཉིད་དུ་ཤེས་པ་ནི། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱའོ། །ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ནོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཏེ།

ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ཐེངས་ཐེངས་ཞེས་པའ

།ཞེས་ཐབས་ཤེས་ཡབ་ཡུམ་གཉིས་ཀྱི་ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་ཚུལ་ལས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡབ་ཡུམ

ཀཱ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ

ཤུལ་གཅིག་ལས་སོ། ། ལྷ་བཅུ་རྒྱུད་ཀྱི་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་ལས་ཀྱང་། ལྷ་བཅུ་ཡི་ནི་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་ཡིས། ། ལྷ་མཆོག་གཅིག་ཏུ་ཤུགས་ཀྱིས་ཀྱང་། ། ཞེས་པ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ། ། ཡང་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཀུན་རྒྱུ་ལས་བྱུང་བའི་ལྷ་ཞེས་ཀྱང་། ཤིན་ཏུ་ཁེངས་པ

ཅན་ཏེ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ། །

ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨོཾ་

ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ཡང་ཡང་ཞེས་པ་ཡིན་ཏེ

ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པའི་མཐའ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཡང་དག་པ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

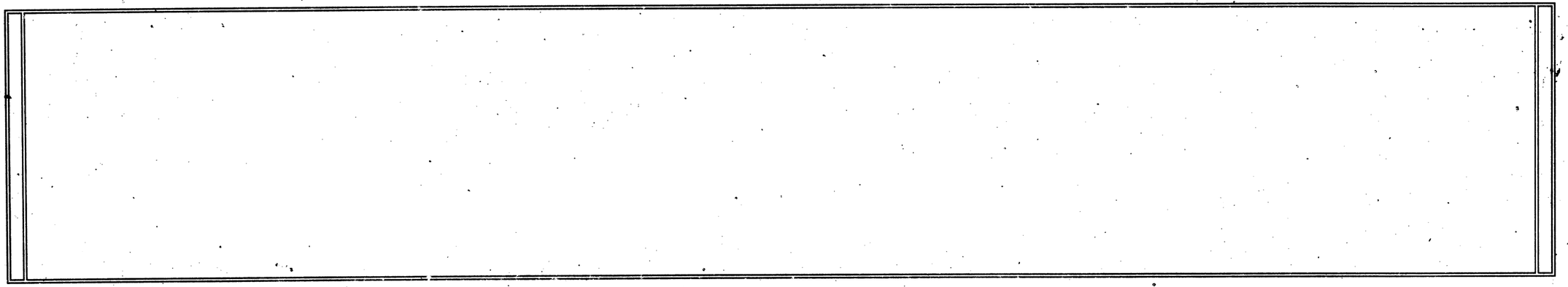

ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཆ་ལས་ཀྱང་ཆོག་ཅིང

ཅེས་བཤད་པའོ། ། ཐགས་རྒྱུ་ལྷ་ཡི་གསོལ་འདེབས་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་། ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་ཡིས། ཞེས་སོགས་ཀྱིས་བཤད་པའོ། ། ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་ཡིས་ཞེས་པ་ནི། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་ཡིས་ཞེས་པའོ། ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་

। ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པའི་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་གནས་པ་ཡི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱ་མཚོ་ཡི་ཡུལ་ཅན་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཐམས་ཅད་ཀྱ

ૐ ॥ ૫૬ ॥ ગ્રામાકરીગામેકગામેપોતાનાગરીકુ। ધોમાસુગાગાકુગામાસુંગાગાપોકગાગા। ભગુગાપેકોગાગાકોમા
પગીમકોગાપુમગાગા। કુગાકુંગાપોકોગાગાકોમોગા। ગગીકુમોગાગુભાગાપગીગાગેભાગાકુંમાગુભગા। રગાગામોમેગીગાભગમુગા
ગામા। ભગાગેમોગાગકોગાગુભાગાકુગાગા। કુગાકુમાગામાભોગાગેગાગાગુગા। કોમેંગોગાગાકોગામકોગાગાગુગા। કોમકુંગા
ગામાકોગાગુભાગાગુગા। ગોગામાકુભાગાગાગોગુગા। રગાગામોમેગીગાભગમુગાગેમા ગમોકુપોંમુગાકુમાગામુભાગાકુગાગાગાગામાગુગા
॥ગમેંમગાગોકુપોંમાગાગોંકોંગુગાગા। મોંગુગાગાકુંભાગામકોગોંગોગા। કુગાગાગાભોંગુભાગાગાગોંગોંગોગાગાકુંમા। ગુંગા

ཨཱཏཱཡཾ ཨཱཏཱཡཾ ཨཱཏཱཡཾ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡི་བར་དུ་ཡང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱིར་ཐུག

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་

Siddhanta eGangotri Gyaan

॥ ७२ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ

૭૭ । । ।

ཨཱཿ ཧཱུྃ ཧཱུྃ ཧཱུྃ

ཞེས་བྱ་བ། ཡང་ན་ཀ་ལ་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཆུ་ཡིན་ཏེ། ཆུ་ཡི་ཁམས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡིན་ནོ། ཆུ་ཡི་ཁམས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་

ཡོ་ཤེས་ཀྱི་ཞིང་ལོ། རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། ངན་སོང་གསུམ་
དུ་ལྟུང་མི་འགྱུར་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ།
ཡང་ཕྱིས་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་
བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ།
རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ།
རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ།
རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལགས་ལ། རྡོ་རྗེ་བཀའ་སྐྱེ་ཐེག་པ།

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ हरिवंशपर्व ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚིག་གི་དོན་ཏོ། །ཇི་ལྟར་ཐོབ་པ་ཡིན་ཞེ་ན། ཐོག་མར་ཡང་དག་པར་ལྟ་བ་ཐོབ་པ་ལས་ཀྱི་ཚེ་ཡང་དག་པར་ལྟ་བ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཐོག་མར་ཡང་དག་པར་ལྟ་བ་ཐོབ་པ་ལས་ཀྱི་ཚེ་ཡང་དག་པར་ལྟ་བ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་

ཀཱཏནྟྲཱ

ཞེས་པའོ།། ། ། ཤེས་རབ་ཀྱི། ཚིག་གཅིག་ལས་ཀྱང་ལྷག་པའི་ཚིག་གཉིས་པ། ། ། ཐུབ་པའི་དཔལ་ལྡན་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ཞེས་བྱ་བ་ནས། ཐུབ་པའི་ཚིག་ཏུ་འཇུག་གོ། ཞེས་པའི་བར་ནི་

ཞེས་ ཀཀ ། ཐོག་མར་ཀུ། ཁ་ལྟ་མ་ཀོ་ཀུ་མ་ཀོ་ཀོ་ཡ་ཀ་ཀུ་ཡ། ཤ་ཀ་ཀུ་ཡ་མ་ཀོ་ཀུ་ལུ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཁྱོ་ལྟ་ཀོ་ཀོ་ཡ་མ་ཀུ་ཡ།
ཀུ་ཀུ་མ་ཀོ་ལྟ་ཀོ། ལྟ་ཀོ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ་ཀོ་ཀོ་ཡ་ཡ་མ་ཀོ་ཡ། ཤ་ཀོ་ཡ་ཀུ་ཡ་ཀོ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཤ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀ་ཀོ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ།
ཤ་ཀ་ཀོ་ཁ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཁ་ཀོ་ཡ་ཁ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཁ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀ་ཀོ་ཡ་ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ།
ཁ་ཀོ་ཡ་ཁ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀ་ཀུ་ཡ་ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ། ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀོ་ཡ།
ཁ་ཀ་ཡ་ཁ་ཀ

ཤཱཀྱཐུབ་པ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཡང་ཕྱོགས་ཀུན་ཏུ་ཡོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱ

ৰাধিৰাজ্ঞী ৰাজ্ঞীৰাজ্ঞী ৰাজ্ঞীৰাজ্ঞী ৰাজ্ঞী

ཀཱ། ། དཔལ་ཡུགཱིམཱཡཱཛཱལཏནྟྲཱདི། ཐུགཔཔཏེམཱཡཱཛཱལཏནྟྲཱདི་ཀཱ། ཕུགཱཡཱུཏཱཡཱཡཱཡ

ཀྱི་ཚིགས་ཀྱི་ཚིགས་ཀྱི་ཚིགས་

ཀཱཡཱ་ཝཱཙཱ་མནསཱ་ཀརྨཎཱ་ཝཱ་ཡཏ་ཀིཉྩི་ཀུསལཾ་ཀཏཾ་ཏཏ་སབྦཾ་ཏཱཡ་ཨཱཙརིཡཱཡ་ཨུཔཛྫྷཱཡ་ཨུཔཊྛཱཡ་ཨུཔཊྛཱཡིཀཱཡ་ཨུཔཊྛཱཡིཀཱཡ་ཨུཔཊྛཱཡིཀ

ཕྱིར་ཞུགས་ཏེ། ཀཱ་ལི་ཀཱ་ཡི་ཀཱི་ཡུ་ཨ་ལེ་ཨོ་ཨོ། ཀཱ་རུ་ཨོ་ཏ་ཀཱ་ཏ་ཀཱ་ཀཱ་རུ་ཨེ་ཨོ་ཨོ་ཏེ།། རྡོ་ཨོ་ཨོ་ཏེ་ཨ་ལེ་ཨོ་ཨོ་ཏེ་ཨ་ལེ་ཨོ་ཨོ་ཏེ།། ཤཱི་ཡཱི་ཡོ་ཡཱི་ཡོ་ཨ་ལེ་ཨོ་ཨོ། ཀཱ་རུ་ཨོ་ཏ་ཀཱ་ཏ་ཀཱ་ཀཱ་རུ་ཨ

Tibetan Buddhist Resource Center

ཀ་ཀ་ཀ་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཀ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་སུ། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན

ཀྱི་ཚིག་ཏུ། ཁམས་གསུམ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ། སྐྱེ་མཆེད་བཅུ་གཉིས་ཀྱི་ཚིག་ཏུ། ཕུང་པོ་ལྔའི་ཚིག་ཏུ། རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བར་འབྱུང་བའི་ཚིག་ཏུ། ཡན་ལག་བརྒྱད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ། ཐེག་པ་གསུམ་གྱི་ཚིག་ཏུ། རྒྱུད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚིག་ཏུ། ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཚིག་ཏུ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་ཚིག་ཏུ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡེ་ཤེས་སེམས་དཔ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ།

ཐམས་ཅད་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་ཡིན་ཏེ། རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་ངོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་། ཐམས་ཅད་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་ཡིན་ཏེ། ཞེས་གསུངས་སོ། །ཐམས་ཅད་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུམ་ཡིན་ཏེ།

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यमाद्यास्सुकृतोद्भवा नियमिनां संभावनीयाश्च ये
ब्रह्मोपेन्द्रमहेश्वरप्रभृतयो देवाश्च सर्वेऽमी ॥ तेषां कर्मफलानि देहभृतां
भोगाय योगाय च ॥ तस्मात्त्वं भव भक्तवत्सल मयि स्वामिन्दयां
कुरुष्व प्रभो ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ◆ ॥ श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय
नमः ॥ श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥
श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥
श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥
श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥
श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ श्रीमद्गोपीजनवल्लभाय नमः ॥

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ

ཐམཱཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཐཱཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི།
ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། མཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཐཱཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི།
ཐཱཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཐཱཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི།
ཐཱཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཐཱཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི། ཨཱཏྲེཡཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི་ཏཱ་ཀཱཏྱཱཡནཱི།

Siddhanta eGangotri Gyaan

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ हरिः ॐ ॥ श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥ संजय उवाच ॥ दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ॥ आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ॥ व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ ३ ॥ अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ॥ युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान् ॥ पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् ॥ सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥ अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ॥ नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥ भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ॥ अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥ ८ ॥ अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः ॥ नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥ अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम् ॥ पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम् ॥ १० ॥ अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ॥ भीष्मं एवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥ ११ ॥ तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ॥ सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥ ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः ॥ सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ १३ ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ ॥ माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥ १४ ॥ पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः ॥ पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥ काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः ॥ धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥ १७ ॥ द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ॥ सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् ॥ १८ ॥ स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ॥ नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ॥ प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ २० ॥ हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ॥ अर्जुन उवाच ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ २१ ॥ यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ॥ कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः ॥ धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥ एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् ॥ उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ २५ ॥ तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् ॥ आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि ॥ तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ॥ २७ ॥ कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ॥ अर्जुन उवाच ॥ दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥ २८ ॥ सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति ॥ वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥ २९ ॥ गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ॥ न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ ३० ॥ निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ॥ न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ ३१ ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ॥ किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥ येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ॥ त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ ३३ ॥ आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ॥ मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः संबन्धिनस्तथा ॥ ३४ ॥ एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ॥ अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥ ३५ ॥ निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन ॥ पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥ तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ॥ स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ ३७ ॥ यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ॥ कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥ ३८ ॥ कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् ॥ कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥ ३९ ॥ कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ॥ धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥ ४० ॥ अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ॥ स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥ ४१ ॥ संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च ॥ पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥ दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः ॥ उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ४३ ॥ उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन ॥ नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥ अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम् ॥ यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥ यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः ॥ धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥ ४६ ॥ एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ॥ विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥ ४७ ॥ ॥ ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

ཀཱཏྱཱཡནཱཡ ཨཱཙཱརྱཱཡ ཨཱཙཱརྱཱཡ ཨཱཙཱརྱ

ཀཱ་ཏནྟྲ་ཝྱཱ་ཀ་ར་ཎ་ཊཱི་ཀཱ་ཡཱཾ་ཀྲྀ་དྡྷ་ཀཱ་ར་ཀ་པྲ་ཀ་ར་ཎཾ་ཙ་ཏུ་ཐཾ།

ग्यारुकनमामाधीरुा क्षेत्रेवदुवेनगेरुनगवेन ।।रोमनमङ्गाशेमामाधावेक्षणमा। ङ्गाशेमामाधावेक्षणरुा २वमाधावेरुा।
धावमाधाशेमा रोमनमाशेगीनोक्षेकुमाशेवणा। शेगीनोक्षेकुमामीशेवणाशा क्षेशेमाधाशेरुा२वेक्षेनरुमाङ्गा।
धेशेमाधावेक्षेनरुमेमाङ्गाशा।। रुनुमाशेवाक्षेनरुमेमामीकुमा रामेनङ्गाधाधेशेमाङ्गा।। ङ्गाधाधेशेमाङ्गेमाधाङ्गा।। वनेगीशेशेमा
धामाधाशेमेशेमेमा। रामेनङ्गाधाधेशेमाङ्गेमाधाधेशेमाङ्गेमा २वमाधाशेवमेमावेक्षेनगेशेमाङ्गेमा
नक्षधाक्षेगी गुनाशेमाधेमाक्षेशेमाङ्गेमा क्षेवक्षेनमाधेमाशेवमाधाधेक्षेमा। वक्षेमेमक्षेनमाशेगेमाक्षेमाङ्गेमाशेवक्षेमेमक्षेनमाक्षेगी ।।रोमेनमा
नक्षेमेमाधेमाशेङ्गेमाशेमा।। नक्षेमेमाशेङ्गेमाधेमाशेमा।। वनेगीमाशेगेमाधाधेमाङ्गेमाधेमा। वक्षेमाशेवनमाधेमाधेमाशेमाशेक्षेमा।

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིག་ཕྲེང་།

ཐོབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐོབ་པ་ཡང་ཐོབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཐོབ་པ་ཉིད་ཡང་ཐོབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །ཐོབ་པ་ཉིད་ཀྱ

॥ ॥ ॥

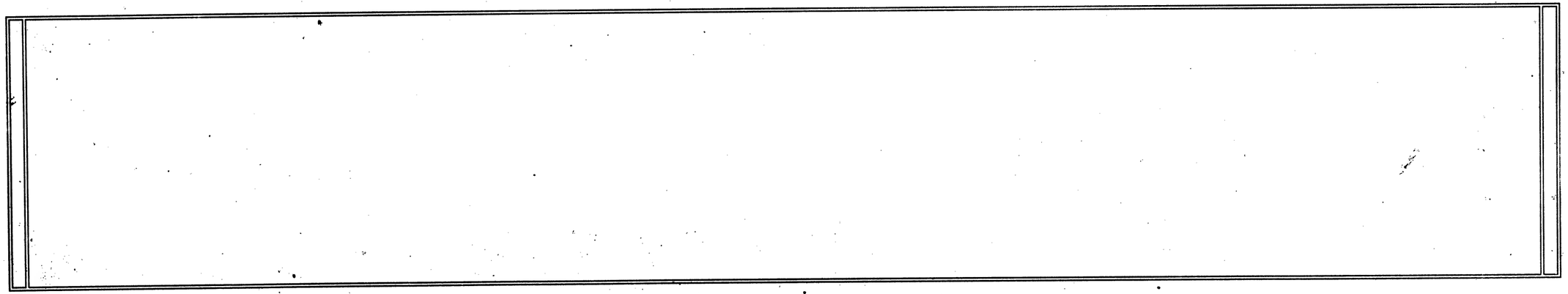

॥ ཨཱཡུཿཔྲཛྙཱཡཱ་ཡཱ་ཡུཿཔྲཛྙཱཡཱ་ཡཱ་ཡུཿཔྲཛྙཱཡཱ་ཡཱ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་ཡོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅན་ཡིན་ཏེ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན

ཨོཾ།། ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿཧཱུྃ

ཞེས་ཀྱང་ཐུབ་པ་ཡིན། །དེ་ཡང་ཐུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་ན་ཡོད་པ་ཡིན་ནམ། ཐུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་ན་ཡོད་པ་ཡིན་ཏེ། ཐུབ་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚེ་ན་ཡོད་པ་ཡིན་ན་ཡང་

ଦେବାଦେବୀଗଣୈଃ ସର୍ବୈଃ ସମନ୍ତାତ୍ପରିବାରିତଃ ।
ଦିବ୍ୟଭୋଗସମାୟୁକ୍ତୋ ଦିବ୍ୟଲକ୍ଷଣଲକ୍ଷିତଃ ।
ଦିବ୍ୟାଭରଣସଂଯୁକ୍ତୋ ଦିବ୍ୟଗନ୍ଧାନୁଲେପନଃ ।
ଦିବ୍ୟମାଲ୍ୟାବତଂସଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟବସ୍ତ୍ରସମାବୃତଃ ।
ଦିବ୍ୟଚାମରହସ୍ତାଭିଃ ସେବ୍ୟମାନଃ ସମନ୍ତତଃ ।
ଦିବ୍ୟଗୀତୈଶ୍ଚ ନୃତ୍ୟୈଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟବାଦ୍ୟୈଶ୍ଚ ତୋଷିତଃ ।
ଦିବ୍ୟଯାନସମାରୂଢୋ ଦିବ୍ୟଚ୍ଛତ୍ରସମାବୃତଃ ।
ଦିବ୍ୟଶଙ୍ଖରବୈଃ ପୂର୍ଣ୍ଣଃ ଦିବ୍ୟଦୁନ୍ଦୁଭିନିସ୍ୱନୈଃ ।
ଦିବ୍ୟଗନ୍ଧର୍ବସଂଘୈଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟଗୀତୈଃ ସମାବୃତଃ ।
ଦିବ୍ୟଦେବାଙ୍ଗନାଭିଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟନୃତ୍ୟୈଃ ସମାବୃତଃ ।
ଦିବ୍ୟଦେବଗଣୈଃ ସର୍ବୈଃ ସମନ୍ତାତ୍ପରିବାରିତଃ ।
ଦିବ୍ୟଭୋଗସମାୟୁକ୍ତୋ ଦିବ୍ୟଲକ୍ଷଣଲକ୍ଷିତଃ ।
ଦିବ୍ୟାଭରଣସଂଯୁକ୍ତୋ ଦିବ୍ୟଗନ୍ଧାନୁଲେପନଃ ।
ଦିବ୍ୟମାଲ୍ୟାବତଂସଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟବସ୍ତ୍ରସମାବୃତଃ ।
ଦିବ୍ୟଚାମରହସ୍ତାଭିଃ ସେବ୍ୟମାନଃ ସମନ୍ତତଃ ।
ଦିବ୍ୟଗୀତୈଶ୍ଚ ନୃତ୍ୟୈଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟବାଦ୍ୟୈଶ୍ଚ ତୋଷିତଃ ।
ଦିବ୍ୟଯାନସମାରୂଢୋ ଦିବ୍ୟଚ୍ଛତ୍ରସମାବୃତଃ ।
ଦିବ୍ୟଶଙ୍ଖରବୈଃ ପୂର୍ଣ୍ଣଃ ଦିବ୍ୟଦୁନ୍ଦୁଭିନିସ୍ୱନୈଃ ।
ଦିବ୍ୟଗନ୍ଧର୍ବସଂଘୈଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟଗୀତୈଃ ସମାବୃତଃ ।
ଦିବ୍ୟଦେବାଙ୍ଗନାଭିଶ୍ଚ ଦିବ୍ୟନୃତ୍ୟୈଃ ସମାବୃତଃ ।

ཀེ་ཏ་ལ་ཡ་ཏེ་ཨ་ཏ་ཏ་ཏ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཤིང་ཁ་ཐུར་དུ་ཕྱོགས་ཏེ་ཁ་ཐུར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཤིང

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།

ཐུབ་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།། ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ། ཤུ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ། ཏཱ་ཐ་ཐཱ་པ་ཐཱ་ཡ་ཐཱ་ཡ་ཐཱ་ཡ།
ཀྱི་ཡུལ་པའོ་ཞེས་སོ། ཁ་ཁ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།། གཱ་ཐཱ་སྐྱུར་ཀུ་ཐ་པའོ་ཞུ་ཐུ་ཐུ།། ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ་ཞེས་སོ།
ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ་ཞེས་སོ།། ཏྲ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།། ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ། ཀཱ་ཐཱ་སྐྱུར་ཀུ་ཐ་པའོ་ཞུ་ཐུ་ཐུ།།
ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ་ཞེས་སོ། རྒ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ། ཏྲ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།། ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།
ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ་ཞེས་སོ། རྒ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ། ཏྲ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།། ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།
ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ་ཞེས་སོ། རྒ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ། ཏྲ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།། ཀཱཡ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་པའོ།

ཀཱཡཱ་ཝཱཀ་ཙིཏྟ་ཀཱ་

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཀཱ་ཏྱཱ་ཡ་ནཱ་ཡ་ཨ་ཝ་ལོ་ཀི་ཏེ་ཤྭ་ར་ཡ་ཨ་ཀ་ལ་ཀཱ་ལ་ཝི་ཥ་ཧ་ར་ཡ་ཨ་ཨ་ཨཱ་ཨཱ་ཨཱ

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡི་གེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡི་གེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡི་གེ་ཐམས་ཅད་ཀྱ

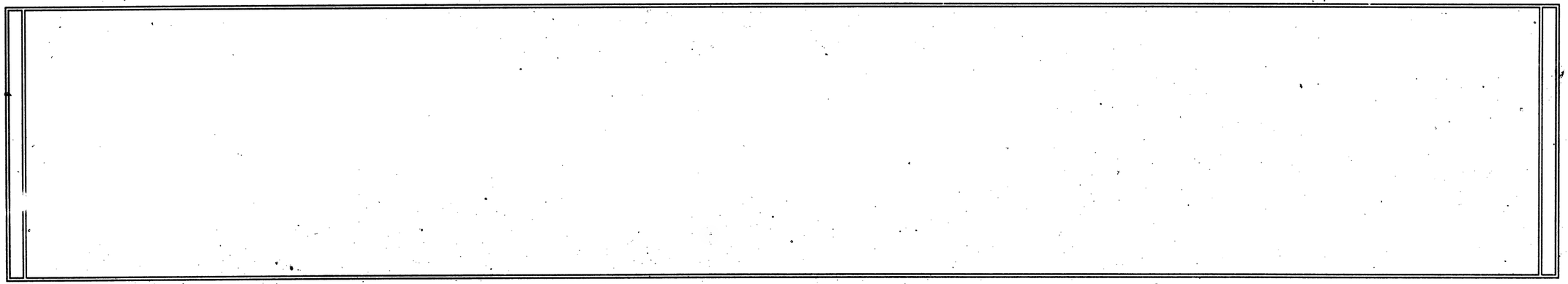

ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་བདག་ཏུ་འཛིན་པ་ཡིན་ལ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏྟཱ་ནི། ཡཱ་ཝ་ཏཱ་ཝ་ཏཱ་ཡུ་ཥཱ་ཡཱ་ཝ་ཏཱ་ཝ་ཏཱ་ཡཱ། ཨཱ་ཡུ་ཥཱ་

ལུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེ་ན། ཁྱོད་ཀྱི་ལུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཡང་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེས་ལན་བཏབ་ན་ཡང་ཐལ་བ་ཡིན་ནོ།

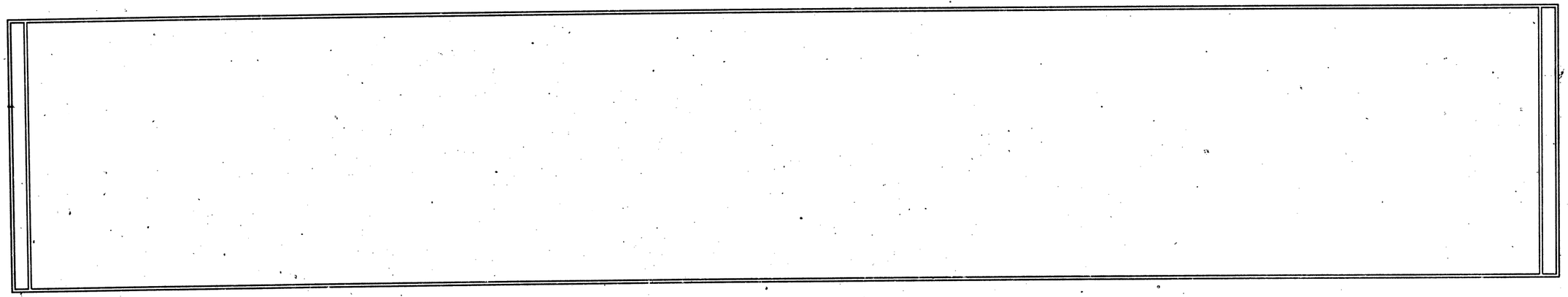

॥ ॥ ॥ ॥

ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཡང་ན་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱང་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་བ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚད་ཀྱི་ཚིགས་བཅད་ཀྱི་ཚ

ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ཏ་ཀ་ཡ་ཤ་ཀ་ཏ་ཨཱ་ཏ་ཨཱ་ཏ་ཨཱ

ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས། །དེའི་ཚེ་ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེ་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་དོ། །ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ། ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེ་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་དོ། །ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ། ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེ་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་དོ། །ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ། ཀུན་གཞི་རྣམ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེ་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་དོ། །ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་ན། ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ།

ཀྲོཾ་ཀྲོཾ་ཀྲོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡང་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི

ཀྱི་ཡང་ཏེ་ཡིན་ལགས་སོ། །ཁམས་གསུམ་པའི་ཡང་ཏེ་ལས་ཡིན་ལགས་སོ། ཡིན་ཏེ་ཁམས་གསུམ་པའི་ཡང་ཏེ་ལས

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོག་པ་ན་ཡོད་པ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཁོག་པ་ན་ཡོད་པ

ཨོཾ། ཐུགྷྲི་ཀཱ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ། ཐུ་ཀཱ་ཡ་ཨ་ཀཱ་ཡ་ཨ་ཀཱ་ཡ་ཨ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་སྨོན་ལམ་ལས། ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་རོ། །ཡང་ན་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་བསྔོ་བ་ཡིན་ན

ཐམས་ཅད་ལས་ཀྱང་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོན་ཏན་གྱི་ཚིག་གིས་བསྟོད་པ་ཡིན་ནོ། །ཇི་ལྟར་ན་ཞེ་ན། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་སློང་ཁྱོད་ཀྱིས་

ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཞེས་པ་ནི་ཐེངས་ཐེངས་ཞེས་པའ

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་གཙོ་བོ་ཉིད་དུ་གྱུར་པས། སྐྱེ་མེད་ཅིང་འཇིག་པ་མེད་པ་ཉིད་དུ་གྱུར་ཏོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས

ཀཱལཙཀྲ ། ཤཱཀྱཤྲཱིཔཱདཀྲྀཏ ། ཀཱལཙཀྲཏནྟྲཊཱིཀཱ ། ཀཱལཙཀྲཏནྟྲཱདྱཊཱིཀཱ ། ཀཱལཙཀྲཏནྟྲཱདྱཱཔཉྫ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་

ཀུ་རུ་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཡི་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། གཙུག་ཏོར་ཆེན་པོ་ཡི་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཡང་ཀུ་རུ་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ། རྡོ་རྗེ་ཐོད་ཕུང་ཡི་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཡི་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། རྡོ་རྗེ་ཐོད་ཕུང་ཡི་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཡི་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཡང་ཀུ་རུ་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ཡི་ཀུ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ། ཀུ་རུ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

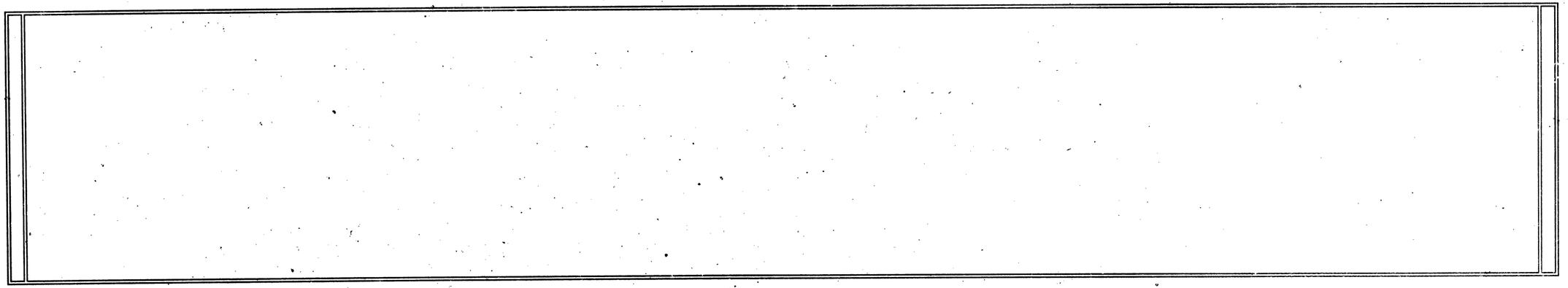

ཨཱརྱཱཥྚསཱཧསྲིཀཱཡཱཨཱརྱཱཝལོཀིཏེཤྭརསྟོཏྲནཱམ

ཀཱཡཱ་ཝཱཙཱ་ཙིཏྟེན་ཝཱ། ཨཀུཤལཾ་ཀརོཏི། ཨཡཾ་ཝུཙྩཏི། ཨཡཾ་ཀཱཡཀམྨཱདིཀོ་ཀཱཡཱདིཀོ་ཝཱ། ཨཀུཤལཱ་ཀརཎཱ་ཏོ་

ཨཱཿཨཱཿཨཱཿ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཕྲིན་ལས་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཚེ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་འཁོར་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུམ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡབ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཐུགས་ཀྱི་ཡུལ་འཁོར་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་གྱི་ཡུལ་ཅན།

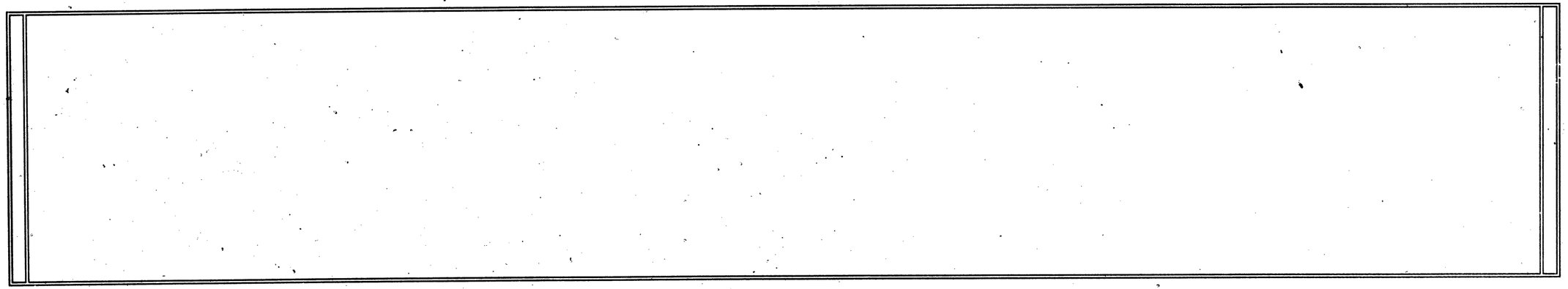

།ཞི་བྱེད་ཀྱི་ཐབས་ཀྱི་ཚུལ་ལས་ཀྱང་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡ

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

। પ્રમાણાભાસોદાહરણાનિ ।તત્રેકાનેકાત્મકેવસ્તુન્યેકાંશગ્રાહિજ્ઞાનં પ્રમાણાભાસં યથા
અશ્વોયમિતિ ।ગવયેગોબુદ્ધિવત્ ।।૩૯।। ।।ઉક્તોપનયોપિ ।।૪૦।। અથનિગમનાભાસાનાહ ।।
નાવયવાઃ ।।૪૧।। ।।ઉક્તાનિગમનાભાસાઃ ।।૪૨।। ।।ઉક્તોદાહરણાભાસઃ ।।૪૩।। અથતર્કાભાસાનાહ ।।
વિપર્યયાનિષ્ટાપત્તિરપ્રમાણં ।।૪૪।। ।।વિપર્યયોવ્યાપકવિરુદ્ધોપલબ્ધિઃ ।।૪૫।। ।।અનિષ્ટાપત્તિર્વ્યાપકવિરુદ્ધોપલબ્ધિઃ ।।૪૬।।
।।ઉક્તોપ્રમાણાભાસઃ ।।૪૭।। અથનિર્ણયાભાસાનાહ ।।

ཚེ། ཤཀྱེའུ་ཚེ་རྒྱལ་གཤེན་ཐུབ་པ་ལ་སོགས། རྒྱལ་བུ་རྣམས་ཀྱིས་ཐབས་ཅིག་ཏུ་ཡང་དག་པར་ཞུས་ཏེ། ཨོཾ་ཁྱོད་ཀྱི་ཞལ་ནས་ཚེ་ཡི་ལུང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་ཤིང་།

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो विष्णवे मधुसूदनाय ॥ सर्वप्रहरणायुधाय ॐ नमो नारायणाय ॥
पुरुषोत्तमाय नमः ॥ श्रीवत्सधारिणे नमः ॥ शार्ङ्गधनुषे नमः ॥ पद्मगदाधराय नमः ॥ ॐ नमो भगवते
महापुरुषाय सर्वगुणसम्पन्नाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो विष्णवे मधुसूदनाय ॥
सर्वप्रहरणायुधाय ॐ नमो नारायणाय ॥ श्रीमते पुरुषोत्तमाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते महापुरुषाय
सर्वगुणसम्पन्नाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो विष्णवे मधुसूदनाय ॥ सर्वप्रहरणायुधाय
ॐ नमो नारायणाय ॥ श्रीमते पुरुषोत्तमाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते महापुरुषाय सर्वगुणसम्पन्नाय ॥

ཁམ། ཡིམ་ཐུགས་ཀྱི་ཁ་སྐོང་བ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད། རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡབ་ཡུམ་གྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཁ་སྐོང་བ། མཐའ་ཡས་པའི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་རྩེ་ན་གནས་པ་ཡིན་ཏེ། ཡིམ་ཐུགས་ལས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའོ།། རིམ་པ་གཉིས་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཁ་སྐོང་བ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཡང་རྩེ་ན་གནས་པ་ཡིན་ཏེ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡབ་ཡུམ་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཁ་སྐོང་བ

ཀུ་ཏ་ཀ་ཀ་ཀ

ཐུགས་བསམ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཏེ། ཁོ་བོ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཏེ། རྟོག་པ་ཡིད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཏེ། ཚིག་ཡི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཏེ།

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཡིད་བཞིན་གྱི་ཕུང་པོ་ལྟ་བུ་འཐོབ་བོ།། རྒྱལ་སྲིད་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ། གཙུག་གཱིའི་ཁྲི་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ། གཙུག་ཏོར་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ།། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལྟ་བུ་འཐོབ་བོ།། རྒྱལ་སྲིད་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ། རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་སྐུ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ། ཕྱི་ལས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཐམས་ཅད་ཟད་པ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ།། ཤིན་ཏུ་ཕུང་པོ་ལྟ་བུ་འཐོབ་བོ།། ཡང་དག་པའི་ལམ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ།། ཤིན་ཏུ་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ། རྒྱལ་སྲིད་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ། རྒྱལ་སྲིད་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་ལྟ་བུ་ཐོབ་བོ།

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ཡ་ཀ

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་ཀྱང་། ཁྱོད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡང་ཡ

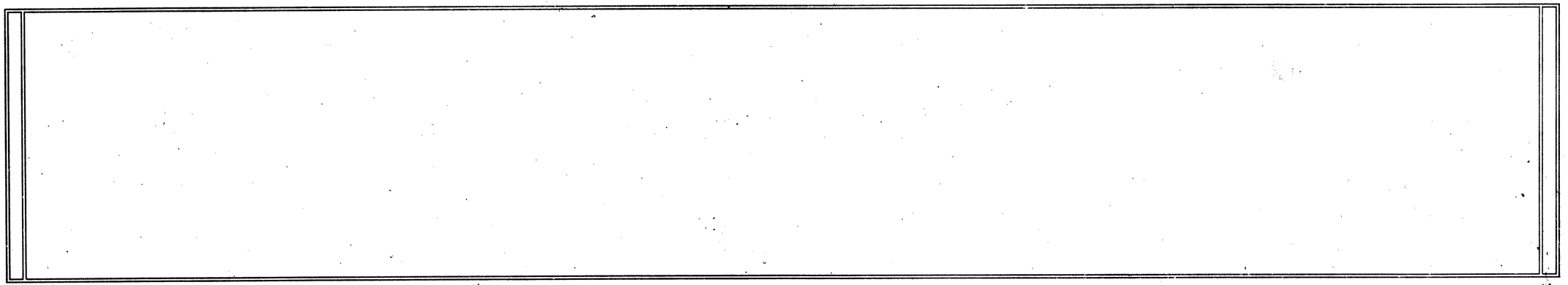

॥ श्रीमान्महाकालसंहितायां श्रीकालीकुलक्रमार्णवे श्रीकालीकुलसर्वस्वे श्रीकालीकुलपञ्चशतिकायां श्रीकालीकुलसुधार्णवे श्रीकालीकुलसुधाकरे श्रीकालीकुलसुधोदये श्रीकालीकुलसुधाकल्पद्रुमे श्रीकालीकुलसुधाकल्पलतायां श्रीकालीकुलसुधाकल्पवल्लीषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पशाखासु श्रीकालीकुलसुधाकल्पपल्लवेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पपुष्पेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पफलेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पबीजेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पमूलेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पकन्देषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पनालेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पपत्रेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पपुष्पेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पफलेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पबीजेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पमूलेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पकन्देषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पनालेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पपत्रेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पपुष्पेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पफलेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पबीजेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पमूलेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पकन्देषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पनालेषु श्रीकालीकुलसुधाकल्पपत्रेषु ॥

ཀྱི་ཚེ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ནང་ན་ཡོད་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས

ཀཱཡ་ཀཱཡ་ཀཱཡ་

ལས་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མེད་ན

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཀ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིས་ཀུན་ཏུ་རྟོག་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་དུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །

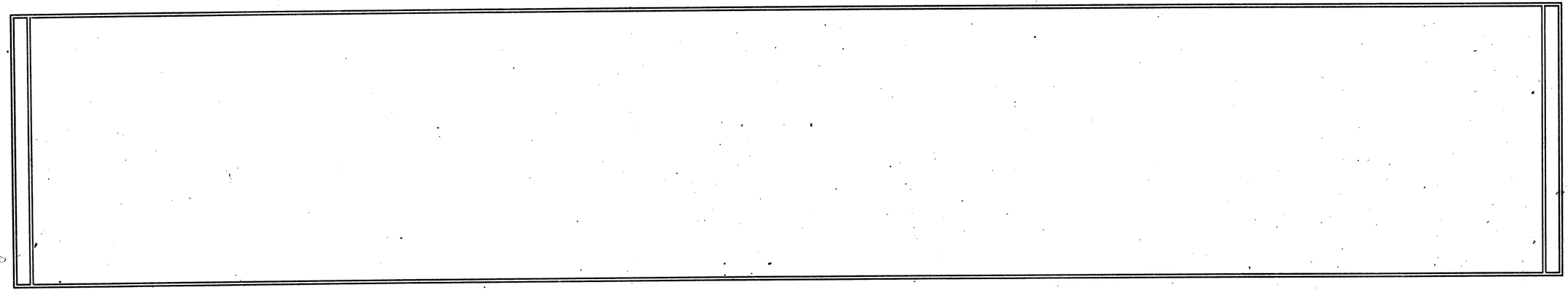

ཀཱཏྱཱཡནཱིཡཱཏཱ། ཨཱཡུཥྨཱནཱནནྡཿཀཱཏྱཱཡནཱིཡཱཏཱ། སུབྷདྲཱཡཱཿཀཱཏྱཱཡནཱིཡཱཏཱ། ཨཱཡུཥྨཱནཱནནྡཿཀཱཏྱཱཡནཱིཡཱཏཱ།

ཐུབ་པའི་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་དུ་ཐམས་ཅ

ཨོཾ་སྭཱ་ཧཱ་ཀཱ་ལཱ་ཡ་ཨ་ཀཱ་ལ་ཡཱ་ཨ་ཀཱ་ལ་ཡཱ་ཨ་ཀཱ་ལ་ཡཱ

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ ◆ ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ ◆ ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་ལེའུར་བྱས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚིག་ལེའུ

ཀྱི་ཡང་ཡང་ཕྱག་བྱས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྟན་ཏོ།།
ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྟན་ཏོ།།

॥ ५ ॥ ग्रन्थाग्रं ॥ ग्रन्थाग्रं ॥ ग्रन्थाग्रं

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཡང་དག་པར་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན

ཀྱི་ཀྱི་དང་། གཞན་ཡང་ཁྱོད་ཀྱི་ཁྱོད་ཀྱི་ཁྱོད་ཀྱི

ཡིངཀིཏཱུནཱལཱལཱཧཱུནཡཱཀཱཤཱཡཾཡཱམི། གཏཡཱཡཱཏཱཡཱཀཱཡཱཡཱཧཱུཾཏཱལཾ།། ।। རཱཏྲིཡཱཏེཡཱཏེཡཱཧཱུཡཱཀཱིཏཱནཱུཏཱཡཱཡེ།། སྲིཡཱཡཱིཡཱཏེཡཱ
སྲིཡཱཡེཡཱཏཱ། ཏཡཱཧཱུཡཱིཡཱཏཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཡཱཀཱཤཱལཱ། རཱཏྲིཡཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཡཱཏཱཡེཡཱཡེ། ཡིཏཱཏཱཏཱཡཱཏཱིཡཱཡཱཏཱཡཱཀཱཤཱཡཱ། རཱཏྲིཡཱཏཱཡཱཧཱུ
ཡིཏཱིཡཱཡེཏཱཡཱཡཱཧཱུཡཾ། ཡཱཡཱཡཱིཡཱཧཱུལཱཏེཡཱཡེཏཱཡཱཡེཏཱཡཱཧཱུཡཱཏཱཀཱཤཱཡཱིཡཾ། ཧཱཏེཡཱཡཱཡཱཧཱུལཱཡཱཏཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཀཱཤཱཡཱིཡཾ། ཏཱཧཱུཡཱཏེཡཱཏེཡཱཡཱཀཱིཏཱུ
ལཱ། ཧཱུཡཱཏཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཏེཡཱ །ཀཱཧཱུཡཱིཡཱཏཱཧཱུཡཱཏེཡཱཡཱཡཱཡཱ། ཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཀཱཤཱཡཱ། ཏཡཱཡཱཏཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཏཱ
ནཱུཡཱ། ཏཡཱིཏཱཡཱཡཱཏཱཡཱཧཱུལཱཡཱིཏཱནཱུཏཱཡཱ། ཀཡཱིཏཱཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཀཱིཡཱཧཱུཡཱ། ཏཡཱཧཱུཡཱཀཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཡཱཀཱཤཱཡཱ། ཏཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཀཱིཏཱུ
ལཱ། ཏཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཀཱཡཱཡཱཧཱུཡཾ། ཏཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཀཱཡཱཡཱཧཱུཡཱཏཱཀཱཤཱཡཱིཡཾ། ཡིཏཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཀཱིཏཱུལཱཏེཡཱ། ।। ཧཱུཡཱཏཱཧཱུཡཱཏཱཡཱཏཱཡཱཀཱཤཱཡཱིཡཱཧཱུཡཱཏཱཡཱ།

ཀྱི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕུང་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡིན་ཏེ། རྣམ་པར་གྲོལ་བ

ཀུན་གྱི་སྐྱེ་བོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐོབ་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་བསྟན་པ་ཡིན་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་

ꣳ ꣳ ꣳ

।ॐनमोभगवतेवासुदेवायनमः। ॐनमोभगवतेवासुदेवायनमः। ॐनमोभगवतेवासुदेवायनमः। श्रीगणेशायनमः।
अथश्रीमद्भागवतमहापुराणप्रारभ्यते। तत्रादौमङ्गलाचरणंशौनकादयऊचुः। सूतसूतभद्रंवःकथयास्मदभीप्सितं।
कस्मिन्युगेप्रवृत्तेयंकस्मैकेनचवाकृता। कोवायुष्मत्परोलोकेकोवाऽस्मत्पूर्वउच्यते। कतिवर्षाणिसत्तेषांकेषांवा
पुरुषायुषं। वर्तमानेयुगेकेनकथंवाकालोगतः। भूमेर्भागवतंस्थानंकिंवाऽस्यप्रतियोजनं। एतत्सर्वंयथापृष्टंवक्तुमर्हसि
विस्तरात्। सूतउवाच। यंप्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं। द्वैपायनोविरहकातरआजुहाव। पुत्रेतितन्मयतयातरवोऽभिनेदुः।
तंसर्वभूतहृदयंमुनिमानतोऽस्मि। यंवैसमक्षमहमाम्रफलानिनीनं। रन्तुंगतंविविधबालकसेवनाढ्यं। व्यासेतिपुत्रकवचस्तमुपाददानं।
तंसर्वभूतहृदयंमुनिमानतोऽस्मि। यंस्त्रीद्विजद्विषइहेतिभवन्तमार्याः। वक्तारमात्मभवमप्यनपत्रपन्ते। वर्णाश्रमानवितथान्
गृणतेऽनुरूपं। तंसर्वभूतहृदयंमुनिमानतोऽस्मि। यंवैदशाननिधनायसुरैरनन्तं। देवंवृतःकपिशतैःकिलकोसलेन्द्रः।
रामेतिनामभिरनुस्मरतोऽनुरागं। तंसर्वभूतहृदयंमुनिमानतोऽस्मि। यंवैदशाननिधनायसुरैरनन्तं। देवंवृतःकपिशतैःकिलकोसलेन्द्रः।
रामेतिनामभिरनुस्मरतोऽनुरागं। तंसर्वभूतहृदयंमुनिमानतोऽस्मि। यंवैदशाननिधनायसुरैरनन्तं। देवंवृतःकपिशतैःकिलकोसलेन्द्रः।

ཀུན་ཏུ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་མངོན་པར་རྫོགས་པར་རབ་ཏུ་བྱུང་ཞིང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་མཐའ་དག་ཏུ་ཡང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྒྱུད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི

॥ ॥

ब्रह्मादयो विविधनामभिरीहमानास्तत्तत्कृतान्यनुयुगं खलु शास्त्रसेतून् ।
नाम्नां तु तेऽपि परमं वदन्त्यनन्तं नामानुरूपगुणकर्मनिबन्धनानि ॥ ३ ॥
तस्मात्त्वमुत्तमयशो भगवत्प्रियाणां
नामानि तीर्थजनपावनकीर्तनानि ।
नित्यं गृणन्ननुभवन्परितुष्टचेता
नारायणे भगवति प्रवणं करोषि ॥ ४ ॥
एतावतालमघनिर्हरणाय पुंसां
सङ्कीर्तनं भगवतो गुणकर्मनाम्नाम् ।
विक्रुश्य पुत्रमघवान्यदजामिलोऽपि
नारायणेति म्रियमाण इयाय मुक्तिम् ॥ ५ ॥

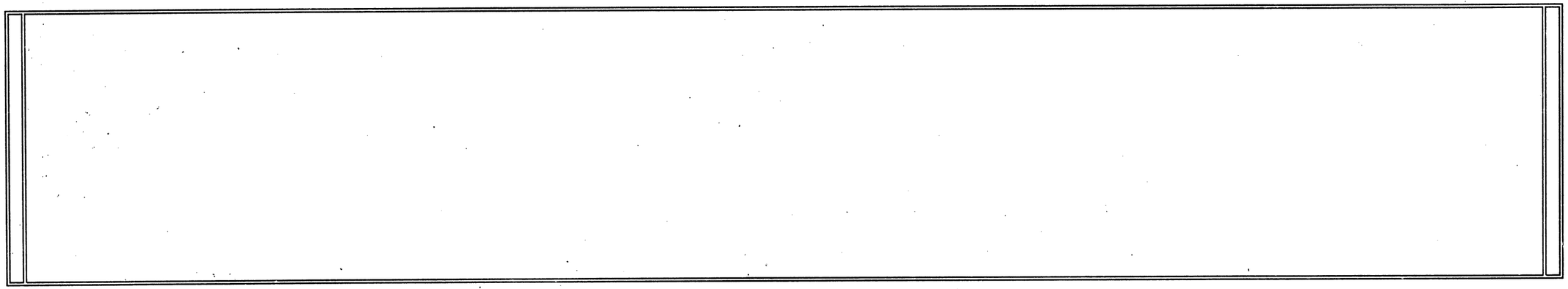

॥ ཞེས་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཐོབ་པ་ལ་སོགས་པའི་ཆོ་ག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་སོ་॥

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཤེས་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཏེ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་ཁ་ན་མ་ཐོ་བ

ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས

ཐུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ཏེ།

॥ ॥ ॥

ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །མཐའ་དཔྱོད་པོ་མཐའ་ཡོད་མཐའ་མེད་པར་རང་བའོ། །དགེ་བའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ཀུན་ཏུ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །དགེ་བའི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ལུང་མ་བསྟན་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ཀུན་ཏུ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ལུང་མ་བསྟན་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ཀུན་ཏུ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ལུང་མ་བསྟན་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ཀུན་ཏུ་ཉོན་མོངས་པ་ཅན་གྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །ལུང་མ་བསྟན་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ལུས་མཐའ་དཔྱད་པའོ། །

ཤེས་ རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཐ་ཚིག་ཏུ་ཡང་དག་པར་ཞུགས་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང

ཡུལ་ཁོ་ནས་ཤེས་པ་ལས་མིན་ཏེ། ཐོག་མེད་པའི་དུས་ནས་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་སྨྲས་པ་ནས་ཤེས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ཀོ། རྒྱུ་མིན་པ་མེད་ཅིང་རྐྱེན་ནས་ཀྱང་སྐྱེ་བ་མེད་དེ། རྒྱུ་དེ་ཡང་རྒྱུ་ལས་སྐྱེ་བ་ཡིན་ཏེ་དེ་ལྟ་བས་ན་རྒྱུ་ཡང་རྒྱུ་ཉིད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
པས་ཤེས་པའི་ཡུལ་ཡིན་ལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐོག་མེད་པའི་
དུས་ནས་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ལས་མིན་ཏེ། ཐོག་མེད་པའི་དུས་ནས་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་སྨྲས་པ་ནས་ཤེས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཡིན་ཏེ། རྒྱུ་མིན་པ་མེད་ཅིང་རྐྱེན་ནས་ཀྱང་སྐྱེ་བ་མེད་དེ། རྒྱུ་དེ་ཡང་རྒྱུ་ལས་སྐྱེ་བ་ཡིན་ཏེ།
མེད་པ་ཉིད་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཡིན་ལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་

ཐུབ་པའི་ཚེ་ཡིད་ཀྱི་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡང་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཇི་ལྟར་ཡང་ཡིན་ཞེ་ན། ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀྱང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ནོ་ཞེས་བཀའ་སྩལ་ཏོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། །

ཀུ་ཏཱ་ཡ་ཨ་ཏྭ་ཡ་ཨ་ཏྭ་ཡ་ཨ་ཏྭ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཏེ། ཞེས་གསུངས་པ་ལྟར་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཏེ། རྒྱལ་བའི་སྲས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཏེ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ

ལས་འཁོར་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོ་ག་ཐོག་མར་བྱ་བ་ཡིན་ནོ།། ཇི་ལྟར་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད

ཀུ་ཤ་ཀུ་ཤ་ཡེ་ཡེ་ཀི་ཀི་ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ། ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ་ཀུ་ཀུ་ཡེ་ཡེ་ཀོ་ཀོ་ཡེ་ཡེ། ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ་ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ་ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ། ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ་ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ་ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ།

ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ་ཀཱ་ཀཱ་ཡེ་ཡེ་ཀཱ་ཀཱ

ཡིན་ ། དགེ་སློང་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ཁྱོད་ལ་གནོད་པ་ཡོད་དམ་ ། ཁྱོད་ལ་གནོད་པ་ཡོད་ན་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ཁྱོད་ལ་གནོད་པ་ཡིན་ ། དེ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཀྱང་ཁྱོད་ལ་གནོད་པ་ཡིན་ན

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་སྤྱོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ།།

།།ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོའི་སྤྱོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་

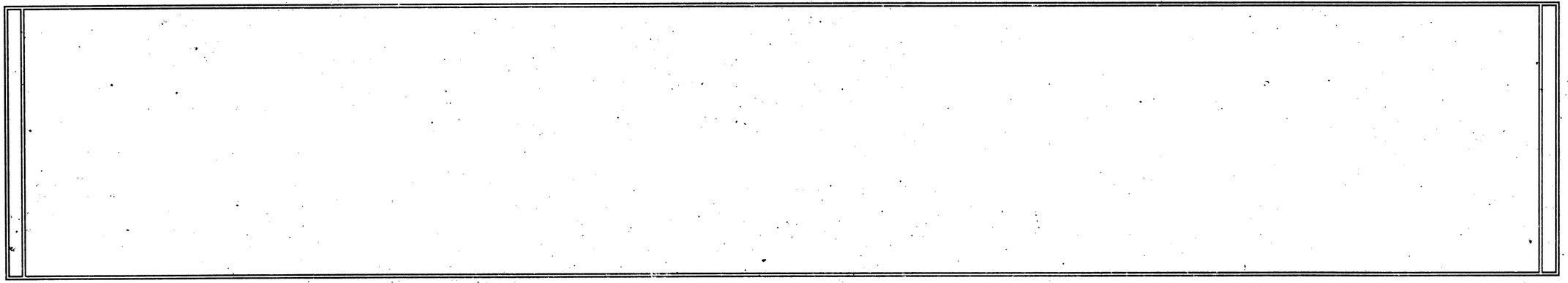

ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཏེ། ཡུལ་ཅན་ཡིན་ན་ཡང་

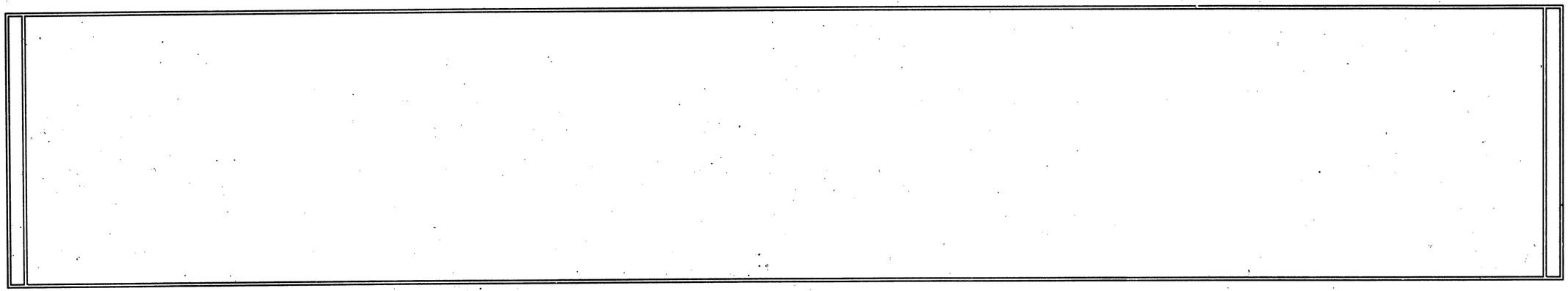

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཤིན་ཏུ་རྒྱ་ཆེ་བ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཐ་དམར་ན་ཡོད་པ་ཡ

ॐ ॥ ॥ ॥

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཙཱ་ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཙཱ་ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཙཱ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་དང་ཐ་མི་དད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡི་ངང་ལས་ཀྱང་ཕྱིར་མི་ལྡོག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་མདོ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྐུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་རྟེན་ཅིང་འབྲེལ་བ་ཡིན་ཏེ།

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པ་དང་། ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཐོབ་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་སྒོ་ཐོབ་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཐོབ་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ་དང་། ཆོས་ཀྱི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐོབ་པ

ཤེས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཀྱང་། གཞན་དོན་ཐོག་ཏུ་ཤིན་ཏུ་རྩལ་ཆེ་བ་ཡིས། གཞན་ཡོངས་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་ཤེས་པ་ཡི། ཡུལ་ལ་ཤིན་ཏུ་ཡང་དག་ཤེས་ཏེ་ཡང་། ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཡིས་ཡུལ་ཅན་ཡིན

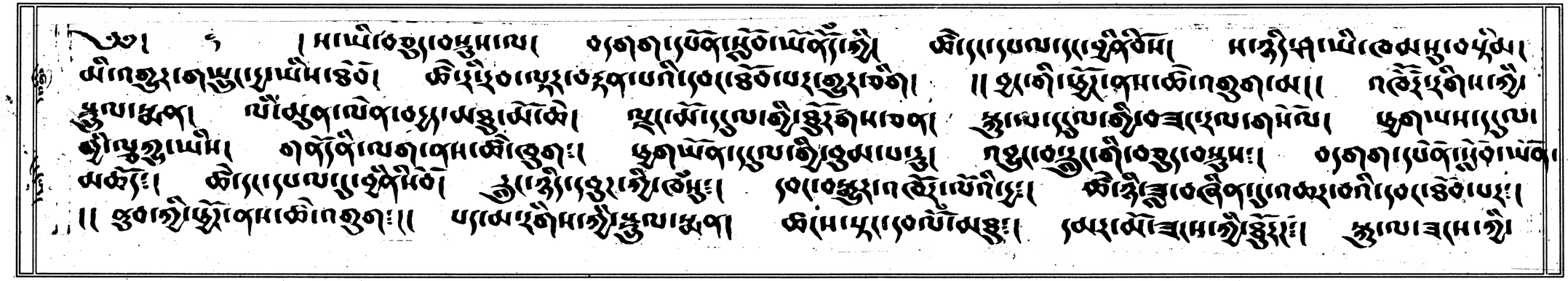

ཅན་ཡིན་ལགས་སོ། ཁྱེད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་སྨྲས་པ་ལྟར་ཡིན། སྐྱེས་བུ་ཁྱོད་ཀྱི་ཚིག་ཀྱང་། ཁྱོད་ཀྱི་བཅས་པ་ཡང་ཡིན་ཏེ། དགེ་སློང་ཁྱོད་ཀྱི་ཚིག་ཀྱང་། ཁྱོད་ཀྱི་བཅས་པ་ཡང་ཡིན་ཏེ།

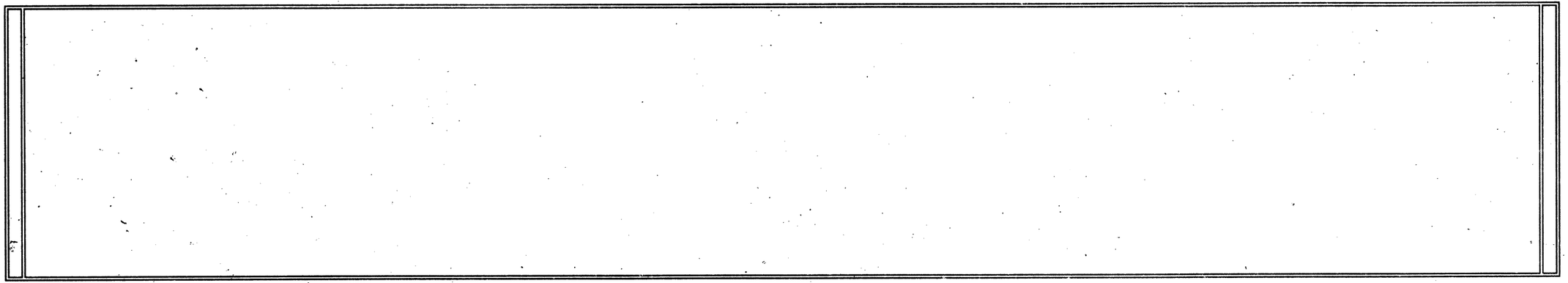

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཱཿཧཱུྃ

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཛཿཧཱུྃ་བཾ་ཧོཿ།

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ

ཀཀཀ།

ཀཀཀ

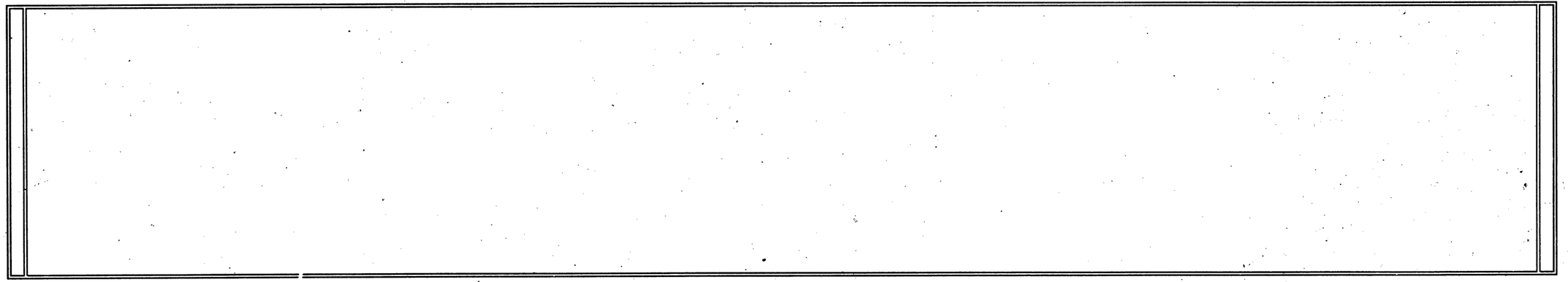

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་

ཨཱཿཧཱུྃ། ཤེམོ་ཁྱོ་ཨེའུ་ཀི་ཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ།
ཨཱཿཧཱུྃ། ཤཱཀྱཱ་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿ
ཨཱཿཧཱུྃ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿ
ཨཱཿཧཱུྃ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿ
ཨཱཿཧཱུྃ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿ
ཨཱཿཧཱུྃ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿ
ཨཱཿཧཱུྃ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿ
ཨཱཿཧཱུྃ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཀྲཱིཾཀྲཱིཿཨཻ་ཤཱིཡཱ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨཻ་ཤཱིཡཱ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿ

ཀཱ་ལཱ་ཡ་ཨ་ཀཱ་ལཱ་ཡ་ཨ་ཀཱ་ལཱ་ཡ་ཨ་

།།ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཐུན་མོང་གི་ལམ་ལས་འདས་པའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ།།

ཀྱི་ཡི་ཀེ་ཀོ་ཀཱ་ཀཱི་ཀུ་ཀཱུ་ཀྲུ་ཀཱྲཱུ་ཀླུ་ཀཱླཱུ་ཀེ་ཀཻ་ཀོ་ཀཽ་ཀཾ་ཀཿ ཁཱ་ཁཱི་ཁཱུ་ཁཱྲཱུ་ཁཱླཱུ་ཁཻ་ཁཽ་ཁཾ་ཁཿ ཀ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཀཱཡ་ཀཱཡ་ཀཱཡ་

ཀུན་བཟང་སྨོན་ལམ་གྱི་རྒྱལ་པོ་ལས་ཀྱང་ཇི་སྐད་དུ་བཤད་པ་ལྟར་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་

॥ ३७ ॥ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्गोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यश्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ

ཀ་ཀ་ཀ་

ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀེ། ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀོ། ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀཱུ། ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀྲཱུ། ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀླཱུ། ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀྲཱུ། ཀུ་ཀུ་ཀུ་ཀླཱུ།

རབ་འབྱམས། སྐུ་ཁམས་ཀྱི་ཁམས་ཀྱང་། ། རེ་ལོ་ཡོལ་བ་མེད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཡིས། ཐུབ་མཆོག་ཁྱོད་ཀྱི་མཁའ་ཁྱབ་ཏུ། གོ་ཆོད་ཀྱི་ཆོད་ཀ་
ཁྱབ་ཀྱང་མཁའ། ཤུགས། ཤུགས། མཁའ། གོ་ཡོལ་ཆོད་ཀྱི་ཡོལ་ཁའོ།། གོ་ཡོལ་གོད་ཀྱི་ཡོལ་ཁའོ།། གོ་ཡོལ་ཆོད་ཀྱི་ཡོལ་ཁའོ།། རྐུ་ཁ་རྐུ་ཁ་ཆེ་ཆེ་ཆུ་ཆེ་ཆུ་ཆེ། །ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་ཆོ། ། རེ་ལོ་ཡོལ་བ་མེད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཡིས། ཐུབ་
ཁྱབ་ཏུ་ཁྱབ་ཀྱང་མཁའ་ཁྱབ་ཀྱང་མཁའ། གོ་ཆོད་ཀྱི་ཆོད་ཀ་ཁྱབ་ཀྱང་མཁའ། ཤུགས། ཤུགས། མཁའ། རེ་ལོ་ཡོལ་ཁའི་ཡོལ་ཁའམ་ཆོད་ཁའི་ཆོད་ཁའམ། ཁམས་ཁམས་ཆེ་ཁམས་ཆེ། ཁམས་ཁམས་ལྡན་ཁམས་ལྡན། ཁམས་ཁམས་ལྡན་ཁམས་ལྡན། །ཤཱཀྱ་ཐུབ་པའི་ཆོ། ། ཡོལ་ཆུ་ཡོལ་ཆུ་མཆོག། ཁྱོད་ཀྱི་ཁམས་ཁམས་ཆོག། ཁྱོད་ཀྱི་ཆོད་ཁམས་ཆོག། ཁྱོད་ཀྱི་ཆོད་ཁའོ་ཆོག། ཁྱོད་ཁམས་ཁའི་ཁམས་ཁའོ། ཤུགས་ཀྱ།

ཤཱཀྱཱ་ཡ་ཏ་ཡཱ་ཡ་ཏ་ཡཱ་ཡ་ཏ་ཡ

ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཀྱི་ཐོག་ཏུ་ཤར་བ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་ཟེར་ཏེ་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་ཀ་ནས་ཡིད་ཀྱི་ཐོག་ཏུ་ཤར་བ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་ཟེར་ཏེ་ཐུགས་ཀྱི་ཐུགས་ཀ་ནས་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཏ་ཝཱ་ཡ་ཨ་ཧཾ་ཀཱ་ར་ཨ་ཧཾ་ཀཱ་ར་ཨ་ཧཾ་ཀཱ་ར

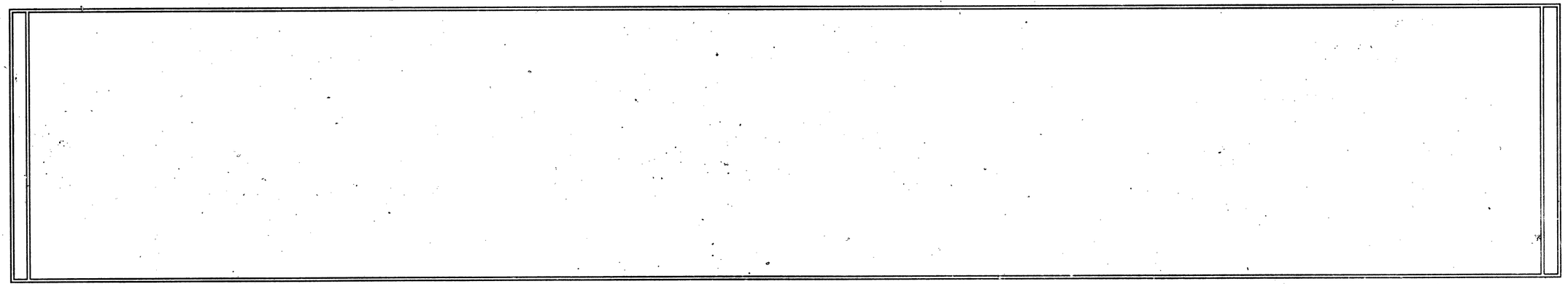

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཀཱཡཱ། ཨཱཀཱཤཱ། ཨཱཀཱཤཱ། ཨཱཀཱཤ

॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥

ཐ། ཐམ་པའི་ཚེ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་སྙད་ཐམས་ཅད་ཐམ་པ་ཡིན་ནོ། །ཐ་ན་ཐལ་བ་ཐོབ་པའི་ཚེ་ཐལ་བ་ཐོབ

ཨཱཿ ཧཱུྃ ཨོཾ ཨཱཿ ཧཱུྃ ཨོཾ ཨཱཿ ཧཱུྃ ཨོཾ

ཀྱི་བཞིན་ལས་ལས་བྱེད་པ་ཡིན་ནོ། ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ལུས་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཡིན་ནོ། ། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ལུས་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པ་ཡིན་ནོ། ། ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅི་ཞེ་ན། ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ནི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ། ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཁྱད་པར་ཅི་ཞེ་ན། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཀ

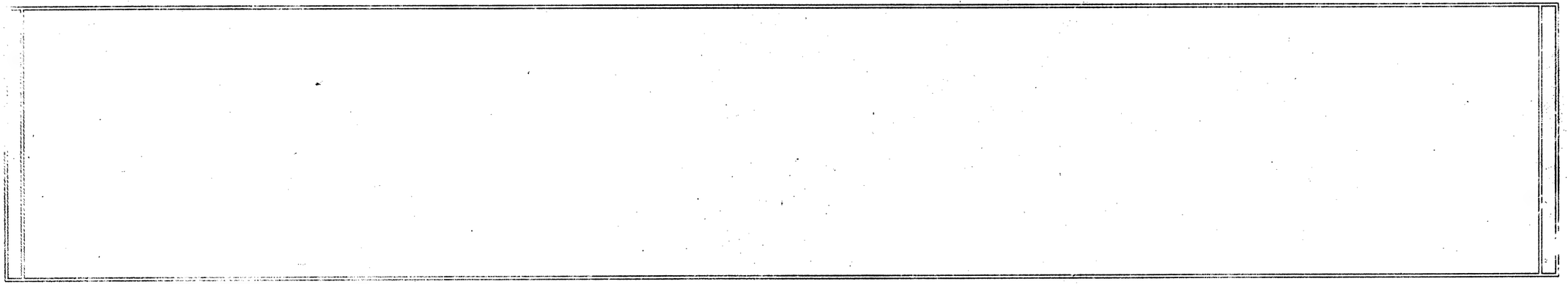

ཀཱ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ

ཀྱེ་ལེ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཁྲོ་བོ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐུགས་བཅའ་བའོ། ཤུམ་ཤུ་ཀྲ་ཡིག་ཅོམ་རྒྱུ་བོ་ཅེ། ཤུ་ཀྲ་སྐུ་ཁྲོ་གྲུ་ཀའི་
བཀའ་རྒྱུ། ཤུམ་ཞེས་ཀྱང་ཡང་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཤུ་མ། ཤུ་ཀ་ནི་ཁྲོ་བོ་ཤུ་ཀ་ཀྲ་ལེ། ཤུ་ཀ་ནི་ཁྲོ་བོ་ཤུ་ཀ་ཀྲ་ལེ་ཞེས་ཀྱང་ཡང་། ལས་ཀྱི་
ཚེ་རྟག་ཏུ་ཁ་ནང་ཁྲུག་པ། ཡི་ཤེ་གཅིག་པོ་འཁྲུག་པས་ཆེ་ཞེས། ཞབས་ཀྱི་ཁྲོ་བོ་ཁྲོ་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐུགས་བཅའ་བའོ། ཤུ་ 45
ཡིག་ཅོམ་རྒྱུ་བོ་ཅེ། ཤུ་ཀྲ་སྐུ་ཁྲོ་གྲུ་ཀའི་བཀའ་རྒྱུ། ཤུ་ཞེས་ཀྱང་ཡང་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཤུ་ཀ། ཤུ་ཀ་ནི་ཁྲོ་བོ་ཤུ་ཀ་ཀྲ་ལེ། ཤུ་
ཀ་ཞེས་ཀྱང་ཡང་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཤུ་ཀ་ཀྲ་ལེ། ལས་ཀྱི་ཚེ་རྟག་ཏུ་ཁ་ནང་ཁྲུག་པ། ཡི་ཤེ་གཅིག་པོ་འཁྲུག་པས་ཆེ་ཞེས། ཞབས་ཀྱི་
ཁྲོ་བོ་ཁྲོ་ཀྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་ཐུགས་བཅའ་བའོ། ཤུ་ཀྲ་སྐུ་ཁྲོ་གྲུ་ཀའི་བཀའ་རྒྱུ། ཤུ་ཞེས་ཀྱང་ཡང་། ཤ་ཁ་ཅིག་

ཀུན་ཏུ་བྱེད་པ། ཕྱོགས་ནམ་མཁའ་ཁྱབ་པ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན། ཤིན་ཏུ་ཆུང་ངུ་ཡང་མ་ཡིན། ཤིན་ཏུ་རྒྱ་ཆེ་ཡང་མ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ནོ།། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་

ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་ཨོཾ་

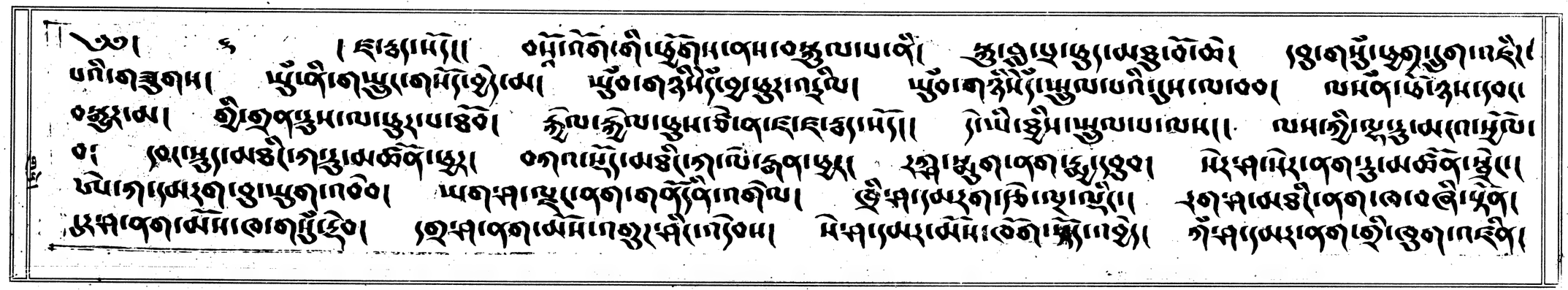

ཀ་ཀ་ཀ་

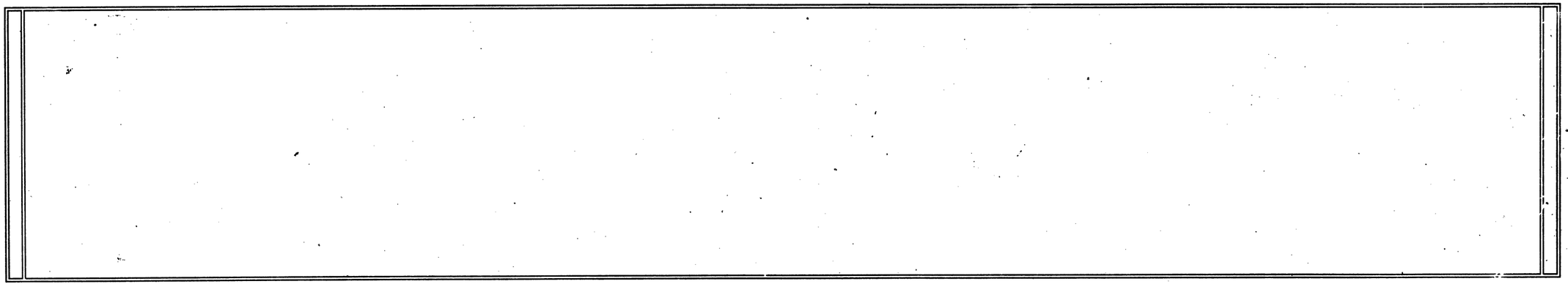

།།དཔལ་ཆེན་ཕོ་བྲང་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་ཆོས་ཀྱི་ཁྲི་ཆེན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ

ॐ ॥ ३३ ॥ वामाङ्गीवदनाब्जवीक्षणविधौ वाग्वादिनी वाङ्मयं
वक्षोजाम्बुजयोर्युगं वरतनुर्वाणी वरं वाञ्छितम् ।
वल्लीवल्लकिवादनं वसुमती वाराहिवाराहयो-
र्वाचं वाचकवाच्यवाचनविधौ वाग्वादिनी वाङ्मयम् ॥

ॐ ॥ ३४ ॥ विद्यां विद्युदवद्युतिं विदधती विद्याधरीविद्यया
विद्वद्वन्द्यपदाम्बुजा विदलिता विद्वेषिणी विद्विषः ।
विद्याविद्यविभेदिनी विजयिनी विद्यावतीविद्यया
विद्यां विद्यविभेदिनी विजयिनी विद्यावतीविद्यया ॥

ॐ ॥ ३५ ॥ शुद्धां शुद्धविशुद्धशुद्धविशदां शुद्धाशुभध्वंसिनी
शुद्धाशुद्धविशुद्धशुद्धविशदां शुद्धाशुभध्वंसिनी ।
शुद्धाशुद्धविशुद्धशुद्धविशदां शुद्धाशुभध्वंसिनी
शुद्धां शुद्धविशुद्धशुद्धविशदां शुद्धाशुभध्वंसिनी ॥

ॐ ॥ ३६ ॥ षट्कर्मप्रतिपादिनी षडुदरी षट्कोणपीठस्थिता
षट्कर्मप्रतिपादिनी षडुदरी षट्कोणपीठस्थिता ।
षट्कर्मप्रतिपादिनी षडुदरी षट्कोणपीठस्थिता
षट्कर्मप्रतिपादिनी षडुदरी षट्कोणपीठस्थिता ॥

ॐ ॥ ३७ ॥ सर्वज्ञा सकलेष्टदा सकलदा सर्वेश्वरी सर्वदा
सर्वज्ञा सकलेष्टदा सकलदा सर्वेश्वरी सर्वदा ।
सर्वज्ञा सकलेष्टदा सकलदा सर्वेश्वरी सर्वदा
सर्वज्ञा सकलेष्टदा सकलदा सर्वेश्वरी सर्वदा ॥

ॐ ॥ ३८ ॥ हंसारूढरथा हयाननमुखी हंसाक्षमालाधरा
हंसारूढरथा हयाननमुखी हंसाक्षमालाधरा ।
हंसारूढरथा हयाननमुखी हंसाक्षमालाधरा
हंसारूढरथा हयाननमुखी हंसाक्षमालाधरा ॥

ॐ ॥ ३९ ॥ क्षेत्रज्ञा क्षयवृद्धिनाशरहिता क्षेत्रेशविद्यामयी
क्षेत्रज्ञा क्षयवृद्धिनाशरहिता क्षेत्रेशविद्यामयी ।
क्षेत्रज्ञा क्षयवृद्धिनाशरहिता क्षेत्रेशविद्यामयी
क्षेत्रज्ञा क्षयवृद्धिनाशरहिता क्षेत्रेशविद्यामयी ॥

ॐ ॥ ४० ॥ ज्ञानज्ञेयविभेदिनी त्रिनयना ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा
ज्ञानज्ञेयविभेदिनी त्रिनयना ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा ।
ज्ञानज्ञेयविभेदिनी त्रिनयना ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा
ज्ञानज्ञेयविभेदिनी त्रिनयना ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा ॥

Bhandarkar Oriental Research Institute

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།། རྒྱལ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱན་རས་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལས་བཏུས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཀུན་ལས་བཏུས་པ་རྫོགས་སོ།། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ

ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལ་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡང་ཐེ་ཚོམ་ཟ་བ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཟེར་རོ། །

ཀྲི་ཀྲི་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ལོ་པཱ་ཡཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏཱ་ཏ།། ཀྲི་ཏཱ་ཡཱ་ཏ

ཀུ་ཏཱ་ཡ་ན་ཀ་ཏ་ཡ་ཏ་ཡ་ཏ་ཡ

ꣳ ꣳ ꣳ

ཀཱཾ ཀཱཾ ཀཱཾ

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལས་སྤྲུལ་པའི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱ

ཅེ་ཅ་ལ། ཚེ་ཐུབ་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་ཅེ་ན། ཕུན་ཚོགས་ཀྱི་གཞལ་ཡས་ཁང་དུ་ཞེས་སོགས་ཏེ། ཐུབ་ཆེན་གྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་བསྐོར་བ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་ཟེར་བ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ཐུབ་ཆེན་ག

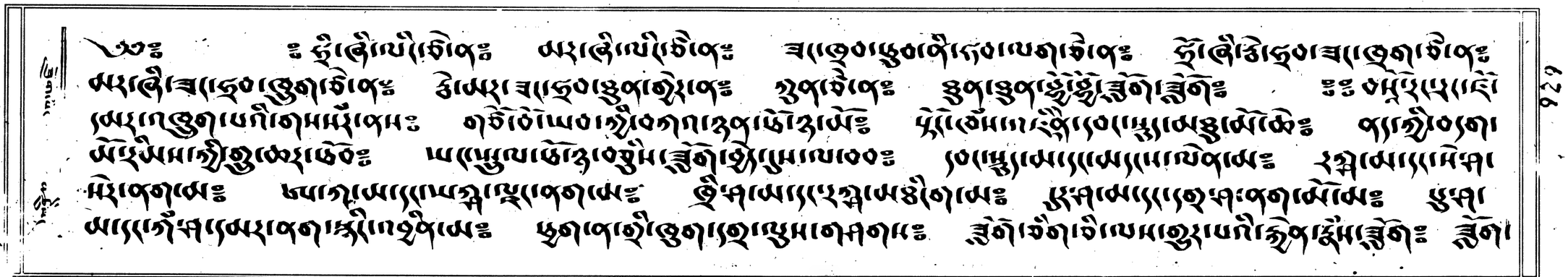

ཅིག་ཨེ་ཝཾ་ཡིག་ཀྱི་ཀ་ཅིག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁོ་ནས་ཤེས་ཏེ་གཞན་ཁོ་ནས་ཁོ་ནས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཀཱ་ཨེ་ཝཾ་ཡིག་ཀྱི་ཀ་ཅིག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁོ་ནས་ཤེས་ཏེ་ཁོ་ནས་ཁོ་ནས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁ་ཨེ་ཝཾ་ཡིག་ཀྱི་ཀ་ཅིག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁོ་ནས་ཤེས་ཏེ་ཁོ་ནས་ཁོ་ནས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁཱ་ཨེ་ཝཾ་ཡིག་ཀྱི་ཀ་ཅིག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁོ་ནས་ཤེས་ཏེ་ཁོ་ནས་ཁོ་ནས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཀཱ་ཨེ་ཝཾ་ཡིག་ཀྱི་ཀ་ཅིག་ལས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁོ་ནས་ཤེས་ཏེ་ཁོ་ནས་ཁོ་ནས་ཤེས་པར་བྱའོ།། ཁ

ཨོཾ་ ཨཱཿ ཧཱུྃ་ བཛྲ་ཀྲོ་ཥ་ཧཱུྃ་ ཛཿ་ཧཱུྃ་ བཾ་ཧོཿ་ ཨཱཿ་ཧཱུྃ་

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ལོངས་སྤྱོད་ལྡན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི། རྫུ་འཕྲུལ་གྱི་རྟ་ལ་སོགས་པ་ཡོད་པ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་རོ།། ཁོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་བཞུགས་སོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། ཁོ་བོ་ཉིད་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་བཞུགས་སོ་ཞེས་བྱ་བ

ཀཱ། ཅ ། ཀུམཱརཱིཔཱུཛཱཝིདྷཱནཾ། ཨཐཱནཱགཀུམཱརཱཡཱཔི ཨེཝམེཝ ཀཱརཱཔཡིཏབྦཾ། ཀཱརཱཔེཏྭཱ ཙ པུནཔྤུནཾ ཨཱགནྟྭཱ ཨཱཡཱཙནཔཊིཡཱཙནཱདཱིནི ཀཏྭཱ ཨཱཙཱརཾ སིཀྑཱཔེཏྭཱ ཨཱཙཱརཾ སིཀྑཱཔེནྟེན ཨཱཙཱར

Image

Image

ཀཀོ་ལྷུ་ཡུ་ཡེ་ཐུ་ལོ། ཡིས་ཏེ་ཁེ་ཀོ་ཡུ་ཏེ་ཀ་ཡ་ཁེ་ཀེ་ལེ་ཀོ་ཏེ། ལྷ་ཏེ་ཁེ་ལེ་ཨ་ཀྱི་ཡུ་ཨ་ལེ་ཁེ་ཁ་ལོ། ལྷ་ཏེ་ཁེ་ཀ་ཡ་ཏེ་ཁ་ལེ་ལྷ་ཏེ། ལྷ་ཏེ་ཁུ་ཡ་ཡེ་ཀོ་ཡུ་ཁེ་ཁ་ཡེ་ཏེ། རྒྱ་ཨ་ཡེ་ཨ་ཀོ་ཡེ་ཡེ་ཁ་ཡེ་ཨ་ཏ་ཨ། ཨ་ཐ་ཏེ་ཁེ་ཁེ་ཀ་ཡ་ཁ་ཁེ་ཀ་ཨ་ལོ། ཡུ་ཁ་ཡེ་ཁ་ཡེ་ཀ་ཡ་ཁེ་ཁ་ཡེ་ཁ་ཁེ་ཁེ། ཡུ་ཁ་ཡེ་ཁ་ཡེ་ཁ་ཡ

ཅེས་ ། ཨོཾ་ཨོཾ་ཨོཾ་

ཐན་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ། རྟག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀུན་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ནི་ཚིག་ཏུ་བྱ་བ་ཡིན་ནོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱིར་ཏེ་ཞེས་བྱ་བ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏྟ་ཨཱ་ནཱ་ཡ་ཀ

ཡང་ཁོ་ནས་ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། ཤེས་པ་ཁོ་ནས་ཡང་ཡིན་ནོ། ཤེས་པ་ཁོ་ནས་ཡང་མིན་ནོ། ཤེས་པ་ཁོ་ནས་ཡང་མིན་ནོ། ཤེས་པ་ཁོ་ནས་ཡང་ཡ

॥ ७ ॥ ॥ अथैमाधुर्यमालोक्यात्मानुभूत्या ॥ अवतारानीक्षमाणोऽक्रूरस्तुष्टाव ॥ अमाप्तानीक्षेशालोक्यानुभूत्या ॥ त्यक्ता
ज्ञात्वेशालोक्यानुभूत्या ॥ मोक्षमाप्तमक्रूरमाप्तालोक्ये ॥ ज्ञात्वाक्रूरप्राप्तमाप्तालोक्यालोक्ये ॥ वक्तेमुद्धाप्तमाप्तस्तुत्यवक्तः
गाधिकाप्तानुनीक्षाप्तिक्षेत्रेशालोक्यवक्तः ॥ मुद्धाप्तानुप्राप्तमाप्तानाप्तमुक्तः ॥ शोक्तालोक्तेनीक्षेक्षाप्तेः ॥ शिक्षुवाप्तालोक्तेनीक्षेशानक्षेत्रेशाक्षेः ॥ क्षे
मक्तेनीक्षाप्तावाप्तानाप्तमाधिक्तः ॥ मुद्धाक्षेत्रेवाप्तुवाक्तेधिक्तालेमाप्तालोक्तेः ॥ माक्तेक्षेक्तेवक्तमाप्तालोक्तेवाक्तेवक्तमाक्तवाक्तेः ॥ मुक्ता
धनीक्षुवाक्तेक्षेत्रेवाक्षेशाक्षेत्रवक्तेक्षेः ॥ शिक्षुवाक्तेमेत्रेमाक्तेक्षेधालोनुक्तेवक्तेमालेः ॥ मुक्तालेक्षुवक्तेक्षेत्रेवमाक्षेत्रवालेमक्तेः ॥ क्षेत्रा
क्षेत्रालेक्षेमाक्तेमेमाक्षेत्रुवाक्षुलाक्तेवः ॥ शिमेक्षुवालेनीक्षेत्रेक्तेधिक्षेनालेक्षुवालेः ॥ वक्तेवाक्तेशिक्तेमेत्रेवनीक्षेनवक्तालेक्षुवालेनीक्तेः ॥ क्षुवा

॥ ३७ ॥ ॥ त्रयोदशोऽध्यायः ॥ मुनयोऽपृच्छन्नथोत्पत्तिं मुनेर्भार्गवजन्मनः ॥ मुनिरुवाच ॥ ॥ शृणुध्वं मुनयः सर्वे
पवित्रं भार्गवं चरित्रं ॥ पुरा किल महाबाहुर्हैहयो नृपतिर्महान् ॥ आखेटकमुपागच्छद्वनं मृगगणावृतम् ॥ ददर्श
पतितं तत्र ॥ ऋचीकं मुनिपुंगवं ॥ तं च नत्वाऽब्रवीद्भूपो भगवन्नत्र किं स्थितः ॥ ऋचीकोऽपि तमाहेदं
दीयतां मेऽत्र भोजनं ॥ सुरोद्यानादिदं रम्यमन्नपानं समर्पय ॥ तमब्रवीन्नृपो गच्छ पुरं मे भवनं प्रति ॥
ददामि भोजनं तत्र ॥ तथेत्युक्त्वा मुनिर्ययौ ॥ ततो भोक्तुं नृपो गत्वा नाद्राक्षीत्तत्र भोजनं ॥ भार्यां
तस्याः समाहूय पप्रच्छ क्व गतं हविः ॥ सा प्राह भोजनं तस्मै दत्तं मे नास्ति संशयः ॥ श्रुत्वेति वचनं

ཀཏཱཡཱཿཀཱལཔཱཤཱཿཔཱཎིཿ ཨཱཀཱཤཀཱཡཱཿཀཱཀཱཡཱཿཀཱཀཱཡཱཿ རཱཛཱཡཱཿཀཱཡཱཿ ཨཱཀཱཤཀཱཡཱཿཀཱཀཱཡཱཿ ཨཱཀཱཤཀཱཡཱཿཀཱཀཱཡཱཿ
ཨཱཀཱཤཀཱཡཱཿཀཱཀཱཡཱཿ ཨཱཀཱཤཀཱཡཱཿཀཱཀཱཡཱཿ ཨཱཀཱཤཀཱཡཱཿཀཱ

ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ལ་འཇུག་པ་ཡིན་ཏེ། ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཏོ། །དེ་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ཡིན་ཏོ། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་སྐུ

ལྷ་ཁང་ཁྱེ། ཐེ་ཚོ་ལས་ཅི་མཁོ་ལེན་རྒྱུ། རང་ཚོ་ཐུགས་ཀར་ཆུད་པ་ཡིན་ཏེ། ཅོ་ཧའི་མཁར་ཚོགས་ཀྱི་ཐོག་ནས་ཀྱང་། ཁྱེད་ཚོའི་མཁར་ཚོགས་ཀྱི་ཐོག་ནས་ཀྱང་། རང་ཚོའི་མཁར་ཚོགས་ཀྱི་ཐོག་ནས་ཀྱང་། ཁྱོད་ཚོར་ཡུལ་ལྷུང་ཐུབ། ཁྱོད་ལས་ཐབས་ཤེས་ཡོད། ཁྱོད་ལས་ཤེས་རབ་ཆེ། ཁྱོད་ཚོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ། ཁྱོད་ཚོ་ཐུགས་ཀར་ཆུད་པ་ཡིན། གཅིག་ཏུ་ཁྱོད་ཚོ་ཐུགས་ཀར་ཆུད་པ་ཡིན། ཁྱོད་ཚོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེ

ཀཱ་ཀཱ་ཀཱ་

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱ

ཀཱ་ཏནྲ།

ལས།ཐུབ་ཆེན་མཐའ་ཡས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ན་བཞུགས་ཤིང་།

ཀ། ཁ། ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡབ་ཡུམ་དང་། ཀུན་ལེགས་ཨོ་རྒྱན་ཡབ་ཡུམ་དང་། ཤེས་རབ་སྙིང་པོ་ཡབ་ཡུམ་དང་

ཞེས་གཉིས་ཀ་ཡང་ཟེར་ཏེ། ཁྱོད་ཀྱི་ཚེ་ཚད་ཀྱང་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ལྟ་བུ་ཡིན་ནོ། །

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡུལ་ཅན་ཏེ།

ཨཱམོ་ཧེ་ལུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཡ་ཀྲུ་ཏ་ཀྲི་ཏེ་ཏེ། ཏེ་ཡ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཡེ་ཏེ་ཏེ་ཡ་ཨེ་ཏེ་ཡ་ཀེ་ཏེ་ཏེ། ཀྲུ་ཏ་ཡེ་ཡ་ཨེ་ཏེ་ཡ་ཀེ་ཏེ་ཏེ་ཀྲུ་ཏ་ཡེ་ཡ་ཨེ་ཏེ་ཡ་ཀེ་ཏེ་ཏེ།
ཀ་ཀ་ཡ་ཡེ་ཀེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨཱཀྲུ་ཨེ། ཡ་ཨེ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཡ་ཨེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀེ་ཏེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཀ་ཀ་ཡ་ཡེ་ཀེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨཱཀྲུ་ཨེ། ཡ་ཨེ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཡ་ཨེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀེ་ཏེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཀ་ཀ་ཡ་ཡེ་ཀེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨཱཀྲུ་ཨེ། ཡ་ཨེ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཡ་ཨེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀེ་ཏེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཀ་ཀ་ཡ་ཡེ་ཀེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨཱཀྲུ་ཨེ། ཡ་ཨེ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཡ་ཨེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀེ་ཏེ་ཡ་ཀེ་ཀྲུ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།
ཨ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ། ཀྲུ་ཨེ་ཀེ་ཏེ་ཨེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ་ཡེ་ཀེ་ཏེ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོད་པ་ཡང་ཡིན་ཏེ། ཐ་མ་མེད་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་གྱིས་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་བར་དུ་ཡང་ཡང་བཟླས་ཏེ། ཐུགས་ཀར་ཟླ་བ་ཡོད་པ་ལས་ཟླ་བ་ལས་ཀྱང་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་ཡང་བཟླས་ཏེ། ཐུགས་ཀ་ནས

།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨཱཿཧཱུྃ

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

ཨོཾ ཨཱཿ ཧཱུྃ ཕཊ་

ནན་ཏན་ ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་གྲུབ་པས་ན། །ཀུན་གྱི་ཡིད་ཀྱི་དགའ་བས་ལོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་དགའ་བས་ན། ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་གྲུབ་པས་ལོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་དགའ་བས་ན། ཐམས་ཅད་ཀྱི་དོན་གྲུབ་པས་ན

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨཱཿཧཱུྃ

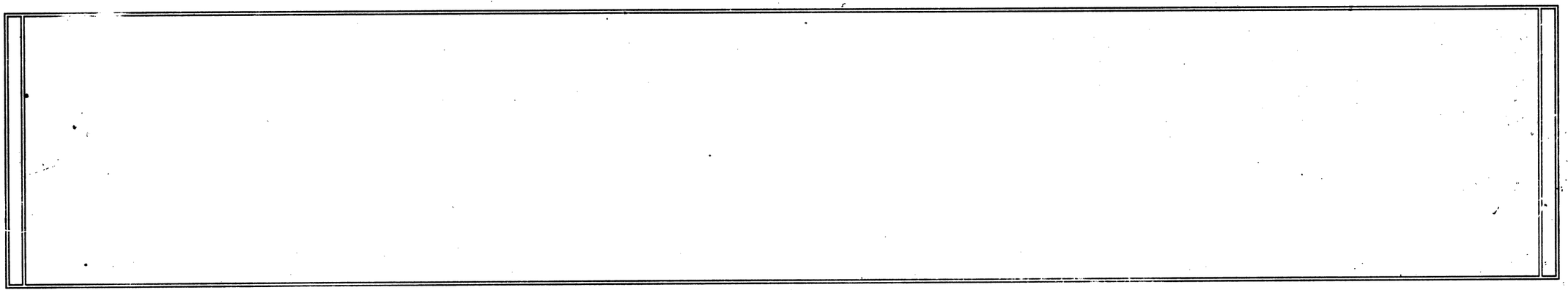

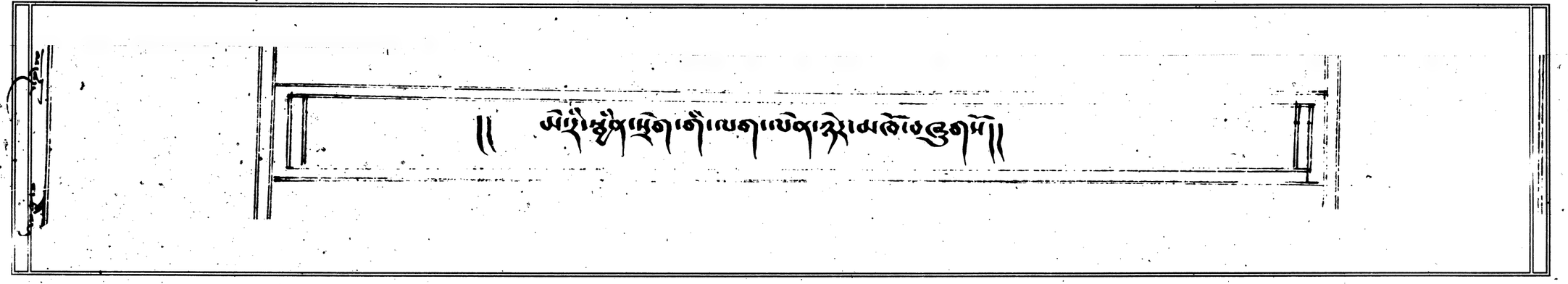

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྤྱོད་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིས་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་ཐེག་པ

ཀཀཀཀ། །ཁཁཁ

ཡིན་ཏེ། ཐོག་མེད་ནས་ཀྱང་ཡོད་ཅིང་། ཐོག་མ་ཡོད་ཀྱང་ཡིན་ཏེ

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡི་གེ་ཡང་ཡོད་དེ། ཡི་གེ་ཡང་ཡོད་ཅིང་ཡི་གེ་ཡང་ཡོད་ཅིང་ཡི་གེ་ཡང་ཡོད་ཅིང་

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱག་ཏུ་ཕུལ་ཏེ་

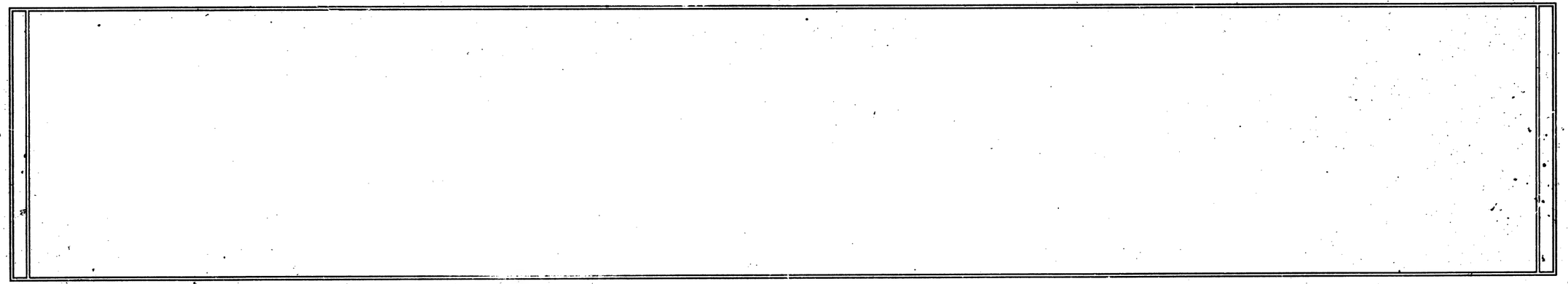

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿ ། ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿཧཱུྃ།

ཞེས་སྨན་པའམ་མཁས་པ་དང་ལྡན་པ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་ཀྱི་ཕྱིར་རྒྱུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅུ་ཡང་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཁྱད་པར་ཅན་ཡིན་ཏེ། དེ་ཡང་ཚེ་ཐུང་ངུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ནོ། །ཁྱད་པར་ཅན

།ཤ། ཏེ། ། ལས་ཀ་ཏེ་ཀ་ཀྱི་ཡུ་ཀ་ཀས་ལ། ཅེས་བྱ་བ་ལ། ཅེས་ཚིག་གི་ཡུ་ཀ་ཀ་ཀ

ཐབས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་པའི་ཚིག་གིས་ཀྱང་། ཐབས་ཤེས་ཟུང་དུ་འཇུག་པ

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐ་ཚིག་ཏུ་ཡང་ཡོད་དོ། །

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཟླ་བ་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ལས་ཐིག་ལེ་ཡི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཐུགས་ཀྱི་ཐིག་ལེ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཡུལ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་

ཀ་ཁ་ག་ང་ཅ་ཆ་ཇ་ཉ་ཏ་ཐ་ད་ན་པ་ཕ་བ་མ་ཙ་ཚ་ཛ་ཝ་ཞ་ཟ་འ་ཡ་ར་ལ་ཤ་ས་ཧ་ཨ་ཀྵ་ཏྲ་ཛྙ་ཀྲ་ཀྱ་ཁྱ་ཁྲ་གྱ་གྲ་ཅྱ་ཆྱ་ཇྱ་ཉྱ་ཏྲ་ཐྲ་དྲ་དྷྲ་ནྱ་ནྲ་པྱ་ཕྱ་ཕྲ་བྱ་བྲ་མྱ་མྲ་ཙྱ་ཚྱ་ཛྱ་ཝྱ་ཞྱ་ཟྱ་ཤྱ་ཤྲ་སྱ་སྲ་ཧྱ་ཧྲ་ཨྱ་ཨྲ་ཀྵྱ་ཀྵྲ་

ཀཱ་ཏནྲ།

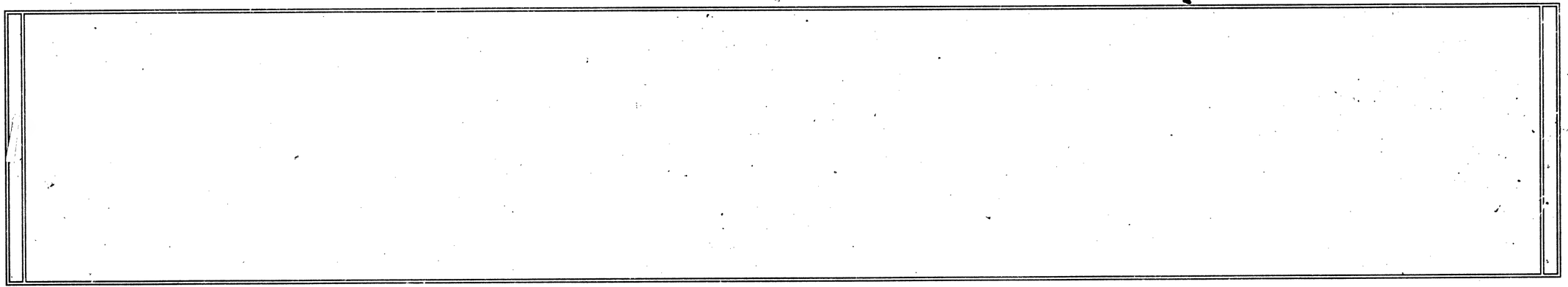

།། ཐུབ་པའི་ཡིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེས་བྱ་བ་ལས་མདོ།།

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏྟ་ཀྲི་ཡཱ་ཨ་ནཱ་བ་ར་ཎ་ཝི་ཤུ་དྡྷ་ཛྙཱ་ན་ཀཱ་ཡ་ཝཱཀ་ཙི་ཏྟ་ཨ་ནཱ་བ་ར་ཎ་ཝི་ཤུ་དྡྷ་ཛྙཱ་ན་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿཧཱུྃ།། ཨཱཿཧཱུྃ།།

ཀཱ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ་ཡ་ཀ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཀྱི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡོད་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་ཏུ་ཡ

ཀཱ། ཁ། ཁཱ། གཱ། ངཱ། ཅཱ། ཆཱ། ཇཱ། ཉཱ། ཊཱ། ཋཱ། ཌཱ། ཎཱ། ཏཱ། ཐཱ། དཱ། ནཱ། པཱ། ཕཱ། བཱ། མཱ། ཙཱ། ཚཱ། ཛཱ། ཝཱ། ཞཱ། ཟཱ། འཱ། ཡཱ། རཱ། ལཱ། ཤཱ། ཥཱ། སཱ། ཧཱ། ཨཱ། ཀི། ཁི། གི། ངི། ཅི། ཆི། ཇི། ཉི། ཊི། ཋི། ཌི། ཎི། ཏི། ཐི། དི། ནི། པི། ཕི། བི། མི། ཙི། ཚི། ཛི། ཝི། ཞི། ཟི། འི། ཡི། རི། ལི། ཤི། ཥི། སི། ཧི། ཨི། ཀཱི། ཁཱི། གཱི། ངཱི། ཅཱི། ཆཱི། ཇཱི། ཉཱི། ཊཱི། ཋཱི། ཌཱི། ཎཱི། ཏཱི། ཐཱི། དཱི། ནཱི། པཱི། ཕཱི། བཱི། མཱི། ཙཱི། ཚཱི། ཛཱི། ཝཱི། ཞཱི། ཟཱི། འཱི། ཡཱི། རཱི། ལཱི། ཤཱི། ཥཱི། སཱི། ཧཱི། ཨཱི། ཀུ། ཁུ། གུ། ངུ། ཅུ། ཆུ། ཇུ། ཉུ། ཊུ། ཋུ། ཌུ། ཎུ། ཏུ། ཐུ། དུ། ནུ། པུ། ཕུ། བུ། མུ། ཙུ། ཚུ། ཛུ། ཝུ། ཞུ། ཟུ། འུ། ཡུ། རུ། ལུ། ཤུ། ཥུ། སུ། ཧུ། ཨུ། ཀཱུ། ཁཱུ། གཱུ། ངཱུ། ཅཱུ། ཆཱུ། ཇཱུ། ཉཱུ། ཊཱུ། ཋཱུ། ཌཱུ། ཎཱུ། ཏཱུ། ཐཱུ། དཱུ། ནཱུ། པཱུ། ཕཱུ། བཱུ། མཱུ། ཙཱུ། ཚཱུ། ཛཱུ། ཝཱུ། ཞཱུ། ཟཱུ། འཱུ། ཡཱུ། རཱུ། ལཱུ། ཤཱུ། ཥཱུ། སཱུ། ཧཱུ། ཨཱུ། ཀྲུ། ཁྲུ། གྲུ། ངྲུ། ཅྲུ། ཆྲུ། ཇྲུ། ཉྲུ། ཊྲུ། ཋྲུ། ཌྲུ། ཎྲུ། ཏྲུ། ཐྲུ། དྲུ། ནྲུ། པྲུ། ཕྲུ། བྲུ། མྲུ། ཙྲུ། ཚྲུ། ཛྲུ། ཝྲུ། ཞྲུ། ཟྲུ། འྲུ། ཡྲུ། རྲུ། ལྲུ། ཤྲུ། ཥྲུ། སྲུ། ཧྲུ། ཨྲུ། ཀླུ། ཁླུ། གླུ། ངླུ། ཅླུ། ཆླུ། ཇླུ། ཉླུ། ཊླུ། ཋླུ། ཌླུ། ཎླུ། ཏླུ། ཐླུ། དླུ། ནླུ། པླུ། ཕླུ། བླུ། མླུ། ཙླུ། ཚླུ། ཛླུ། ཝླུ། ཞླུ། ཟླུ། འླུ། ཡླུ། རླུ། ལླུ། ཤླུ། ཥླུ། སླུ། ཧླུ། ཨླུ། ཀཱུ། ཁཱུ། གཱུ། ངཱུ། ཅཱུ། ཆཱུ། ཇཱུ། ཉཱུ། ཊཱུ། ཋཱུ། ཌཱུ། ཎཱུ། ཏཱུ། ཐཱུ། དཱུ། ནཱུ། པཱུ། ཕཱུ། བཱུ། མཱུ། ཙཱུ། ཚཱུ། ཛཱུ། ཝཱུ། ཞཱུ། ཟཱུ། འཱུ། ཡཱུ། རཱུ། ལཱུ། ཤཱུ། ཥཱུ། སཱུ། ཧཱུ། ཨཱུ། ཀྲཱུ། ཁྲཱུ། གྲཱུ། ངྲཱུ། ཅྲཱུ། ཆྲཱུ། ཇྲཱུ། ཉྲཱུ། ཊྲཱུ། ཋྲཱུ། ཌྲཱུ། ཎྲཱུ། ཏྲཱུ། ཐྲཱུ། དྲཱུ། ནྲཱུ། པྲཱུ། ཕྲཱུ། བྲཱུ། མྲཱུ། ཙྲཱུ། ཚྲཱུ། ཛྲཱུ། ཝྲཱུ། ཞྲཱུ། ཟྲཱུ། འྲཱུ། ཡྲཱུ། རྲཱུ། ལྲཱུ། ཤྲཱུ། ཥྲཱུ། སྲཱུ། ཧྲཱུ། ཨྲཱུ། ཀླཱུ། ཁླཱུ། གླཱུ། ངླཱུ། ཅླཱུ། ཆླཱུ། ཇླཱུ། ཉླཱུ། ཊླཱུ། ཋླཱུ། ཌླཱུ། ཎླཱུ། ཏླཱུ། ཐླཱུ། དླཱུ། ནླཱུ། པླཱུ། ཕླཱུ། བླཱུ། མླཱུ། ཙླཱུ། ཚླཱུ། ཛླཱུ། ཝླཱུ། ཞླཱུ། ཟླཱུ། འླཱུ། ཡླཱུ། རླཱུ། ལླཱུ། ཤླཱུ། ཥླཱུ། སླཱུ། ཧླཱུ། ཨླཱུ། ཀེ། ཁེ། གེ། ངེ། ཅེ། ཆེ། ཇེ། ཉེ། ཊེ། ཋེ། ཌེ། ཎེ། ཏེ། ཐེ། དེ། ནེ། པེ། ཕེ། བེ། མེ། ཙེ། ཚེ། ཛེ། ཝེ། ཞེ། ཟེ། འེ། ཡེ། རེ། ལེ། ཤེ། ཥེ། སེ། ཧེ། ཨེ། ཀཻ། ཁཻ། གཻ། ངཻ། ཅཻ། ཆཻ། ཇཻ། ཉཻ། ཊཻ། ཋཻ། ཌཻ། ཎཻ། ཏཻ། ཐཻ། དཻ། ནཻ། པཻ། ཕཻ། བཻ། མཻ། ཙཻ། ཚཻ། ཛཻ། ཝཻ། ཞཻ། ཟཻ། འཻ། ཡཻ། རཻ། ལཻ། ཤཻ། ཥཻ། སཻ། ཧཻ། ཨཻ། ཀོ། ཁོ། གོ། ངོ། ཅོ། ཆོ། ཇོ། ཉོ། ཊོ། ཋོ། ཌོ། ཎོ། ཏོ། ཐོ། དོ། ནོ། པོ། ཕོ། བོ། མོ། ཙོ། ཚོ། ཛོ། ཝོ། ཞོ། ཟོ། འོ། ཡོ། རོ། ལོ། ཤོ། ཥོ། སོ། ཧོ། ཨོ། ཀཽ། ཁཽ། གཽ། ངཽ། ཅཽ། ཆཽ། ཇཽ། ཉཽ། ཊཽ། ཋཽ། ཌཽ། ཎཽ། ཏཽ། ཐཽ། དཽ། ནཽ། པཽ། ཕཽ། བཽ། མཽ། ཙཽ། ཚཽ། ཛཽ། ཝཽ། ཞཽ། ཟཽ། འཽ། ཡཽ། རཽ། ལཽ། ཤཽ། ཥཽ། སཽ། ཧཽ། ཨཽ། ཀྃ། ཁྃ། གྃ། ངྃ། ཅྃ། ཆྃ། ཇྃ། ཉྃ། ཊྃ། ཋྃ། ཌྃ། ཎྃ། ཏྃ། ཐྃ། དྃ། ནྃ། པྃ། ཕྃ། བྃ། མྃ། ཙྃ། ཚྃ། ཛྃ། ཝྃ། ཞྃ། ཟྃ། འྃ། ཡྃ། རྃ། ལྃ། ཤྃ། ཥྃ། སྃ། ཧྃ། ཨྃ། ཀཿ། ཁཿ། གཿ། ངཿ། ཅཿ། ཆཿ། ཇཿ། ཉཿ། ཊཿ། ཋཿ། ཌཿ། ཎཿ། ཏཿ། ཐཿ། དཿ། ནཿ། པཿ། ཕཿ། བཿ། མཿ། ཙཿ། ཚཿ། ཛཿ། ཝཿ། ཞཿ། ཟཿ། འཿ། ཡཿ། རཿ། ལཿ། ཤཿ། ཥཿ། སཿ། ཧཿ། ཨཿ། ཀྀ། ཁྀ། གྀ། ངྀ། ཅྀ། ཆྀ། ཇྀ། ཉྀ། ཊྀ། ཋྀ། ཌྀ། ཎྀ། ཏྀ། ཐྀ། དྀ། ནྀ། པྀ། ཕྀ། བྀ། མྀ། ཙྀ། ཚྀ། ཛྀ། ཝྀ། ཞྀ། ཟྀ། འྀ། ཡྀ། རྀ། ལྀ། ཤྀ། ཥྀ། སྀ། ཧྀ། ཨྀ། ཀཱྀ། ཁཱྀ། གཱྀ། ངཱྀ། ཅཱྀ། ཆཱྀ། ཇཱྀ། ཉཱྀ། ཊཱྀ། ཋཱྀ། ཌཱྀ། ཎཱྀ། ཏཱྀ། ཐཱྀ། དཱྀ། ནཱྀ། པཱྀ། ཕཱྀ། བཱྀ། མཱྀ། ཙཱྀ། ཚཱྀ། ཛཱྀ། ཝཱྀ། ཞཱྀ། ཟཱྀ། འཱྀ། ཡཱྀ། རཱྀ། ལཱྀ། ཤཱྀ། ཥཱྀ། སཱྀ། ཧཱྀ། ཨཱྀ། ཀྱ། ཁྱ། གྱ། ངྱ། ཅྱ། ཆྱ། ཇྱ། ཉྱ། ཊྱ། ཋྱ། ཌྱ། ཎྱ། ཏྱ། ཐྱ། དྱ། ནྱ། པྱ། ཕྱ། བྱ། མྱ། ཙྱ། ཚྱ། ཛྱ། ཝྱ། ཞྱ། ཟྱ། འྱ། ཡྱ། རྱ། ལྱ། ཤྱ། ཥྱ། སྱ། ཧྱ། ཨྱ། ཀྱཱ། ཁྱཱ། གྱཱ། ངྱཱ། ཅྱཱ། ཆྱཱ། ཇྱཱ། ཉྱཱ། ཊྱཱ། ཋྱཱ། ཌྱཱ། ཎྱཱ། ཏྱཱ། ཐྱཱ། དྱཱ། ནྱཱ། པྱཱ། ཕྱཱ། བྱཱ། མྱཱ། ཙྱཱ། ཚྱཱ། ཛྱཱ། ཝྱཱ། ཞྱཱ། ཟྱཱ། འྱཱ། ཡྱཱ། རྱཱ། ལྱཱ། ཤྱཱ། ཥྱཱ། སྱཱ། ཧྱཱ། ཨྱཱ། ཀྱི། ཁྱི། གྱི། ངྱི། ཅྱི། ཆྱི། ཇྱི། ཉྱི། ཊྱི། ཋྱི། ཌྱི། ཎྱི། ཏྱི། ཐྱི། དྱི། ནྱི། པྱི། ཕྱི། བྱི། མྱི། ཙྱི། ཚྱི། ཛྱི། ཝྱི། ཞྱི། ཟྱི། འྱི། ཡྱི། རྱི། ལྱི། ཤྱི། ཥྱི། སྱི། ཧྱི། ཨྱི། ཀྱཱི། ཁྱཱི། གྱཱི། ངྱཱི། ཅྱཱི། ཆྱཱི། ཇྱཱི། ཉྱཱི། ཊྱཱི། ཋྱཱི། ཌྱཱི། ཎྱཱི། ཏྱཱི། ཐྱཱི། དྱཱི། ནྱཱི། པྱཱི། ཕྱཱི། བྱཱི། མྱཱི། ཙྱཱི། ཚྱཱི། ཛྱཱི། ཝྱཱི། ཞྱཱི། ཟྱཱི། འྱཱི། ཡྱཱི། རྱཱི། ལྱཱི། ཤྱཱི། ཥྱཱི། སྱཱི། ཧྱཱི། ཨྱཱི། ཀྱུ། ཁྱུ། གྱུ། ངྱུ། ཅྱུ། ཆྱུ། ཇྱུ། ཉྱུ། ཊྱུ། ཋྱུ། ཌྱུ། ཎྱུ། ཏྱུ། ཐྱུ། དྱུ། ནྱུ། པྱུ། ཕྱུ། བྱུ། མྱུ། ཙྱུ། ཚྱུ། ཛྱུ། ཝྱུ། ཞྱུ། ཟྱུ། འྱུ། ཡྱུ། རྱུ། ལྱུ། ཤྱུ། ཥྱུ། སྱུ། ཧྱུ། ཨྱུ། ཀྱཱུ། ཁྱཱུ། གྱཱུ། ངྱཱུ། ཅྱཱུ། ཆྱཱུ། ཇྱཱུ། ཉྱཱུ། ཊྱཱུ། ཋྱཱུ། ཌྱཱུ། ཎྱཱུ། ཏྱཱུ། ཐྱཱུ། དྱཱུ། ནྱཱུ། པྱཱུ། ཕྱཱུ། བྱཱུ། མྱཱུ། ཙྱཱུ། ཚྱཱུ། ཛྱཱུ། ཝྱཱུ། ཞྱཱུ། ཟྱཱུ། འྱཱུ། ཡྱཱུ། རྱཱུ། ལྱཱུ། ཤྱཱུ། ཥྱཱུ། སྱཱུ། ཧྱཱུ། ཨྱཱུ། ཀྱེ། ཁྱེ། གྱེ། ངྱེ། ཅྱེ། ཆྱེ། ཇྱེ། ཉྱེ། ཊྱེ། ཋྱེ། ཌྱེ། ཎྱེ། ཏྱེ། ཐྱེ། དྱེ། ནྱེ། པྱེ། ཕྱེ། བྱེ། མྱེ། ཙྱེ། ཚྱེ། ཛྱེ། ཝྱེ། ཞྱེ། ཟྱེ། འྱེ། ཡྱེ། རྱེ། ལྱེ། ཤྱེ། ཥྱེ། སྱེ། ཧྱེ། ཨྱེ། ཀྱཻ། ཁྱཻ། གྱཻ། ངྱཻ། ཅྱཻ། ཆྱཻ། ཇྱཻ། ཉྱཻ། ཊྱཻ། ཋྱཻ། ཌྱཻ། ཎྱཻ། ཏྱཻ། ཐྱཻ། དྱཻ། ནྱཻ། པྱཻ། ཕྱཻ། བྱཻ། མྱཻ། ཙྱཻ། ཚྱཻ། ཛྱཻ། ཝྱཻ། ཞྱཻ། ཟྱཻ། འྱཻ། ཡྱཻ། རྱཻ། ལྱཻ། ཤྱཻ། ཥྱཻ། སྱཻ། ཧྱཻ། ཨྱཻ། ཀྱོ། ཁྱོ། གྱོ། ངྱོ། ཅྱོ། ཆྱོ། ཇྱོ། ཉྱོ། ཊྱོ། ཋྱོ། ཌྱོ། ཎྱོ། ཏྱོ། ཐྱོ། དྱོ། ནྱོ། པྱོ། ཕྱོ། བྱོ། མྱོ། ཙྱོ། ཚྱོ། ཛྱོ། ཝྱོ། ཞྱོ། ཟྱོ། འྱོ། ཡྱོ། རྱོ། ལྱོ། ཤྱོ། ཥྱོ། སྱོ། ཧྱོ། ཨྱོ། ཀྱཽ། ཁྱཽ། གྱཽ། ངྱཽ། ཅྱཽ། ཆྱཽ། ཇྱཽ། ཉྱཽ། ཊྱཽ། ཋྱཽ། ཌྱཽ། ཎྱཽ། ཏྱཽ། ཐྱཽ། དྱཽ། ནྱཽ། པྱཽ། ཕྱཽ། བྱཽ། མྱཽ། ཙྱཽ། ཚྱཽ། ཛྱཽ། ཝྱཽ། ཞྱཽ། ཟྱཽ། འྱཽ། ཡྱཽ། རྱཽ། ལྱཽ། ཤྱཽ། ཥྱཽ། སྱཽ། ཧྱཽ། ཨྱཽ། ཀྱྃ། ཁྱྃ། གྱྃ། ངྱྃ། ཅྱྃ། ཆྱྃ། ཇྱྃ། ཉྱྃ། ཊྱྃ། ཋྱྃ། ཌྱྃ། ཎྱྃ། ཏྱྃ། ཐྱྃ། དྱྃ། ནྱྃ། པྱྃ། ཕྱྃ། བྱྃ། མྱྃ། ཙྱྃ། ཚྱྃ། ཛྱྃ། ཝྱྃ། ཞྱྃ། ཟྱྃ། འྱྃ། ཡྱྃ། རྱྃ། ལྱྃ། ཤྱྃ། ཥྱྃ། སྱྃ། ཧྱྃ། ཨྱྃ། ཀྱཿ། ཁྱཿ། གྱཿ། ངྱཿ། ཅྱཿ། ཆྱཿ། ཇྱཿ། ཉྱཿ། ཊྱཿ། ཋྱཿ། ཌྱཿ། ཎྱཿ། ཏྱཿ། ཐྱཿ། དྱཿ། ནྱཿ། པྱཿ། ཕྱཿ། བྱཿ། མྱཿ། ཙྱཿ། ཚྱཿ། ཛྱཿ། ཝྱཿ། ཞྱཿ། ཟྱཿ། འྱཿ། ཡྱཿ། རྱཿ། ལྱཿ། ཤྱཿ། ཥྱཿ། སྱཿ། ཧྱཿ། ཨྱཿ། ཀྱྀ། ཁྱྀ། གྱྀ། ངྱྀ། ཅྱྀ། ཆྱྀ། ཇྱྀ། ཉྱྀ། ཊྱྀ། ཋྱྀ། ཌྱྀ། ཎྱྀ། ཏྱྀ། ཐྱྀ། དྱྀ། ནྱྀ། པྱྀ། ཕྱྀ། བྱྀ། མྱྀ། ཙྱྀ། ཚྱྀ། ཛྱྀ། ཝྱྀ། ཞྱྀ། ཟྱྀ། འྱྀ། ཡྱྀ། རྱྀ། ལྱྀ། ཤྱྀ། ཥྱྀ། སྱྀ། ཧྱྀ། ཨྱྀ། ཀྱཱྀ། ཁྱཱྀ། གྱཱྀ། ངྱཱྀ། ཅྱཱྀ། ཆྱཱྀ། ཇྱཱྀ། ཉྱཱྀ། ཊྱཱྀ། ཋྱཱྀ། ཌྱཱྀ། ཎྱཱྀ། ཏྱཱྀ། ཐྱཱྀ། དྱཱྀ། ནྱཱྀ། པྱཱྀ། ཕྱཱྀ། བྱཱྀ། མྱཱྀ། ཙྱཱྀ། ཚྱཱྀ། ཛྱཱྀ། ཝྱཱྀ། ཞྱཱྀ། ཟྱཱྀ། འྱཱྀ། ཡྱཱྀ། རྱཱྀ། ལྱཱྀ། ཤྱཱྀ། ཥྱཱྀ། སྱཱྀ། ཧྱཱྀ། ཨྱཱྀ། ཀྲྀ། ཁྲྀ། གྲྀ། ངྲྀ། ཅྲྀ། ཆྲྀ། ཇྲྀ། ཉྲྀ། ཊྲྀ། ཋྲྀ། ཌྲྀ། ཎྲྀ། ཏྲྀ། ཐྲྀ། དྲྀ། ནྲྀ། པྲྀ། ཕྲྀ། བྲྀ། མྲྀ། ཙྲྀ། ཚྲྀ། ཛྲྀ། ཝྲྀ། ཞྲྀ། ཟྲྀ། འྲྀ། ཡྲྀ། རྲྀ། ལྲྀ། ཤྲྀ། ཥྲྀ། སྲྀ། ཧྲྀ། ཨྲྀ། ཀླྀ། ཁླྀ། གླྀ། ངླྀ། ཅླྀ། ཆླྀ། ཇླྀ། ཉླྀ། ཊླྀ། ཋླྀ། ཌླྀ། ཎླྀ། ཏླྀ། ཐླྀ། དླྀ། ནླྀ། པླྀ། ཕླྀ། བླྀ། མླྀ། ཙླྀ། ཚླྀ། ཛླྀ། ཝླྀ། ཞླྀ། ཟླྀ། འླྀ། ཡླྀ། རླྀ། ལླྀ། ཤླྀ། ཥླྀ། སླྀ། ཧླྀ། ཨླྀ། ཀཱྀ། ཁཱྀ། གཱྀ། ངཱྀ། ཅཱྀ། ཆཱྀ། ཇཱྀ། ཉཱྀ། ཊཱྀ། ཋཱྀ། ཌཱྀ། ཎཱྀ། ཏཱྀ། ཐཱྀ། དཱྀ། ནཱྀ། པཱྀ། ཕཱྀ། བཱྀ། མཱྀ། ཙཱྀ། ཚཱྀ། ཛཱྀ། ཝཱྀ། ཞཱྀ། ཟཱྀ། འཱྀ། ཡཱྀ། རཱྀ། ལཱྀ། ཤཱྀ། ཥཱྀ། སཱྀ། ཧཱྀ། ཨཱྀ། ཀྱྀ། ཁྱྀ། གྱྀ། ངྱྀ། ཅྱྀ། ཆྱྀ། ཇྱྀ། ཉྱྀ། ཊྱྀ། ཋྱྀ། ཌྱྀ། ཎྱྀ། ཏྱྀ། ཐྱྀ། དྱྀ། ནྱྀ། པྱྀ། ཕྱྀ། བྱྀ། མྱྀ། ཙྱྀ། ཚྱྀ། ཛྱྀ། ཝྱྀ། ཞྱྀ། ཟྱྀ། འྱྀ། ཡྱྀ། རྱྀ། ལྱྀ། ཤྱྀ། ཥྱྀ། སྱྀ། ཧྱྀ། ཨྱྀ། ཀྱཱྀ། ཁྱཱྀ། གྱཱྀ། ངྱཱྀ། ཅྱཱྀ། ཆྱཱྀ། ཇྱཱྀ། ཉྱཱྀ། ཊྱཱྀ། ཋྱཱྀ། ཌྱཱྀ། ཎྱཱྀ། ཏྱཱྀ། ཐྱཱྀ། དྱཱྀ། ནྱཱྀ། པྱཱྀ། ཕྱཱྀ། བྱཱྀ། མྱཱྀ། ཙྱཱྀ། ཚྱཱྀ། ཛྱཱྀ། ཝྱཱྀ། ཞྱཱྀ། ཟྱཱྀ། འྱཱྀ། ཡྱཱྀ། རྱཱྀ། ལྱཱྀ། ཤྱཱྀ། ཥྱཱྀ། སྱཱྀ། ཧྱཱྀ། ཨྱཱྀ། ཀྲྱཱྀ། ཁྲྱཱྀ། གྲྱཱྀ། ངྲྱཱྀ། ཅྲྱཱྀ། ཆྲྱཱྀ། ཇྲྱཱྀ། ཉྲྱཱྀ། ཊྲྱཱྀ། ཋྲྱཱྀ། ཌྲྱཱྀ། ཎྲྱཱྀ། ཏྲྱཱྀ། ཐྲྱཱྀ། དྲྱཱྀ། ནྲྱཱྀ། པྲྱཱྀ། ཕྲྱཱྀ། བྲྱཱྀ། མྲྱཱྀ། ཙྲྱཱྀ། ཚྲྱཱྀ། ཛྲྱཱྀ། ཝྲྱཱྀ། ཞྲྱཱྀ། ཟྲྱཱྀ། འྲྱཱྀ། ཡྲྱཱྀ། རྲྱཱྀ། ལྲྱཱྀ། ཤྲྱཱྀ། ཥྲྱཱྀ། སྲྱཱྀ། ཧྲྱཱྀ། ཨྲྱཱྀ། ཀླྱཱྀ། ཁླྱཱྀ། གླྱཱྀ། ངླྱཱྀ། ཅླྱཱྀ། ཆླྱཱྀ། ཇླྱཱྀ། ཉླྱཱྀ། ཊླྱཱྀ། ཋླྱཱྀ། ཌླྱཱྀ། ཎླྱཱྀ། ཏླྱཱྀ། ཐླྱཱྀ། དླྱཱྀ། ནླྱཱྀ། པླྱཱྀ། ཕླྱཱྀ། བླྱཱྀ། མླྱཱྀ། ཙླྱཱྀ། ཚླྱཱྀ། ཛླྱཱྀ། ཝླྱཱྀ། ཞླྱཱྀ། ཟླྱཱྀ། འླྱཱྀ། ཡླྱཱྀ། རླྱཱྀ། ལླྱཱྀ། ཤླྱཱྀ། ཥླྱཱྀ། སླྱཱྀ། ཧླྱཱྀ། ཨླྱཱྀ། ཀེ། ཁེ། གེ། ངེ། ཅེ། ཆེ། ཇེ། ཉེ། ཊེ། ཋེ། ཌེ། ཎེ། ཏེ། ཐེ། དེ། ནེ། པེ། ཕེ། བེ། མེ། ཙེ། ཚེ། ཛེ། ཝེ། ཞེ། ཟེ། འེ། ཡེ། རེ། ལེ། ཤེ། ཥེ། སེ། ཧེ། ཨེ། ཀཻ། ཁཻ། གཻ། ངཻ། ཅཻ། ཆཻ། ཇཻ། ཉཻ། ཊཻ། ཋཻ། ཌཻ། ཎཻ། ཏཻ། ཐཻ། དཻ། ནཻ། པཻ། ཕཻ། བཻ། མཻ། ཙཻ། ཚཻ། ཛཻ། ཝཻ། ཞཻ། ཟཻ། འཻ། ཡཻ། རཻ། ལཻ། ཤཻ། ཥཻ། སཻ། ཧཻ། ཨཻ། ཀོ། ཁོ། གོ། ངོ། ཅོ། ཆོ། ཇོ། ཉོ། ཊོ། ཋོ། ཌོ། ཎོ། ཏོ། ཐོ། དོ། ནོ། པོ། ཕོ། བོ། མོ། ཙོ། ཚོ། ཛོ། ཝོ། ཞོ། ཟོ། འོ། ཡོ། རོ། ལོ། ཤོ། ཥོ། སོ། ཧོ། ཨོ། ཀཽ། ཁཽ། གཽ། ངཽ། ཅཽ། ཆཽ། ཇཽ། ཉཽ། ཊཽ། ཋཽ། ཌཽ། ཎཽ། ཏཽ། ཐཽ། དཽ། ནཽ། པཽ། ཕཽ། བཽ། མཽ། ཙཽ། ཚཽ། ཛཽ། ཝཽ། ཞཽ། ཟཽ། འཽ། ཡཽ། རཽ། ལཽ། ཤཽ། ཥཽ། སཽ། ཧཽ། ཨཽ། ཀྃ། ཁྃ། གྃ། ངྃ། ཅྃ། ཆྃ། ཇྃ། ཉྃ། ཊྃ། ཋྃ། ཌྃ། ཎྃ། ཏྃ། ཐྃ། དྃ། ནྃ། པྃ། ཕྃ། བྃ། མྃ། ཙྃ། ཚྃ། ཛྃ། ཝྃ། ཞྃ། ཟྃ། འྃ། ཡྃ། རྃ། ལྃ། ཤྃ། ཥྃ། སྃ། ཧྃ། ཨྃ། ཀཿ། ཁཿ། གཿ། ངཿ། ཅཿ། ཆཿ། ཇཿ། ཉཿ། ཊཿ། ཋཿ། ཌཿ། ཎཿ། ཏཿ། ཐཿ། དཿ། ནཿ། པཿ། ཕཿ། བཿ། མཿ། ཙཿ། ཚཿ། ཛཿ། ཝཿ། ཞཿ། ཟཿ། འཿ། ཡཿ། རཿ། ལཿ། ཤཿ། ཥཿ། སཿ། ཧཿ། ཨཿ། ཀྀ། ཁྀ། གྀ། ངྀ། ཅྀ། ཆྀ། ཇྀ། ཉྀ། ཊྀ། ཋྀ། ཌྀ། ཎྀ། ཏྀ། ཐྀ། དྀ། ནྀ། པྀ། ཕྀ། བྀ། མྀ། ཙྀ། ཚྀ། ཛྀ། ཝྀ། ཞྀ། ཟྀ། འྀ། ཡྀ། རྀ། ལྀ། ཤྀ། ཥྀ། སྀ། ཧྀ། ཨྀ། ཀཱྀ། ཁཱྀ། གཱྀ། ངཱྀ། ཅཱྀ། ཆཱྀ། ཇཱྀ། ཉཱྀ། ཊཱྀ། ཋཱྀ། ཌཱྀ། ཎཱྀ། ཏཱྀ། ཐཱྀ། དཱྀ། ནཱྀ། པཱྀ། ཕཱྀ། བཱྀ། མཱྀ། ཙཱྀ། ཚཱྀ། ཛཱྀ། ཝཱྀ། ཞཱྀ། ཟཱྀ། འཱྀ། ཡཱྀ། རཱྀ། ལཱྀ། ཤཱྀ། ཥཱྀ། སཱྀ། ཧཱྀ། ཨཱྀ། ཀྱྀ། ཁྱྀ། གྱྀ། ངྱྀ། ཅྱྀ། ཆྱྀ། ཇྱྀ། ཉྱྀ། ཊྱྀ། ཋྱྀ། ཌྱྀ། ཎྱྀ། ཏྱྀ། ཐྱྀ། དྱྀ། ནྱྀ། པྱྀ། ཕྱྀ། བྱྀ། མྱྀ། ཙྱྀ། ཚྱྀ། ཛྱྀ། ཝྱྀ། ཞྱྀ། ཟྱྀ། འྱྀ། ཡྱྀ། རྱྀ། ལྱྀ། ཤྱྀ། ཥྱྀ། སྱྀ། ཧྱྀ། ཨྱྀ། ཀྱཱྀ། ཁྱཱྀ། གྱཱྀ། ངྱཱྀ། ཅྱཱྀ། ཆྱཱྀ། ཇྱཱྀ། ཉྱཱྀ། ཊྱཱྀ། ཋྱཱྀ། ཌྱཱྀ། ཎྱཱྀ། ཏྱཱྀ། ཐྱཱྀ། དྱཱྀ། ནྱཱྀ། པྱཱྀ། ཕྱཱྀ། བྱཱྀ། མྱཱྀ། ཙྱཱྀ། ཚྱཱྀ། ཛྱཱྀ། ཝྱཱྀ། ཞྱཱྀ། ཟྱཱྀ། འྱཱྀ། ཡྱཱྀ། རྱཱྀ། ལྱཱྀ། ཤྱཱྀ། ཥྱཱྀ། སྱཱྀ། ཧྱཱྀ། ཨྱཱྀ། ཀྲྱཱྀ། ཁྲྱཱྀ། གྲྱཱྀ། ངྲྱཱྀ། ཅྲྱཱྀ། ཆྲྱཱྀ། ཇྲྱཱྀ། ཉྲྱཱྀ། ཊྲྱཱྀ། ཋྲྱཱྀ། ཌྲྱཱྀ། ཎྲྱཱྀ། ཏྲྱཱྀ། ཐྲྱཱྀ། དྲྱཱྀ། ནྲྱཱྀ། པྲྱཱྀ། ཕྲྱཱྀ། བྲྱཱྀ། མྲྱཱྀ། ཙྲྱཱྀ། ཚྲྱཱྀ། ཛྲྱཱྀ། ཝྲྱཱྀ། ཞྲྱཱྀ། ཟྲྱཱྀ། འྲྱཱྀ། ཡྲྱཱྀ། རྲྱཱྀ། ལྲྱཱྀ། ཤྲྱཱྀ། ཥྲྱཱྀ། སྲྱཱྀ། ཧྲྱཱྀ། ཨྲྱཱྀ། ཀླྱཱྀ། ཁླྱཱྀ། གླྱཱྀ། ངླྱཱྀ། ཅླྱཱྀ། ཆླྱཱྀ། ཇླྱཱྀ། ཉླྱཱྀ། ཊླྱཱྀ། ཋླྱཱྀ། ཌླྱཱྀ། ཎླྱཱྀ། ཏླྱཱྀ། ཐླྱཱྀ། དླྱཱྀ། ནླྱཱྀ། པླྱཱྀ། ཕླྱཱྀ། བླྱཱྀ། མླྱཱྀ། ཙླྱཱྀ། ཚླྱཱྀ། ཛླྱཱྀ། ཝླྱཱྀ། ཞླྱཱྀ། ཟླྱཱྀ། འླྱཱྀ། ཡླྱཱྀ། རླྱཱྀ། ལླྱཱྀ། ཤླྱཱྀ། ཥླྱཱྀ། སླྱཱྀ། ཧླྱཱྀ། ཨླྱཱྀ། ཀེ། ཁེ། གེ། ངེ། ཅེ། ཆེ། ཇེ། ཉེ། ཊེ། ཋེ། ཌེ། ཎེ། ཏེ། ཐེ། དེ། ནེ། པེ། ཕེ། བེ། མེ། ཙེ། ཚེ། ཛེ། ཝེ། ཞེ། ཟེ། འེ། ཡེ། རེ། ལེ། ཤེ། ཥེ། སེ། ཧེ། ཨེ། ཀཻ། ཁཻ། གཻ། ངཻ། ཅཻ། ཆཻ། ཇཻ། ཉཻ། ཊཻ། ཋཻ། ཌཻ། ཎཻ། ཏཻ། ཐཻ། དཻ། ནཻ། པཻ། ཕཻ། བཻ། མཻ། ཙཻ། ཚཻ། ཛཻ། ཝཻ། ཞཻ། ཟཻ། འཻ། ཡཻ། རཻ། ལཻ། ཤཻ། ཥཻ། སཻ། ཧཻ། ཨཻ། ཀོ། ཁོ། གོ། ངོ། ཅོ། ཆོ། ཇོ། ཉོ། ཊོ། ཋོ། ཌོ། ཎོ། ཏོ། ཐོ། དོ། ནོ། པོ། ཕོ། བོ། མོ། ཙོ། ཚོ། ཛོ། ཝོ། ཞོ། ཟོ། འོ། ཡོ། རོ། ལོ། ཤོ། ཥོ། སོ། ཧོ། ཨོ། ཀཽ། ཁཽ། གཽ། ངཽ། ཅཽ། ཆཽ། ཇཽ། ཉཽ། ཊཽ། ཋཽ། ཌཽ། ཎཽ། ཏཽ། ཐཽ། དཽ། ནཽ། པཽ། ཕཽ། བཽ། མཽ། ཙཽ། ཚཽ། ཛཽ། ཝཽ། ཞཽ། ཟཽ། འཽ། ཡཽ། རཽ། ལཽ། ཤཽ། ཥཽ། སཽ། ཧཽ། ཨཽ། ཀྃ། ཁྃ། གྃ། ངྃ། ཅྃ། ཆྃ། ཇྃ། ཉྃ། ཊྃ། ཋྃ། ཌྃ། ཎྃ། ཏྃ། ཐྃ། དྃ། ནྃ། པྃ། ཕྃ། བྃ། མྃ། ཙྃ། ཚྃ། ཛྃ། ཝྃ། ཞྃ། ཟྃ། འྃ། ཡྃ། རྃ། ལྃ། ཤྃ། ཥྃ། སྃ། ཧྃ། ཨྃ། ཀཿ། ཁཿ། གཿ། ངཿ། ཅཿ། ཆཿ། ཇཿ། ཉཿ། ཊཿ། ཋཿ། ཌཿ། ཎཿ། ཏཿ། ཐཿ། དཿ། ནཿ། པཿ། ཕཿ། བཿ། མཿ། ཙཿ། ཚཿ། ཛཿ། ཝཿ། ཞཿ། ཟཿ། འཿ། ཡཿ། རཿ། ལཿ། ཤཿ། ཥཿ། སཿ། ཧཿ། ཨཿ། ཀྀ། ཁྀ། གྀ། ངྀ། ཅྀ། ཆྀ། ཇྀ། ཉྀ། ཊྀ། ཋྀ། ཌྀ། ཎྀ། ཏྀ། ཐྀ། དྀ། ནྀ། པྀ། ཕྀ། བྀ། མྀ། ཙྀ། ཚྀ། ཛྀ། ཝྀ། ཞྀ། ཟྀ། འྀ། ཡྀ། རྀ། ལྀ། ཤྀ། ཥྀ། སྀ། ཧྀ། ཨྀ། ཀཱྀ། ཁཱྀ། གཱྀ། ངཱྀ། ཅཱྀ། ཆཱྀ། ཇཱྀ། ཉཱྀ། ཊཱྀ། ཋཱྀ། ཌཱྀ། ཎཱྀ། ཏཱྀ། ཐཱྀ། དཱྀ། ནཱྀ། པཱྀ། ཕཱྀ། བཱྀ། མཱྀ། ཙཱྀ། ཚཱྀ། ཛཱྀ། ཝཱྀ། ཞཱྀ། ཟཱྀ། འཱྀ། ཡཱྀ། རཱྀ། ལཱྀ། ཤཱྀ། ཥཱྀ། སཱྀ། ཧཱྀ། ཨཱྀ། ཀྱྀ། ཁྱྀ། གྱྀ། ངྱྀ། ཅྱྀ། ཆྱྀ། ཇྱྀ། ཉྱྀ། ཊྱྀ། ཋྱྀ། ཌྱྀ། ཎྱྀ། ཏྱྀ། ཐྱྀ། དྱྀ། ནྱྀ། པྱྀ། ཕྱྀ། བྱྀ། མྱྀ། ཙྱྀ། ཚྱྀ། ཛྱྀ། ཝྱྀ། ཞྱྀ། ཟྱྀ། འྱྀ། ཡྱྀ། རྱྀ། ལྱྀ།

།ཀུ། ཤ། ། ཤུ་ཏི་ཤུ་ཏི་ཤུ་ཏི་

ཀུ ཀུ ཀུ

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།

ཡིན་ཏེ། ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་

ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཞིང་། །ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཁམས། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཡུལ། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱོགས། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཀློང་། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཐུགས། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཡེ་ཤེས། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཡོན་ཏན། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྲིན་ལས། ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བདག་ཆེན་པོ་ཡི་ཞིང་།

ཡིན་ཏེ། ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཀུན་ཏུ་ཡོད་པ་

ཀུན་བཟང་ཁྱབ་བྱེད་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཟླ་བ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཟླ་བ་ཆེ་ཤིན་ཏུ་ཆེ་བ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དེ་ལྟར་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ལ་ཆོས་ཀྱི་རྣམ་གྲངས་ཀྱི་ཚུལ་གྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡོངས་སུ་བསྟན་ཏོ། །ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུངས་པ་ལ་མངོན་པར་དགའ་ཞིང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུངས་པ་ལ་ཡིད་ཆེས་ཏེ། ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་དག་ཀྱང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སློབ་པར་བྱའོ། །ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤཱ་རི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །ཤཱ་རི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚེ་དང་ལྡན་པ་དེ་ཡི་ཕ་མ་ཡིན་ནོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚེ་དང་ལྡན་པ་དེ་ཡི་ཕ་མ་ཡིན་ནོ། །ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་ཡང་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུངས་པ་ལ་མངོན་པར་དགའ་ཞིང་། བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་གསུངས་པ་ལ་ཡིད་ཆེས་ཏེ། ཚེ་དང་ལྡན་པ་ཤཱ་རིའི་བུ་དེ་དག་ཀྱང་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སློབ་པར་བྱའོ། །

ཅེས་ཐུགས་ཀྱི་ཁྲིད་ཡིག་ཏུ་གསུངས་ཏེ། ཐུགས་ཀྱི་ཁྲིད་ཡིག་ཏུ་གསུངས་པའི་

།།ཨོཾ། ། ། ཤཱཀྱཐུབཔཱཡ་ནམཿ།། ཨཱརྱཨཝལོཀིཏེཤྭརོ་ནཱམ་མཧཱཡཱན་སཱུཏྲ།
ཨཱརྱཨཝལོཀིཏེཤྭརཡ་ནམཿ།། ཨེཝཾམཡཱཤྲུཏཾ། ཨེཀསྨིནསམཡེབྷགཝཱནཔོཏལཀཔརྦཏེམཧཏཱབྷིཀྵུསངྒྷེནཱརྱཨཝལོཀིཏེཤྭརེཎཙམཧཱབོདྷིསཏྭེཎཙ
སཱརྡྷཾབཧུབྷིཿསཏྭཻཿསཾཔརིཝྲྀཏོབྷཱུཏྭཱ། ཏཏྲཁལུབྷགཝཱནཨཱརྱཨཝལོཀིཏེཤྭརཾམཧཱབོདྷིསཏྭཾཨཱམནྟྲཡཏེསྨ། ཨཱརྱཨཝལོཀིཏེཤྭརོབྷགཝཱནམཱཧ།
ཡཱཝཏཱཀཱཡཱཏྲཱཡཱཝཏཱཀཱཡཱཔྲཏིཥྛ

ཚངས་པ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་དོ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཚུལ་གྱིས་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཉིད་ཀྱང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་ཉིད་དུ་ཟད་ཀྱི། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱང་ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱི

ཀུ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ་ཤ་ཀ

ཞེས་བཀའ་སྩལ་ཏོ། ། དེ་ནས་ཀུན་བཟང་ཡུམ་ཆེན་གྱིས་ཀྱང་། ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན

ཀུན་ཏུ་བྱེད་པ་ཉིད་དུ་ཡང་ཡོད་དོ། །ཅི་ཕྱིར་ཞེ་ན། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡུལ་ཅན་ཡིན་པ་ཉིད་ཀྱང་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཙཱ་ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཙཱ་ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཙཱ་

ཨཱཿཧཱུྃ། རཱཿཧཱུྃ། རཾཿཧཱུྃ། ཨཱཿཧཱུྃ། རཱཿཧཱུྃ། རཾཿཧཱུྃ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ན་བཞུགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཞབས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཡང

ཡབ་ཀྱི། རིགས་པའི། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི། ཡུལ་ཅན་ཡིན་ཏེ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་
ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་
ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པའི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཡུལ་ན་ཡང་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱིར་ཡོངས་སུ་སྤྱོད་པ

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཁྲིད་ཡིག།

ཡིན་པ་ཡིན་ཏེ། ཡིན་པ་ཡིན་ཏེ། ཡིན་པ་ཡིན་ཏེ།

ཡིན་ལས་ཀྱི་ཐེག་པ་ཡིན། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡིན། ཐེག་པ་མཆོག་ཡིན། ཐེག་པ་དམ་པ་ཡིན། ཐེག་པ་
ཡང་ཞེས་ཏེ། རིགས་ཀྱི་བུ་

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་སྨོན་ལམ་ཏེ། །ཐུབ་པའི་སྲས་ཀྱི་སྤྱོད་པ་ཐམས་ཅད་ལ། །ཇི་ལྟར་བསྟན་པ་བཞིན་དུ་ཤིན་ཏུ་ཡང་། །ཇི་སྲིད་ནམ་མཁའ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་སེམས་ཅན་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་ཉོན་མོངས་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་འགྲོ་བ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་ཞི་བ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་ཆོས་ཀྱི་ཁམས་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་ཐེག་པ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་ཡོངས་སུ་སྨིན་པ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་ཡོངས་སུ་མྱ་ངན་ལས་འདས་པ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཡོད་པ་དེ་སྲིད་དུ། །ཇི་སྲིད་ཐེག་པ་ཆེན་པོ

ཐོབ་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་ཁྱེད་ཀྱིས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །དེ་ལྟ་བས་ན་ཁྱེད་ཀྱིས་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ནི་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོངས་སུ་ཁྱབ་པ་ཡི་བར་དུ་ཡང

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་

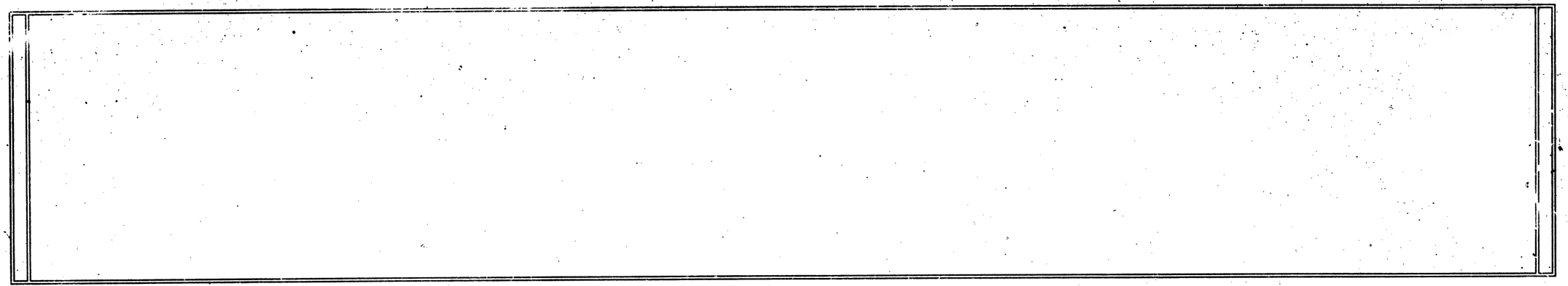

ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ཕྱག་ཏུ་ཕུལ་ཏེ་

ཡང་ཕྱིས་ཁོ་ཚོས་ཁོ་ཚོའི་ཁྱིམ་ཚང་ཁྱིམ་ཚང་ནས་ཁྱིམ་ཚང་ཁྱིམ་ཚང་ཁྱིམ་ཚང

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་ཅིང་། ཐོས་པ་ཆེན་པོ་ཐོབ་ཅིང་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ཡིན་ནོ། །ཐོས་པ་ཆེན་པོ་ཐོབ་ཅིང་ཐོས་པ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་ཡིན་ནོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་

ཐུགས་མཐའ་ཡས་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ལ་སྙོམས་པར་ཞུགས་ཏེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ན་ཏ་ཡཱ་ཨ་ཝི་ཀ་ལྤ

ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།། ཀཀ ། བཞིན་གཤེགས་པའི་བསྟན་པ་ལས་ཀྱང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་སྤྱོད་པ་ཡི། ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡི

ཨཱཿཧཱུྃ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། མཆོག་གྲུབ་ཐོབ་པ་ཡི་ནི་ཀུན་བསྡུས་པ། ཐུབ་པའི་དགོངས་པ་ཀུན་ཏུ་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། ཡིད་བཞིན་དཔག་བསམ་ཤིང་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ། སྐྱེ་བོ་ཀུན་ལ་ཕན་བྱེད་ཆེ་བ་ཡི། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཐུབ་པའི་དགོངས་པ་ཀུན་ཏུ་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། ཡིད་བཞིན་དཔག་བསམ་ཤིང་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ། སྐྱེ་བོ་ཀུན་ལ་ཕན་བྱེད་ཆེ་བ་ཡི། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཐུབ་པའི་དགོངས་པ་ཀུན་ཏུ་རྫོགས་བྱེད་ཅིང་། ཡིད་བཞིན་དཔག་བསམ་ཤིང་ལས་ཀྱང་ཁྱད་པར་དུ། སྐྱེ་བོ་ཀུན་ལ་ཕན་བྱེད་ཆེ་བ་ཡི། ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཡུལ་ཏེ། ཤར་ཕྱོགས་རྡོ་རྗེ་ཐེག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཡུལ་ན་ཡང་ངོ་། །ཡང

ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ། མཐའ་གཉིས་ཀྱི་ཁྱད་པར་གྱིས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ནོ། ཡང་ན་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ཡིན་ནོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ཡིན་ནོ། མིའི་ཁམས་སུ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ནི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ཡིན་ནོ། ཐབས་ཤེས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ལ་སོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ཡིན་ནོ། ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཞེས་པ་ནི

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་དམར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཕྲ་རབ་ཀྱི་གྲངས་ཙམ་གྱི་སྐུ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་རྩེ་ན་གནས་པ་ཡི་ཐུགས་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅན་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རྒྱ་མཚོ

ཐུབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དུ་སྐྱེ་བ་ཡིན་ནོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཞུགས་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་དུ་སྐྱེ་བ་ཡིན་ནོ། །ཤཱ་རིའི་བུ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལ་ཞུགས་པ

ক্ষুধাপীড়িতা লোকা হাহাকুর্বন্তি নিত্যশঃ। তেষাং দুঃখেন মহতা ন নিদ্রা লভ্যতে ক্বচিৎ॥ ক্ষুধার্তা ন বিজানন্তি কার্যাকার্যং ন চোত্তমম্। ন মধ্যমং ন নীচং বা ন পূজ্যং নাপি পূজকম্॥ ন মাতরং ন ভগিনীং ন সুতাং ন চ বান্ধবীম্। ন গুরুং ন চ মিত্রং বা ন স্বামিনং ন চ স্বকম্॥ ন ধর্মং ন চ কর্মাণি ন পুণ্যং ন চ পাপকম্। ন দানং ন চ যজ্ঞং বা ন তপো ন চ সংযমম্॥ ন ব্রতং ন চ নিয়মং ন শৌচং ন চ সৎক্রিয়াম্। ন বিদ্যাং ন চ বিজ্ঞানং ন শাস্ত্রং ন চ শাস্ত্রকম্॥ ন বেদং ন চ বেদাঙ্গং ন পুরাণং ন চাগমম্। ন ন্যায়ং ন চ মীমাংসাং ন ধর্মং ন চ ধার্মিকম্॥ ন ব্যাকরণং ন ছন্দো বা ন জ্যোতিষং ন চ তন্ত্রকম্। ন কাব্যং ন চ নাট্যং বা ন গীতং ন চ গায়কম্॥ ন বাদ্যং ন চ বাদ্যজ্ঞং ন নৃত্যং ন চ নর্তকম্। ন চিত্রং ন চ চিত্রজ্ঞং ন শিল্পং ন চ শিল্পিনম্॥ ন ভক্ষ্যং ন চ ভক্ষ্যজ্ঞং ন পেয়ং ন চ পেয়কম্। ন লেহ্যং ন চ লেহ্যজ্ঞং ন চোষ্যং ন চ চোষ্যকম্॥ ন বস্ত্রং ন চ বস্ত্রজ্ঞং ন ভূষণং ন চ ভূষকম্। ন গন্ধং ন চ গন্ধজ্ঞং ন পুষ্পং ন চ পুষ্পকম্॥ ন ধনং ন চ ধনজ্ঞং ন ধান্যং ন চ ধান্যকম্। ন ক্ষেত্রং ন চ ক্ষেত্রজ্ঞং ন বাসং ন চ বাসকম্॥ ন গৃহং ন চ গৃহজ্ঞং ন শয্যাং ন চ শয়নম্। ন যানং ন চ যানজ্ঞং ন বাহনং ন চ বাহকম্॥ ন

ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཆོག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །ཅེས་བྱ་བ་ནས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡན་ཆད་ཀྱིས་ནི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཉིད་དུ་བསྟན་ཏོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ཞ

ཐུབ་པའི་རྒྱལ་མཚན་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ། ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐེག་པ་ཆེན་པ

ཐུབ་པས་སྐྱེས་ཀྱི་ཚེ་ཡང་ཁོ་བོ་ཅག་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཉིད་ཀྱིས་ཤིན་ཏུ་ཡིད་ཆེས་པ་ཡིན་ནོ།། །།ཞེ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡོད་པ་ཡིན་ཏེ། ཐ་མ་ཡོད་པ་ཡིན་ན་ཡང

ཞེས་ མཚོ་ལེ་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་ལ་སྦྱར་ཏེ་ཀུ་ཤ་ཡིན་ནོ། ཀུ་ཤ་ཞེས་པ་ལས་ཀུ་ཤ་ཡིན་ནོ། ཤིང་གི་ཁྱད་པ

ঽ অমাত্যোঽপি তথেত্যুক্ত্বা তত্রাগত্য তথাকরোৎ। ততো মন্ত্রী তমাহূয় তথা কৃত্বা তথাব্রবীৎ।
তথেতি তেন তৎ সর্বং তথা কৃত্বা তথাব্রবীৎ। ততো মন্ত্রী তমাহূয় তথা কৃত্বা তথাব্রবীৎ।
তথেতি তেন তৎ সর্বং তথা কৃত্বা তথাব্রবীৎ। ততো মন্ত্রী তমাহূয় তথা কৃত্বা তথাব্রবীৎ।

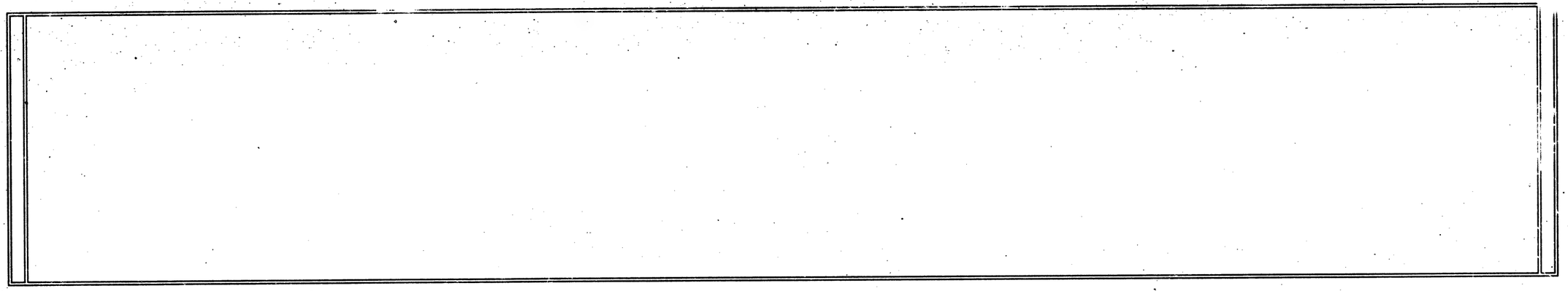

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་མདོ་

ཐུབ། ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐུབ། ཐབས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐུབ། སྨོན་ལམ་གྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐུབ། སྟོབས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐུབ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཐུབ། ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་

ཀཱ་ཏན་ཏྲ་ཀ་ལ་པ་ཀ་ཏ་ཀ་ཏ་ཀ་ཏ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ཆེན་པོ་ཡི། །ཕུན་ཚོགས་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡི། །ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཡེ་ཤེས་ཆེན་པོ་ཡི། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི། །ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡི། །རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི། །ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཐེག་པ

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཏུ་ལྱ་ཨ་ནཱ་ཀཱ་ཤ་ཨ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ་ཨ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ་ཨ་ཏི་ཀྲཱ་ནྟ

ཀཱ་ཏན་ཀྲི་ཏི་ཀཱ་ཏན་ཀྲི་ཏི་ཀཱ་ཏན་ཀྲི་ཏི་

ཡང་ཞེས་ཀྱང་ཞེས་ཀྱང་ཞེས་ཀྱ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ན་བཞུགས་པ་ཡི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པ་ཡི་ཕྱིར་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་སེམས་བསྐྱེད་ཅིང་། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཡི་ཡོན་ཏན་ཐམས་ཅད་ཀྱ

ཀུན་བཟང་སྨོན་ལམ།

ཀུན་བཟང་སྨོན་ལམ།

ཀུན་བཟང་སྨོན་ལམ།

ཡིན་ཏེ། ཐོག་མ་ཡང་མེད་ཅིང་། ཐ་མ་ཡང་མེད་ཅིང་། བར་མ་ཡང་མེད་པ་ཡིན་ནོ། །ཞེས་ཟེར

ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ཨོཾ་ཨ་ཀ་ར་ཝ་ཏི་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ན་ཡང་ཡོད་ཅིང་། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་

ཐེབས། རྡོལ་ཁྱོའི་མཛའ་ཚེའི་འཇའ་རྩེའོ། རྡོལ་ཁྱོའི་ཤལ་ཀུན་ཚེའི་འཇའ་རྩེའོ། རྡོལ་ཁྱོའི་ཀྲོལ་ཀུན་ཚེའི་འཇའ་རྩེའོ། རྡོལ་ཁྱོའི་འབའ་ཐེབ་ཚེའི་འཇའ་རྩེའོ། རྡོལ་ཁྱོའི་ཁྱུ་ཁ་ཅིག་མཚན་ཏེ། རྡོལ་ཁྱོའི་ཀྲོལ་པ། པུ་ཚེའི་འཇའ་རྩེའོ། རྡོལ་ཁྱོའི་ཁྱུ་ཀུན་ཚེའི་འཇའ་རྩེའོ།། ཅམྤི་རྡོལ་ཁྱོའི་ཁྱུ་ཤས་ནས་ཆོག་ཅིང་། རྡོལ་ཁྱོའི་མཁར་ཁྱུ་ཆོག་ཅིང་། རྡོལ་ཁྱོའི་མཁར་ཁྱུ་ཆོག་ཅིང་། རྡོལ་ཁྱོའི་མཁར་ཁྱུ་ཆོག་ཅིང་། རྡོལ་ཁྱོའི་ནེའུ་ཁྱེ་ཡིན་ཏེ་ཁྱོད། ནེའུ་ཁྱེ་ཡིན་ཏེ་ཁྱོད། ནེའུ་ཁྱེ་ཡིན་ཏེ་ཁྱོད། ནེའུ་ཁྱེ་ཡིན་ཏེ་ཁྱོད། རྡོལ་ཁྱོའི་ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ཐོབ་ཏེ། ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ཐོབ་ཏེ། ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ཐོབ་ཏེ། ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ཐོབ་ཏེ། ལོ་ལེའོ། རྡོལ་ཁྱོའི་ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ལེའོ་ཏེ། ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ཀྱུ་ཁ་ཅིག་ཏེ། ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ཆེ་ཆེ་ཁ་ཏོ་ཁྱོ་ཁྱོ་ལེ་ཁ་ཅིག་ཏེ། ཁྱུ་ཁ་ཅིག་ལེ་ཁ་ཅིག་ཏེ། ཅཅ།

ཀུན་བཟང་ཐུགས་ཀྱི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱི་

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་དུ་ཡང་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་རྡུལ་ཙམ་ཞིག་ཏ

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་ཀྱི་ཕྱོག

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་དུ་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་ཡང་དུ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་དུ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་དུ་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་ཡང་དུ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནས་ཀྱང་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་བར་དུ་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཡུལ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཁོར་ཡུག་ཏུ་ཞེས་བྱ་བའི་ཐ་ཚིག་གོ། །

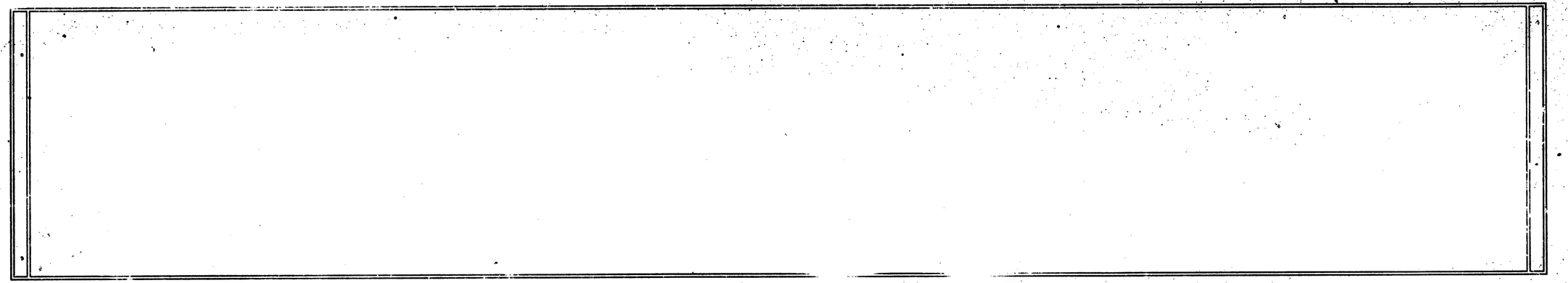

ཀུན་བཟང་དགོངས་པ་རྣམ་གྲོལ་ཆེན་པོའི་ཀུན་བཏུས་ཀྱི་ཚིག་གྲེལ།

།།ཞི་ཁྲོ་དཔའ་བོ་གཉིས་ཀྱི་ཡུལ་དུ་ཕྱིན་ཏེ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡང་བསྒོམ་པའོ།།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ལས། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཡི་ནི་ཐུགས་ཀྱི་ཀླུབས། །ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོ་ཡིས། །ཐམས་ཅད་ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཉིད་དུ་གྱུར

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡས་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཟླ་བ་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ལས་ཐུ

ཀེཏཀཱ། ཏིཏྠཱཡཏནཱནཱི། ། ཐཱཔེཏྭཱ་ཏཱིརཱདཱིཧཱིཏཱཡཱཧཱརཱཡཏི། ཏཱཡཱཔཱརཱཛཱཡཱཔཱིཐཱཡཱཏཱཡཱཏཱཡཱཏཱཡཱ། ཏཱ
ཀཱཡཱཀཱཡཱཀཱཡཱཏཱཡཱཏཱཡཱཏ

ཀུ་ཀུ་ཀུ་

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།།

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ཞིང་ཁམས་ཀྱི་ཐ་མ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཤར་དུ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་

ཐུབ་པའི་ཡོན་ཏན་ཡོངས་སུ་བསྔགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོའི་མདོ་ལས་ཀྱང་ཇི་སྐད་དུ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱིས་ཀུན་དགའ་བོ་ལ་བཀའ་སྩལ་པ་ཀུན་དགའ་བོ་ཁྱོད་ཀྱིས་ཇི་ལྟར་

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ལ་ཡ་ཝི་ཛྙཱ་ན་ཨཱ་ནཱ་ན་ཏ་ཀ

ཡིན་ཏེ་ཁྱེད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཡིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་ཅི་ཡིན་ཞེས་ཟེར་བ་ལ

ཀྱི་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ཡིན་ཏེ།

ཨཱཏཱཝཱཏཱཡཱཏཱཡཱཏཱཡ

།།ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།
ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ་ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཨ་ཁ་ཅ་ཊ་ཏ་པ་ཡ་ཤ་ཀ་ཧ་ཀྵ།།

ཀྱི་ཚིག་ཏུ་བྱས་པ་ཡིན་ནོ། ཞེས་ཟེར་ཏེ་ཁ་ཅིག་ཀྱང་ཡོད་ལ། ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡང་ཁ་ཅིག་ཏུ་ཡ

ཀུ་ཏ་ཀ་ཡུ་ཨ་ཐ་ཀ་ཏ་ཀ་ཡ། ཀ་ཡུ་ཨ་ཐ་ཀ་ཏ་ཀ་ཡ་ཨ་ཐ། ཐ་ཨ་ཐ་ཀ་ཏ་ཀ་ཡ་ཨ་ཐ་ཀ་ཡ། ཡ

ཀུན་སྤྱོད་ཀྱི་ཡུལ་ལས་འདས་པ་ཡིན་ཏེ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མིན་ཏོ། །ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མིན་ཏོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མིན་ཏོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མིན་ཏོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མིན་ཏོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་
ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མིན་ཏོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་ཡིན་ལ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཐམས་ཅད་ཀྱང་མིན་ཏོ། ཐམས་ཅད་ཀྱི་

ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་ཡི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་ཚོལ་བ་ལ་ཡང་ཡང་དུ་ཞུགས་ཏེ་ཡི་ཡི་གེ་ཡོངས་སུ་ཚོལ་བ་ལ་ཡང་ཡང་དུ་ཞུགས་ཏེ་

ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་བྱང་ཆུབ་ཏུ་ཡོངས་སུ་སྨིན་པར་བྱེད་ཅིང་།

ཀཱ་ཡ་ཝཱ་ཀ་ཙི་ཏ་ཨཱ་ཀཱ་ཤ་ཨཱ་ཏ་ཨཱ་ཏ་ཝཱ་ཧ་ཨཱ་ཧ་ཝཱ་ཧ་ཨཱ་ཧ་ཝཱ་ཧ་ཨཱ་ཧ

ཀུན་ཏུ་སྤྱོད་པ་ཡི་ཏིང་ངེ་འཛིན་ཐོབ་པ་ཡིན་ནོ། །ཡང་ན་ཡང་དག་པ་ཉིད་ཀྱ

ཅན་ཏེ། ཕུང་པོ་ལྔ་པོ་དེ་དག་ཀྱང་ཐོག་མ་མེད་པ་ནས་ཀྱེ་ཧེ་བྱ་བ་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་ཏེ། ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་ནོ། །

ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ། ཨོཾ་ཨཱཿཧཱུྃ།

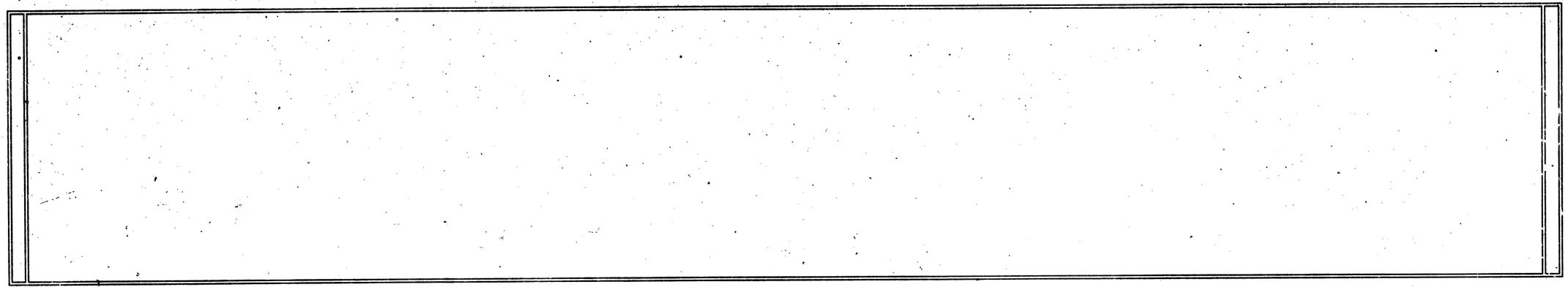

ཀུན་ཏུ་བཟང་པོ་ཡི་ནི་སྨོན་ལམ་ལས། །ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁྱབ་བདག་ཏུ་གྱུར་ཅིག །ཅེས་པ་ནི་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཁྱབ་བདག་ཏུ་གྱུར་ཅིག་

ཡིན་ཏེ། ཁྱོད་ཀྱི་ཐུགས་ཀྱི་ཆོས་ཀྱི་འཁོར་ལོ་ཡང་ཡང་བསྐོར་བ་

苯教《丹珠尔》大藏经

ISBN7—223—00984—5
B·32（藏17） 定价： 元